यूरोपीय वामपंथ के सौ वर्ष

श्री जे बगरहट्टा, श्री रामचन्द्र शर्मा
श्री हरिशंकर शर्मा एवम्
श्री याज्ञवल्क्य शर्मा की स्मृति में भेंट
द्वारा - हर प्रसाद बगरहट्टा
प्यारेमोहन बगरहट्टा
चन्द्रमोहन बगरहट्टा

लेस्ली डर्फलर

भारतीय सस्करण की भूमिका

भारतीय पाठको को यूरोपीय समाजवादियो के विचारो और अनुभवो को समझने म विशेष कठिनाई नही होगी। भारतीय उद्योगो विशेषत हस्तशिल्पो के विनाश के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आतरिक आवश्यकताओ को जिम्मेदार ठहराया गया है। यह सही हो या गलत तथापि भारत के आर्थिक इतिहास के बारे म व्यापक रूप से मान्य इस दृष्टिकोण के आधार पर पूजीवाद के प्रति किंचित विरोध और समाजवाद के प्रति तज्जनित सम्मान की भावना को समझने म मदद मिलती है। भारतीय पाठक श्रमसघो की राजनीतिक चेतना और प्रमुख वामपक्षीय दलो के साथ उनके गठजोड से भी भलीभाति परिचित है।

भारतीय राजनीति और यूरोप के राजनीतिक अनुभव म समान तत्व गुटबाजी है जिससे काग्रेस और समस्त विरोधी दल ग्रस्त है। काग्रेस स्वय समाजवादी पद्धति के समाज की हिमायती है, तब भारतीय समाजवादी दलो का उदय केवल इस कारण हुआ कि काग्रेस अधिक क्रातिकारी कार्यक्रम नही अपना सकी। इसी प्रकार भूतकाल मे यूरोप के समाजवादी आदोलन म 'सुधारवादियो' और 'क्रातिवादियो' के बीच सघर्ष रहा है। दलो के विलय और उनम फूट सैद्धातिक विवाद, राष्ट्रवादी भावनाए, आर्थिक नियोजन तथा विविध राजनीतिक व्यूह की रचनाओ के मामले मे यूरोप और भारत के अनुभवो म आशिक सादृश्य रहा है। ये समानताए वास्तव मे आश्चर्यजनक नही हैं, भारत के मूल समाजवादी दल की स्थापना उन चद युवा और उग्रवादी काग्रेसी नेताओ ने की थी, जो यूरोप के समाजवादी चिंतन के सपर्क म आए और जिनपर उसका प्रभाव पडा। नेहरू के वैज्ञानिक समाजवाद (जो अधिकाधिक उदार होता चला गया) तथा गाधी के अपेक्षाकृत अधिक मानवतावादी समाजवाद (जिसने अपने भीतर कठमुल्लापन के अभाव को स्वीकार किया है) दोनो के समतुल्य समाजवादी आदोलन यूरोप म रहे हैं।

जिस प्रकार यूरोप के समाजवादी आदोलनो की आपस म तुलना की जा सकती है और उनके विरोधो का पता लगाया जा सकता है उसी प्रकार यूरोपीय और

भारतीय समाजवादी आदोलना की भी तुलना की जा सकती है और उनके पारस्परिक विरोधा का अध्ययन किया जा सकता है। भारत म समाजवाद यूरोप की अपक्षा देर से अर्थात बीसवी शताब्दी के तीसरे दशक मे लोकप्रिय हुआ तथा उसन भारतीय चरित्र अधिकाधिक ग्रहण कर लिया। वह विकेंद्रीयकरण, अहिसा, रचनात्मक काय तथा भूदान नीति की गाधीवादी धारणाओ पर अधिक बल देने लगा। अब पाश्चात्य साहित्य उसके सिद्धाता का आधार नही रहा है। पाठक स्वय ही यह निणय करें कि भारतीय समाजवादी आदोलन मे यूरोप की तरह प्रादशिक विशिष्टताए किस सीमा तक प्रतिबिबित हुई है। इस प्रयास म यूरापीय समाजवाद का यह तुलनात्मक इतिहास उपयागी सिद्ध हो सकता है।

आमुख

इस पुस्तक म समाजवादी चिनन की अपक्षा समाजवादी आन्दोलना पर अधिक ध्यान दिया गया है। यह मच है कि इन दाना का एक दूसरे से अलग नही किया जा सकता लेकिन ममाजवादी चिंतन के बारे म अब तक काफी लिखा जा चुका है (मावमवाद और मावमवादी दना के सबध के बारे म जाज लिक्टहाइम के विवरण को बौद्धिक इतिहास का उत्कृष्ट नमूना माना गया है, यह ठीक ही है)। मैंन इस पुस्तक म समाजवादिया के कार्यों का विवरण इस विश्वास क आधार पर देन की कोशिश की है कि उनका महत्व कम से कम उतना तो है ही जितना उनकी घोषणाआ का। इस काय म मैंन समाजवाद के ग्राहक तथा प्रमुख समय वग अर्थात श्रमिक वर्गों का निगाह म रखा है। यहा विषय जिस प्रकार उभरकर आया है वह आधुनिक यूरोपीय इतिहास की सीमित जानकारीवाले लागो क लिए एक भूमिका के तौर पर काफी विशद और साथ साथ काफी सक्षिप्त सिद्ध हो सकता है। न तो इस पुस्तक का यह प्रयोजन रहा है कि यह जी० डी० एच० काल, कार्ल लेंडर जेम्स डाज अथवा जाज लिक्टहाइम की रचनाआ का स्थान लगी, न इसम वह सामर्थ्य ही है। जा लोग उन रचनाओ से भलीभांति परिचित ह वे यह बात आसानी से समझ जाएगे कि इस ग्रथ के प्रतिपादन म मैं अन्य लेखका पर कितनी अधिक मात्रा मे निभर रहा हू। समाजवाद के इतिहास को मेरी देन म यदि कोई मौलिकता है तो वह यहा दी गई जानकारी म नही वरन उसके सयोजन और सगठन म निहित है।

इस अध्ययन मे सबसे बडी कठिनाई आदोलना को वस्तुत समाजवादी सिद्ध करन की आवश्यकता क कारण उत्पन्न हुई (मैंने इन आदोलना को अपने विवेक के आधार पर ही क्षमतासम्पन्न राजनीतिक दलो के समरूप मान लिया है)। मैंन प्राय किसी दल के नाम, नाम रखन के कारणा श्रम को एक वस्तुरूप मे मान्यता देन स इकार और आर्थिक दृष्टि से असुविधाभोगी वर्गों के स्तर म बुनियादी परिवतन की निष्पत्ति को लक्ष्य मानने तथा उत्पादन सपत्ति (पूजी) पर साव जनिक नियत्रण स्थापित करने के बारे म दल के द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण को

शब्दश स्वीकार करने का सुगम माग अपनाया है।

मैंने प्रमुख समाजवादी आन्दोलनो के एक जैसे अनुभवो का सकलन करने की कोशिश की है जसे कि शुरू म लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओ के भीतर काम करने की उनकी तयारी, क्रातिकारी रीति नीति पर उनकी आशिक वापसी, प्रथम विश्वयुद्ध मे पहले राष्ट्रीय अस्तित्व के सरक्षण क प्रति उनकी बढती हुई प्रतिबद्धता तथा साम्यवाद और अधिनायकवाद (फासीवाद) के प्रतिद्वद्वी जन आदोलनो के प्रति उनके क्रमोत्तर एक जैसे दृष्टिकोण। मैंने कुछ ऐसे अनुभवो की भी जाच की है जो प्रत्यक आन्दोलन के अपने निजी अथात दूसरो से सवथा भिन्न रहे है जैसे जार शासित रूस क समाजवादियो की गतिविधिया। इन विभिन्नताओ के कारणो की तलाश म हम यह बात हो सकता है कि समाजवाद जिस विशिष्ट पर्यावरण (सामाजिक स्थिति परिस्थिति वातावरण मान्यताओ सगठन शासन व्यवस्था तथा व्यक्ति की भूमिका अथात उसकी शिक्षा आर्थिक स्थिति धार्मिक विश्वास आदि) म विकसित हुआ उसने उसके व्यवहार और शास्त्रीय (सैद्धातिक) चिंतन को किस सीमा तक प्रभावित किया। पर्यावरण और आदोलन के बीच जिन सबधो की खोज यहा की गई है उन्हे मैंने सयोग अथवा घटना माना है तथा उनके आधार पर कोई नियम या सूत्र बनाने की कोशिश नही की है। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक को सवहारा राजनीति तथा तुलनात्मक इतिहास सबधी निबध के रूप म स्वीकार किया जाएगा नियम निर्धारण के प्रयास के रूप म नही। मुझे इसम कोई सदेह नही है कि मेरे बहुत स निष्कर्षों के लिए और अधिक प्रमाणो की आवश्यकता होगी। मुझे यह आशा है कि मैंने अपने निष्कर्षों के समथन म जो उदाहरण चुने है वे समग्र स्थिति का प्रतिनिधित्व करते ह।

मैंने यह विवरण यूरोपीय देशो के समाजवादी दलो तक ही सीमित रखा है। इसके अनेक कारण है पुस्तक के कलेवर के विस्तार स उसका तनिक भी सबध नही है। यह बात ठीक है कि सयुक्त राज्य अमरीका म 'न्यू डील' तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड म औद्योगिक सामजस्य व्यवस्था' सरीखे विकास से समाजवाद के इतिहास पर प्रभाव पडा है तथापि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद तक समाजवाद अनिवायत एक यूरोपीय प्रश्न ही बना रहा। प्रथम श्रमिक इटरनेशनल (अत-राष्ट्रीय सम्मेलन) के साथ मुख्यत इग्लैड और फ्रास का ही सबध था। द्वितीय इटरनेशनल के बारे म भले ही यह दावा किया जाता हो कि उसम दक्षिणी अमरीकी दलो और जापान के समाजवादी दलो क प्रतिनिधिमडल भी शामिल हुए थ तथापि वह भी यूरोपीय दलो या समाजवादी दलो तक ही सीमित रहा। इस समय तक समाजवाद का जितना अश व्यवहार म आया था वह उन

श्री जे. बगरहट्टा, श्री रामचन्द्र शर्मा
श्री हरिशंकर शर्मा एवम्
श्री राधावल्लभ शर्मा की स्मृति में भेंट
द्वारा -

विरासत

* *

बीसवी शताब्दी के आरभ से बहुत पहले ही मार्क्सवाद ने समाजवादी चितन की सबसे अधिक गतिशील और पूण अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण कर लिया था। तथापि, आधुनिक समाजवाद के उदगमस्रोत अनेक है। अठारहवी शताब्दी के अत मे होने वाली फ्रास की राज्यक्राति को इसका एक प्रमुख स्रोत माना जा सकता है। 1830 और 1848 के विद्रोहो तथा जुलाई राजतत्र और द्वितीय साम्राज्य के प्रमुख षडयत्रकारी आगस्त ब्लाकी के साहित्य ने क्रातिवादी परपरा को प्रोत्साहन दिया। राबट ओवेन के सामुदायिक सगठन और कारखाना कानून सबधी आग्रहो तथा पियरे जोसेफ प्रूधा के पारस्परिकतावाद (म्युचएलिज्म) ने उन विकल्पो के निर्माण मे योग दिया जा समाजवाद की स्थापना के कायक्रम का कई चरणो मे विभाजन करते थे। लुई ब्लाक द्वारा पेश की गई राष्ट्रीय कारखानो की माग राज्य सहायता की आवश्यकता की ओर सकेत करती है। इस विचार का फर्डिनेंड लसैल न अधिक विस्तारपूवक प्रतिपादन किया। ब्लाक ने कहा कि श्रमिक वग अपनी मुक्ति का सघप स्वय कर तथा समाज का रूपातरण नीचे की ओर से शुरू किया जाए। उसके इस चितन ने उसे काल्पनिक समाजवाद के पूववर्ती प्रवतका से अलग कर दिया। माक्स ने फ्रासीसी राज्यक्राति और औद्योगिक क्राति के प्रभावा तथा पूववर्ती समाजवादियो के विचारा के बीच सामजस्य स्थापित किया। समाजवादिया ने आम तौर पर उसके सिद्धातो और रीतिया को अपना लिया जिसका 1870 और 1914 के बीच समाजवाद के व्यापक प्रसार पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडा।

मार्क्सवादी विरासत

काल माक्स न समाजवाद के लिए जो विरासत छोडी है उसमे ध्यानाकर्षित करने वाली बात उसकी अनकायता है। उनकी फ्रीडरिक एगिल्स की भी रचनाओ और उनकी राजनीति का शातिवादी तथा उग्रवादी दोनो प्रकार के समाजवादिया ने उपयोग किया है। क्रातिकारी समाजवादिया का मूलत रूढिवादी कहा जाता

था तथा बाद मे वे बोल्शेविक कहलाए और शातिवादियो को सशोधनवादी अथवा सुधारवादी कहा गया, और वे पश्चिमी यूरोप मे समाजवाद के विकास के प्रतिनिधि बन गए।

मार्क्सवाद का पूर्ववृत्त

मार्क्स का शुरू का राजनीतिक आचरण समाजवाद की परपरागत रीति-नीति के अनुरूप था। 19वी शताब्दी के पाचवे दशक के अत तथा छठे दशक के आरभ म गुप्त कम्यूनिस्ट लीग मे मार्क्स की भूमिका जितनी षडयत्रमूलक थी उतनी ही आदर्शमूलक भी एव इस काल की उनकी रचनाओ मे उसस पहले लिखी गई मानवतापरायण कृति 1844 की आर्थिक और दार्शनिक पाडुलिपिया (इकानामिक ऐंड फिलासाफिकल मनस्क्रिप्टस आफ 1844) के विपरीत मुख्यत उसकी उदीयमान उग्रवादी चितनधारा स्पष्ट रूप से प्रतिबिबित हुई है। उनमे, विशेषत 1848 के घोषणापत्र म, वे विचार भी प्रतिबिबित हुए है जिनका उदय फ्रासीसी और जमन उग्रवादी बुद्धिवादी क्षेत्रा मे पिछले दो दशको के दौरान हुआ था। लेखका ने एक ओर प्रगति की एतिहासिक सभावना के बारे मे हीगल के आशावादी चितन और ब्रह्माड पर मनुष्य के बढत हुए नियत्रण तथा दूसरी ओर उद्योगीकरण तथा शहरी विस्तार के साथ साथ बढ़ती चली जाने वाली गरीबी के बीच के अतराल और द्वैत को पहचाना। इसके परिणामस्वरूप पुरानी व्यवस्था के विरुद्ध एक 'सवेगात्मक और बुद्धिवादी विद्रोह' की शुरुआत हुई तथा उसक विकल्प क तौर पर ऐसी आदर्शवादी कल्पनाओ की रूपरेखाए प्रस्तुत की जान लगी जो अस्पष्ट रूप म समाजवादी थी। सुधारको के लिए दो अपरिभाषित वाक्याश ब्रह्मवाक्य बन गए 'श्रम का सगठन' अर्थात मानवीय और पदार्थगत समाधनो का नियोजित उपयोग और 'सघ' (एसोसिएशन) अर्थात उत्पादन क साधनो पर सहकारी नियत्रण।[1]

इस प्रकार उन्नीसवी शती के पाचवें दशक के मध्य म समाजवाद ने बुद्धिवादियो कलाकारो तथा लेखको की दृष्टि म एक पूर्ण समाज की कल्पना का रूप ले लिया और समाजवाद के शत्रुओ तथा मित्रो, दोनो ने उसकी वास्तविक क्षमता का बढा चढ़ाकर बखान किया। मूल मुद्दा यह है कि इन लोगो न अब धनिक वग को जनता का असली उत्पीडक कहकर उसकी निंदा शुरू कर दी, तथा इग्लैंड को छोडकर प्राय समूचे पाश्चात्य जगत म इस वर्ग को घृणा की दृष्टि स देखा जान लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि पूर्ववर्ती 'कल्पनाजीवी' सुधारको न सुधार के लिए जिन उदार रीतियो का समर्थन किया था उनका स्थान वर्गसघर्ष न ले लिया। इस कठोर नीति की प्रतिक्रिया के तौर पर राजनीतिक

सत्ता के क्षेत्रो म गहरी चिंता का उदय हुआ। सभी उग्रवादी गुटो ने लोकतत्र का समथन किया तथा उदारवादियो के साथ जुडने की कोशिश की किंतु अल्फाजे ला मार्तीन, जिउसेप्पी मात्जानी (मेजिनी) तथा केमिली कैवूर सरीखे अधिकाश उदारवादियो ने समाजवादियो के साथ सहकार से इकार कर दिया।

1844 के साइलीसियाई बुनकर विद्रोह पीटरलू नरमेध तथा चार्टिस्ट दगो ने गहरे वग द्वेष के अस्तित्व को उभारकर सामने ला दिया। एगिल्स ने भविष्य-वाणी की कि इग्लैड और फ्रास मे उसी वप क्राति हो जाएगी। फ्रासीसी और जमन सरकारो ने कम्यूनिस्ट आक्रमणा के खतरे के बारे म चिता प्रकट की। यद्यपि भूख से अभिशप्त' पाचवें दशक म कम्यूनिज्म का खतरा काफी असली प्रतीत होता था तथापि कालातर म यह सिद्ध हो गया कि इस खतर का बखान बढा चढाकर किया जा रहा है।

कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो

माक्स ने उग्रवादी चिंतन के विविध सूत्रा को एक युक्तिसगत दशन मे सजो दिया। 1848 के मैनीफेस्टो (घोपणापत्र) मे श्रमिक वग को उस जमाने का एकमात्र क्रातिकारी वग बताया गया तथा बुर्जुआ (धनलिप्सु) वग के विरुद्ध इस क्रातिकारी वग के सगठित और सघन सघष की विविध अवस्थाओ का वणन किया गया। उसमे यह भी कहा गया कि शासक वर्गो की विविध श्रेणियो से च्युत लोग श्रमिक वग मे दाखिल हो जाएगे तथा पूजीवाद के अतगत मुनाफे की मात्रा अधिकतम करन के लिए और भी व्यापक केद्रीकरण होगा जिसका विरोध अतर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जाएगा। इस घोपणापत्र मे श्रमिका को आश्वासन दिया गया कि अतत विजय उनकी ही होगी। माक्स ने कम्यूनिस्ट अथवा समाज-वादी हितो तथा सवहारा वग के हितो के बीच तद्रूपता की कल्पना को बार-बार दोहराया। (सैद्धातिक दृष्टि से माक्स न समाजवाद को सक्रातिकालीन व्यवस्था माना तथा कम्यूनिज्म (साम्यवाद) की व्याख्या विस्तार से नही की, तथापि वे कम्यूनिस्ट लीग नामक जिस सगठन से उस समय जुड़े थे उसके नाम म कम्यू-निस्ट शब्द का ही प्रयाग किया गया था।) उस समय कम्यूनिस्टो का न कोई दल था, न सप्रदाय तथापि वे अपने आपको सवहारा वग का आत्मचेता हरावल दस्ता (वनगाड) मानत थे। दूसरे समूह श्रमिक वग के समथन का दावा करते थे और वे राष्ट्रीयता की चिंता किए बिना ससार के सपूण सवहारा वग के समान हितो के साथ एकाकार होने और विशिष्ट मुद्दा की पूजीवाद के विरुद्ध वहत्तर और सतत सघप के सदभ म देखन की चेष्टा करत थ।

मार्क्स ने यह कभी नही माना कि राज्य बुर्जुआ वर्ग के नियन्त्रण मे रहते हुए उसके हितो के अतिरिक्त किसी अन्य वर्ग के हितो का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है। कम्यूनिस्टो ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि राज्य प्रचलित लोकतन्त्रात्मक रीति नीति के द्वारा सच्चे लोकतन्त्रात्मक उपकरण का रूप नही ले सकता अत कम्यूनिज्म की स्थापना तभी हो सकती है जबकि 'वर्तमान सामाजिक दशाओ को बलपूर्वक उलट दिया जाए।' इसके बावजूद मैनीफेस्टो मे जिस रीति-नीति का उल्लेख किया गया था वह अपेक्षाकृत अधिक नरम थी। सघर्ष के प्रथम चरण का उद्देश्य 'लोकतन्त्र के युद्ध' मे विजय प्राप्त करना था। उसमे लोकतन्त्रात्मक शक्तियो के साथ सहयोग पर बल दिया गया। इस सहकार के अवसर और उसकी रीति-नीति का निर्धारण स्थान और काल पर छोड दिया गया था। उदाहरण के लिए यदि जर्मन बुर्जुआ वर्ग सामतवाद और राजतन्त्र का विरोध करता तो जर्मनी के कम्यूनिस्ट वहा के मध्यवर्ग के साथ समझौता नही कर सकते थे। श्रमिको से यह अपेक्षा की गई थी कि वे राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के बाद बुर्जुआ वर्ग के हाथो से क्रमिक रीति से समूची पूजी छीनकर उत्पादन के साधनो को राज्य के हाथो मे केन्द्रित करने के लिए उसका उपयोग करेंगे। राज्य की परिभाषा नए ढग से की गई अर्थात 'शासक वर्ग के रूप मे सगठित सर्वहारा ही राज्य है।'

1848 की क्रातिया

क्राति के इस दौर अथवा यो कहे कि इसकी निष्पत्ति ने सर्वहारा वर्ग के लिए बुर्जुआ लोकतन्त्र की उपयोगिता के बारे मे मार्क्स की सचेतना को और भी पुष्ट कर दिया। लोकतान्त्रिक तथा उदारवादी राज्य श्रमिको को आर्थिक सघ निर्माण करने का वैधानिक आधार प्रदान करता है तथा राजनीतिक दल के भीतर प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का अवसर भी देता है। श्रमिक सघ (ट्रेड यूनियन) तथा राजनीतिक दल श्रमिक वर्ग के हितो की रक्षा तथा उनका समर्थन करते हैं। उनके अस्तित्व मात्र मे वर्ग चेतना के विकास के असख्य अवसर मिलेंगे। मार्क्स को जर्मनी मे बडे पैमाने पर विप्लव के लक्षण दिखाई नही पडे तथा वे पेरिस मे अपने साथी जर्मन निवासितो द्वारा तैयार किए जा रहे 'जर्मन लीजन' के विरुद्ध थे। मार्क्स डिमाक्रेटिक पार्टी के निमत्रण और उसमे भर्ती होने के लिए कोलोन गए। (यह पार्टी समाजवादी न थी किन्तु इसके भीतर फर्डिनेंड लसैल के नेतृत्व मे एक समाजवादी पक्ष भी था)। वहा मार्क्स ने शीघ्र ही यह अनुमान लगा लिया कि सक्रिय क्राति का काल समाप्त हो चुका है तथा उन्होने पडयन्त्रकारी रीतियो मे विद्रोह जारी रखने का विरोध किया। (तथापि मार्क्स स्वय एगिल्स का साथ लेकर बैडेन और पैलेटिनेट विद्रोह का दृश्य देखने गए तथा वहा उन्हे

यह अधिकार दिया गया कि वे पेरिस मे जमन क्रातिकारी दल का प्रतिनिधित्व करें)। माक्स के इन निणयो से 13 वष पश्चात (प्रथम) इटरनेशनल (अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन) की परिषद के सम्मुख दिए गए उनके भाषण से तथा परिसकम्यून के बारे म उनके अतिम उदगारो से सामाजिक लोकतत्रवादियो ने वैधानिक प्रक्रियाओ द्वारा शातिपूण परिवतन की एक तस्वीर तैयार कर ली।

इस बीच मार्क्स ने अथशास्त्र का अध्ययन किया। उन्होंने फ्रास मे राज्यक्राति और नेपोलियन तृतीय के राज्यारोहण के इतिहास तैयार किए। राजनीतिक कायवाही की विरासत की दष्टि से इन विश्लेषणा से 'जून के दिनो' के उस सघष के वर्गीय चरित्र का सकेत मिलता है जिसमे उन श्रमिका को झोक दिया गया था जो उसके लिए कतई तैयार न थे। उनमे कृषका की प्रति क्रातिकारी प्रवृत्तिया का भी प्रदशन हुआ है। माक्स यह कहना चाहते थे कि जो आम चुनाव किसी समय 'धोखाधडी' का साधन थे अब मुक्ति का अस्त्र' बन गए है। (एगिल्स ने 1895 मे 'क्लास स्ट्रगल्स इन फ्रास' की भूमिका मे यह कल्पना स्पष्ट कर दी है) इन वर्षों मे समाचारपत्रो म प्रकाशित उनके लखा म सफल सत्ता-अपहरण के माग को कठिनाइया का उल्लेख मिलता है। (इस विधि का प्रतिपादन माक्स के प्रारभिक तथा अधिक उग्र ब्लाकवादी काल मे हुआ था)। इन लेखो मे यह भी कहा गया है कि जमनी की तरह अन्य देशा मे भी विकेंद्रीकरण को सर्वोपरि आवश्यकता तथा श्रम पर्याप्त मात्रा मे केंद्रीभूत नही हो पाया है।[9]

प्रथम 'इटरनेशनल'

लदन निवासकाल के दौरान माक्स की यह आस्था और भी पुष्ट हो गई कि विश्वव्यापी समाजवादी व्यूह रचनाए व्यथ है। माक्स के बाद एडुअट बनस्टीन को भी ऐसा ही लगा। माक्स ने महसूस किया कि जो योजना यूरोप महाद्वीप के लिए ठीक हो वह इग्लैंड के लिए बेहूदा सिद्ध हो सकती है। नवस्थापित इटरनेशनल (अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जिसमे अधिकाश कायकर्ता ब्रिटेन और फ्रास से शामिल हुए थे) के समक्ष भाषण करते हुए माक्स ने सगठित श्रम के लक्ष्यो के बारे मे चिंता प्रकट की। यह एक एसा हित था जिस पर माक्स को अपनी गरीबी का तथा इस विचार की स्वीकृति का प्रभाव पडा था कि विधानमडला के प्रति सहयोग करने से अधिक लाभ होगा भले ही वे बुर्जुआ वग के नियत्रण म हो। इस भाषण को आगे जाकर सामाजिक लोकतत्र का घोषणापत्र (चाटर) कहा गया। पाचवें दशक के काल्पनिक आदशवाद का स्थान सातवें दशक के यथाथवाद ने ले लिया तथा यद्यपि इस दृष्टिकोण को परिस कम्यून (1871 मे परिस नगर के उग्रवादी विद्राह) के प्रारभ म ही क्षणिक तौर पर तिलाजलि दे दी गई थी,

तथापि इसने मावस के चिंतन पर परिपक्वता की मुहर लगा दी।[3]

श्रम आदोलन के शास्त्र निर्माता के रूप मे मावस की स्थिति तथा ब्रिटिश श्रमसघो के नताओ को प्रभावित करने की उनकी इच्छा ने लोकतात्रिक समाज वाद के प्रति एक गहरी आस्था जगाने की दिशा मे बडा काम किया। उनके भाषण मे श्रमिको के सत्रास को स्वर मिला और उसने उनके तथा उच्चतर वर्गों के बीच की खाई की चौडाई को उजागर कर दिया। उन्होंने उसमे तात्कालिक लाभ की दृष्टि मे उस कानून का स्वागत किया जिसके द्वारा श्रमिक से एक दिन म अधिक स अधिक दस घटे काम लेने की मयादा तय की गई थी। उस कानून के स्वागत का एक कारण यह भी था कि वह कानून श्रमिक वग के दवाव के फलस्वरूप एक सिद्धान्त की विजय का प्रतीक था। मावस ने सहकारी आदोलन को मान्यता देने से इकार कर दिया। उन्हे यह आशका हुई कि सहकारी आदो लन कभी भी राष्ट्रीय आयाम ग्रहण नही कर सकता। उन्होने आर्थिक कायवाही के बजाय राजनीतिक कायवाही पर निरन्तर जोर दिया। उन्होने कहा कि राजनीतिक सत्ता पर विजय प्राप्त करना श्रमिक वर्गों का महान कतव्य है। उनकी यह आस्था तीन वष बाद प्रकाशित उनके ग्रथ 'कैपिटल' मे फिर से दोहराई गई। उसमे माक्स न श्रमिक वग के विकास की उन सब बाधाओ के निवारण पर बल दिया जो उमरे शासको द्वारा खडी की गई है और जिन्हे कानून द्वारा दूर किया जा सकता है।' यही वह मूल चिंतन है जिसके कारण कैपिटल मे इग्लैंड के कारखाना स सबधित कानूनो के निर्माण पर बल दिया गया है। यह बात अलग है कि इस प्रकार के कानूनो की उपयोगिता के बारे म बहुत आशावादी रीति स निष्कष निकाल लिए गए लेकिन उसका प्रयोजन एक आदश पेश करना था

> प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रो से शिक्षा ग्रहण कर सकता है और उसे ऐसा करना चाहिए। और जब कोई समाज अपनी गति के नैसर्गिक नियमो की खोज के लिए सही माग पर चल निकलता है तब वह अपने विकास के अगले चरणो की बाधाओ पर म न तो कूदकर ही पार जा सकता है न उन्हे कानूनो द्वारा ही दूर कर सकता है। लेकिन वह विकास की प्रसववेदना की अवधि और तीव्रता म कमी कर सकता है।[4]

अपने उद्घाटन भाषण म उन्होने परिस्थितियो के अनुरूप दावपेंच अपनाने की सिफारिश की। इग्लैंड के श्रमिक सघ नताओ को प्रसन्न करने के लिए मावस ने श्रमिको के तात्कालिक उद्देश्यो का महत्व स्वीकार किया। तथा फ्रासीसी समाजवादियो का समथन करने के लिए उन्होने राष्ट्रीयकरण का आह्वान करने

प्राप्त करने के लिए अपने प्रयासो मे तेजी लाए। इन फ्रासीसी प्रूधावादियो, ब्रिटिश श्रम सघवादियो तथा लदन मे रह रहे अनेक राजनीतिक निर्वासितो, जिनमे पोलैंड और जर्मनी के निर्वासित, (स्वय मार्क्स) भी थे, तथा लुई ब्लाँकी, मेजिनी और लसल के अनुयायियो ने मिलकर 'इटरनेशनल' की नीव डाली। इन तत्वो के बहुरूपी चरित्र के कारण ही 'इटरनेशनल' भी बहुरूपी बन गया। नियम बनाने मे मदद देने उदघाटन भाषण तैयार करने तथा अधिक रूढ़िवादी ब्रिटिश समूह और महाद्वीप के अधिक उग्रवादी समूहो के बीच सतुलन स्थापित करने की चेष्टा के लिए मार्क्स शुरू मे बहुत हिचकिचाहट और सकोच के साथ तैयार हुए। वे कोई सिद्धात लादना नही चाहते थे। उन्होने प्रूधो की आलोचना भी नही की तथा महज इस बात पर बल दिया कि श्रमिको को अपनी स्वतत्रता के लिए कार्य करना चाहिए और राजनीतिक सगठन के द्वारा राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लाभो की अवहेलना नही करनी चाहिए। 'इटरनेशनल' का सगठनात्मक ढाचा राष्ट्रीय दलो के लिए एक नमूना बन गया। सगठन की सर्वोच्च सत्ता विविध शाखाओ के प्रतिनिधियो से बनी कांग्रेस (महासमिति) को मिल गई। कांग्रेस की बैठक प्रतिवर्ष होती थी और वह एक कार्यकारिणी परिषद का निर्वाचन करती थी जो उसके प्रति उत्तरदायी होती थी। इटरनेशनल से सबद्ध श्रम सघो को इटरनेशनल की शाखाए मान लिया गया था। तथापि, अलग अलग देशो के समाजवादी आदोलनो के बीच सपर्क प्राय नगण्य था।

इटरनेशनल' के आकार के बारे मे अतिशयोक्ति नही की जानी चाहिए। जून 1870 मे 'प्रोग्रेस जनरल' ने यह दावा किया था कि इटरनेशनल की कुल सदस्य सख्या आठ लाख से अधिक तथा फ्रासीसी शाखा की सदस्य सख्या लगभग साढे चार लाख है। उसने व्यक्तिगत सदस्यो (सभवत फ्रास मे दो हजार तथा इग्लैंड मे तीन सौ से भी कम) और सामूहिक तौर पर इटरनेशनल मे शामिल होने वाले श्रम सघो और दलो मे भेद नही किया। फिर भी, इग्लैंड मे (आठ लाख से अधिक श्रम सघ सदस्यो मे से) प्रारभिक सामूहिक सदस्य सख्या तीस हजार से अधिक थी, तथा इससे कुछ कम फ्रास मे।[6] सदस्यता हर देश मे अलग अलग ढग की थी। इग्लैंड बेल्जियम और फ्रास मे श्रम सघ मुख्य आधार थे। जर्मनी मे एक राजनीतिक दल था जिसमे अधिकाश लसेलवादी प्रतिपक्षी थे जिन्होने 1868 69 मे उस दल का सगठन किया। इग्लैंड मे इटरनेशनल का प्रभाव कम रहा। यहा यह श्रम सघो का अधिक प्रभावित नही कर सका लेकिन यूरोप महाद्वीप पर उसकी ओर से हड़तालो मे कई उपयोगी हस्तक्षेप हुए जैसे कि 1868 मे पेरिस धातु श्रमिको की हड़ताल मे। द्वितीय साम्राज्य ने फ्रासीसी श्रम सघो को उत्पीड़न पहुचाया, किन्तु उनके नेताओ को न गिरफ्तार किया गया न कम्यून

समय तक देशनिकाला ही दिया गया।

मार्क्स को इंटरनेशनल से बहुत बडी आशाए थी। 1868 मे उन्होंने एंगिल्स को लिखा था और, अगली क्राति मे यह शक्तिशाली इजन हमारे (तुम्हारे और मेरे) हाथो म आ जाएगा।'[7] किंतु इटरनेशनल के आतरिक सघष (जिसके लिखित प्रमाण मौजूद है) और उसपर नियत्रण स्थापित करने के लिए होने वाले द्वद्व के परिणामस्वरूप उसकी शक्ति बिखर गई। सघषकारी गुटो मे सातवे दशक म प्रूधा के अनुयायी भी थे। केवल मार्क्सवादियो ने प्रत्यक्ष कायवाही की माग की, दूसरे लोग विविध सघात्मक आर्थिक स्वरूपो के पक्ष मे थे। एक ओर अराजकतावादियो और दूसरी ओर मार्क्स तथा ब्रिटिश श्रम सघवादियो के बीच सातवें दशक के अतिम वर्षो तक सघष नही छिडा। इसका श्रेय मार्क्स की समझौताप्रियता को है। इसका परिणाम यह हुआ कि इटरनेशनल कोई भी राजनीतिक (जसे स्वतत्र पोलैंड की पुनस्थापना के लिए आह्वान) अथवा प्रति पारस्परिकतावादी समाधान (जैसे आम हडताल का आह्वान) पेश नही कर सका। तथापि, 1868 की ब्रूसेल्स काग्रेस के समय तक इटरनेशनल के अतगत ऐसे बहुमत का निर्माण हो गया जो भूमि खदानो और रेलमार्गो के समूहीकरण की मागें पेश कर सका।

अराजकतावाद

अगले वष बेसल काग्रेस म बाकुनिन ने भी भाग लिया तथा अपनी प्रथम महत्वपूण विजय प्राप्त की। महान रूसी क्रातिकारी और अराजकतावादी बाकुनिन 1864 मे इटली मे रह रहे थे तथा मेजिनीवादियो को गुप्त सगठन की उपयोगिता समझाने की विफल कोशिश कर रहे थे। अब वे सिद्धात रूप मे इटरनेशनल द्वारा उत्तराधिकार की पूणतया समाप्ति की हिमायत मे एक प्रस्ताव पास कराने मे सफल हो गए। बाकुनिन सामुदायिक स्वायत्तता के पक्ष मे थे तथा जमनपूजक थे। इतने पर भी सिद्धात और क्राति के साधन दोनो मामलो मे मार्क्स और बाकुनिन के बीच मतभेद बना हुआ था। बाकुनिन राजनीतिक कायवाही, समाज-सुधार और राज्य की सरचना के घोर विरोधी थे तथा क्राति के लिए श्रमिको की अपेक्षा कृषको पर निभर रहना अधिक पसद करते थे।

बाकुनिन को मार्क्सवादी चिंतन मे एक नए मध्यमवग के बीज दिखाई दिए। वेतनभोगी कमचारियो की नौकरशाही ही इस मध्यमवग का केंद्रबिंदु थी। जहा तक बाकुनिन की इस आशका का प्रश्न है कि उग्रवादी बुद्धिजीवी मार्क्स श्रमिको का शोपण करने वाले बुर्जुआ (धनलिप्सु) वग के

नौकरशाही की स्थापना कर रहे ह, उसका आज तक समाधान नही हो सका है तथा आज भी वह विवाद और सघर्ष का विषय बना हुआ है। यह कहा जा सकता है कि उन दोनो के बीच मुख्यत प्रयोजना का अतर है, तथा मार्क्स पूजीवाद के विरुद्ध सघर्ष म वैज्ञानिक समाजवाद के घोडे पर सवार है। मजदूरो और किसानो के समर्थन मे बाकुनिन शोषण के उन रूपो के भी विरुद्ध थे जिनकी सभावना सर्वहारा की विजय के पश्चात भी शेष रह जाती है। दोनो का सघर्ष बुनियादी था बाकुनिन राज्य के विनाश पर तुले हुए थे जबकि कहा अधिक जैकबवादी मार्क्स राज्य पर अधिकार जमाने की ताक मे थे।[8]

मार्क्स को बाकुनिन मे विशेषत उनके 'अतर्राष्ट्रीय भाईचारे' (इटरनेशनल ब्रदरहुड) म राजनीतिक षडयत्र तथा गुप्त सगठन की पुरानी पद्धतियो के पुनर्जागरण का दर्शन हो रहा था।[9] यह स्थिति प्रथम इटरनेशनल द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण के विपरीत थी। भावी समाजवादी आदोलनो पर इन दोनो विचारको की शिक्षाओ ने प्रभाव डाला। क्रातिकारी सिंडीकैलिज्म और बोल्शेविज्म म मार्क्सवाद के तत्व प्रकट हुए लेकिन वे विशेषत लोकतात्रिक समाजवाद की ओर झुके हुए थे। बाकुनिन के विचार मूलत अराजकतावाद क्रातिकारी सिंडीकलिज्म तथा बोल्शेविज्म मे प्रकट हुए।

1870 तक ये आतरिक मतभेद गौण रहे। उसके पश्चात उन्होंने राष्ट्रीय सदर्भों म मूर्त रूप ग्रहण कर लिया जिसके फलस्वरूप इटरनेशनल तबाह हो गई। राष्ट्रीय दलो न विशेषत यूरोप के लेटिन देशो के दलो म महापरिषद की सत्ता तथा एकाधिकारवादी रवय का विरोध किया। 1871 म मार्क्स ने पूर्वकालीन लचीलेपन तथा यथार्थवाद का परित्याग कर दिया। कम्यून के अनुभव के कारण मार्क्स ने लदन म निजी तौर पर एक परिषद बुलाई जिसका प्रयोजन श्रमिक वर्ग की कार्यवाही क रूप म अपना स्वतत्र दल बनाना था। उसम भाग लेने वाले 23 प्रतिनिधियो न परिसीमनकारी और सकेद्रणकारी प्रस्ताव स्वीकार किए। बाकुनिनवादी खेमे म उसकी इतनी गहरी प्रतिक्रिया हुई कि इटरनेशनल म फूट पड गई तथा इतालवी, स्पेनी, बेल्जियन फ्रासीसी और स्विस शाखाओ म उनके अनुयायी मूल सगठन से टूट गए। 1873 म हेग म मार्क्स बाकुनिन को इटरनेशनल से निकलवाने म सफल हो गए।

इसके पश्चात मार्क्स न इटरनेशनल की परिषद का कार्यालय न्यूयार्क ले जाने का निर्णय लिया। जाहिर है कि उनके मन म यह अपेक्षा थी इटरनेशनल अमरीका म इसे नयी शक्ति प्राप्त कर लेगी। वे यह महसूस कर रहे थे कि यूरोप म

वह बुरी तरह टूटती जा रही थी। उनके समयन या आधार कम होता जा रहा था और वे यह नही चाहते थे कि इटरनेशनल उनके प्रतिद्वद्वियो के हाथो मे पड़े। अधिकाश दक्षिणी राज्य बाकुनिनवादी थे, इग्लैड के कार्यकर्ता श्रम सघवादी थे, लदन के फ्रासीसी आप्रवासी ब्लाकवादी थ, तथा कुछ जमन सोशल डिमाक्रेट (सामाजिक लोकतत्रवादी) ही मार्क्स के प्रति वफादार रह गए थे। मगर वे जमनी की राष्ट्रीय समस्याओ म इतने उलझे हुए थे कि उनसे अधिक सहायता की अपक्षा नही की जा सकती थी। 1870 के बाद राजनीतिक स्थिति बदल गई थी। सयुक्त इटली और जमनी की रचना तथा व्यापक घरेलू और बदेशिक शाति अतर्राष्ट्रीय समाजवादी सगठन की दृष्टि मे लाभकारी न थी। मार्क्स की परिषद तथा इटरनेशनल का 1876 म फिलाडेल्फिया मे विघटन कर दिया गया।

वस्तुत श्रमिक वग की एकता पर प्रथम इटरनेशनल की विविध राष्ट्रीय शाखाओ के हितो के दावे ने अतर्राष्ट्रीय दावे की अपक्षा प्राथमिकता प्राप्त कर ली थी। जिन औद्योगिक श्रमिको के हितो की रक्षा के लिए उसका गठन हुआ था उन तक भी वह नही पहुच पाई। फिर भी अपन अल्प जीवन के दौरान उसन श्रमिक वग की एकता के सिद्धात की स्थापना कर दी तथा राष्ट्रीय स्तर पर सवग्राही समाजवादी दलो के विकास की सभावनाए उत्पन्न कर दी। सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि उसने राजनीतिक कायवाही की विरासत अपने पीछे छोडी। इग्लड मे उसन निर्वाचन सबधी सुधारो के लिए चलाए जान वाले अभियान म मदद दी। उसन श्रम सघो के सघर्षों की ओर समूचे ससार का ध्यान दिलाया, इग्लैड के कारखानो के लिए यूरोप मे श्रमिको की भर्ती की प्रक्रिया को धीमा कर दिया तथा 1871 म प्रतिदिन काम के 9 घटे की माग मनवाने मे न्यूकैसल के इजीनियरो की सहायता की। प्रथम इटरनेशनल का मुख्य महत्व उसकी उपलब्धियो म नही वरन उसकी कल्पनाओ म निहित है। वह काफी मात्रा मे मिथक से भी कुछ अधिक बन गई थी।

पेरिस कम्यून

क्या मार्क्स ने कम्यून के अनुभव के कारण ययाथवादी दृष्टिकोण के स्थान पर अधिक आदशवादी स्थिति अपना ली थी? यह बात बहुत महत्वपूण है कि मार्क्स इस मामले मे चक्कर काटते रहे। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले उन्होंने फ्रासीसी श्रमिको से क्राति का माग छोडने के लिए कहा। सेडान म फ्रास की हार के बाद 3 सितबर 1870 को महापरिषद के समक्ष अपने द्वितीय भाषण म मार्क्स ने अस्थाई सरकार के समथन तथा श्रमिक वग के कम्यून की स्थापना के

लिए क्रांति करने की कल्पना का परित्याग करने को कहा। उन्होंने कम्यून की कल्पना का 'वज्र मूर्खता' बताया। उन्होंने कहा

> फ्रांस के श्रमिकों को नागरिक के नाते अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए। उन्हें खामोशी तथा संकल्पपूर्वक गणतंत्र के अंतर्गत प्राप्त स्वतंत्रता का अधिकतम उपयोग करके अपने वर्ग के संगठन को पूर्णतया सुदृढ़ बनाना चाहिए। इससे उन्हें फ्रांस के पुनर्निर्माण तथा हमारे सम्मिलित प्रयोजन अर्थात सर्वहारा की मुक्ति के लिए नई शक्ति मिलेगी।

मार्क्स के इन शब्दों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। अंतत: मार्क्स और एंगेल्स ने कम्यूनवादियों का बचाव किया तथा उनके अनुभव से निष्कर्ष निकाले।

सैद्धांतिक दृष्टि से कम्यून ने विजयी क्रांति के पश्चात समाज के आधार के तौर पर राज्य के पुराने स्वरूप को बनाए रखने की आवश्यकता के बारे में कुछ शंकाएं प्रकट कीं। कम्यून के प्रत्यक्ष लोकतंत्र से मार्क्स प्रभावित हुए और उन्होंने महसूस किया कि राष्ट्रीय संसदों के बजाय मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी स्थानीय परिषदें ही वह राजनीतिक संगठन है जिसके अंतर्गत श्रमिकों की आर्थिक मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।' जब तक समस्त वर्गों का लोप नहीं होता तब तक राज्य वर्गीय संगठन बना रहेगा, लेकिन अब वह सर्वहारा वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करेगा। तथापि बुर्जुआ राज्य के विपरीत वह जान-बूझकर 'अपनी समाप्ति का मार्ग तैयार करेगा।' मार्क्स ने यह स्थिति 1875 में 'क्रिटीक आफ दि जर्मन सोशल डिमाक्रेटिक पार्टीज गोथा प्रोग्राम (जर्मन सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी के गोथा कार्यक्रम की टीका) नामक पुस्तिका में ग्रहण की। उनका मूल अभिप्राय सहकारी संस्थाओं के बारे में लसाल के आग्रह का खंडन करना था। इसके बावजूद उन्होंने एक प्रसिद्ध वाक्यांश में कहा कि पूंजीवादी समाज का साम्यवादी समाज में क्रांतिकारी रूपांतरण करने के लिए एक ऐसे राजनीतिक रूपांतरण की आवश्यकता होगी 'जिसमें राज्य का स्वरूप सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी अधिनायकवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।' यहां अधिनायकवाद को मोटे तौर पर लोकप्रिय शासन का समानार्थक माना गया है। लेनिन और बोल्शेविक रूस ने राज्य पर अधिकार जमाने और उसके बाद उस पर कठोर दलीय नियंत्रण बनाए रखने के प्रयास में इसी तर्क का सहारा लिया।

किंतु जिस बार इन शब्दों के आधार पर शासन डिमाक्रेटस तथा कम्यूनिस्टों—दोनों को यह दावा करने का अवसर मिल गया कि वे मार्क्स का अनुगमन

कर रहे है। मार्क्स ने यह प्रदर्शित कर दिया कि श्रमिक वग 'पहले से तैयार राज्य प्रशासन पर आसानी से अधिकार जमाने और उसका अपने हितो के लिए उपयोग करने मे' असमथ होता है। परिणामत वे सुधारवादियो को यह तक देने की अनुमति दे सकते थे कि वे व्यावहारिक दृष्टि से 'लोकतन्त्र के सघष' मे विजय प्राप्त करके तथा सवहारा वग को शासक वग के स्तर तक उठाकर उस सामथ्य के विकास के लिए पर्याप्त समय जुटा रहे है। श्रमिक वग के विद्रोह के रूप मे कम्यून का बचाव देकर तथा समाजवादी इतिहास मे उसे महत्वपूण स्थान प्रदान करके उन्होने क्रातिकारियो को विद्रोह की वैधता सिद्ध करने का अवसर प्रदान कर दिया।

माक्स ने कम्यून के बारे मे कहा कि 'जून विद्रोह के पश्चात से वह हमारे दल का सबसे अधिक शानदार काय' है। इससे पहले उन्होने षडयन्त्र की ब्लाक वादी धारणाओ को अस्वीकार कर दिया था, तथा जेकबवादी अधिनायकवाद का महत्व भी कम कर दिया था। कम्यून के बारे मे उनके दृष्टिकोण से इन दोनो परपराओ का पुनरोदय हो गया। जाज लिक्टहाइम ने लिखा है कि '1864 मे अपने यथायवादी दृष्टिकोण का विसजन करके तथा कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो के काल्पनिक आदशवाद की ओर लौटकर' माक्स ने ब्रिटिश श्रमसघो को इटर-नेशनल के सग जुडे रहने से हतोत्साह कर दिया, अराजकतावाद और समाजवाद के बीच की दूरी बढा दी, तथा इस प्रकार उस (इटरनेशनल) के विनाश मे योग दिया। यह सहज था कि बुर्जुआ (पूजीपति) तत्वो द्वारा कम्यूनवादिया के दमन पर समाजवादी तत्व कम्यून के प्रति आत्मीयता प्रदर्शित करत। कम्यून को समाजवादी गाथा का अग बनाकर माक्स ने समाजवादी लाकतन्त्र (सोशल डिमाक्रेसी) पर एक ऐसा राजनीतिक मिथक' लाद दिया जो उसके व्यावहारिक स्वरूप के विपरीत था। इस प्रकार उन्होने उसे एक 'खडित व्यक्तित्व' प्रदान कर दिया जिसने 1871 के पश्चात समस्त समाजवादी दलो को सत्रस्त रखा।[10]

दस वष उपरात माक्स ने पेरिस कम्यून के बारे म कहा कि वह असाधारण परिस्थितियो मे एक नगर का विद्रोह मात्र था, कम्यून की बहुसख्या न समाज-वादी थी, न वह समाजवादी हो ही सकती थी।' ऐतिहासिक दृष्टि से इस कथन को ही पेरिस कम्यून के बारे मे माक्स का अतिम निष्कष माना जाना चाहिए। इसी पत्र मे उन्होने कहा 'समाजवादी आदोलन तब तक सत्ता प्राप्त नही कर सकता जब तक कि परिस्थितिया इतनी विकसित न हो कि यह आदोलन स्थाई कायवाही की दृष्टि से उपयुक्त प्रतीत होन वाला एक अनिवाय कदम तत्काल उठा सके।'[11] 1880 म जूलेस गड नामक एक फ्रासीसी विचारक द्वारा स्थापित

समाजवादी संगठन के कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करते समय मार्क्स ने इस नए दल का स्वागत किया हालांकि इसकी अनेक मांगें सुधारवादी ढंग की थी, तथा इसे 'फ्रांस में प्रथम वास्तविक श्रम आंदोलन' की संज्ञा दी। उन्होंने यह बात जोर देकर कही कि कम्यून से फ्रांस का पिछड़ापन उजागर हो गया है तथा यह सिद्ध हो गया है कि बार बार की जाने वाली क्रांतियां महज 'राजनीतिक अपरिपक्वता'[12] का चिह्न है।

पीछे मुड़कर देखने से ज्ञात होता है कि मार्क्स की क्रांतिकारी अवधियां अल्पकालिक थी। 1872 में बाकुनिनवादियों का इंटरनेशनल से खदेड़ने के बाद भी उन्होंने इस बात की ओर इंगित किया था कि यदि समाजी संस्थाएं काफी लोकतांत्रिक हो तो समाजवाद की स्थापना शांतिपूर्वक की जा सकती है। उस वर्ष की हेग कांग्रेस के तुरंत बाद उन्होंने यह तर्क दिया कि विभिन्न देशों को क्रांति की विभिन्न रीतियों की आवश्यकता होती है। ब्रिटेन, अमरीका तथा संभवत हालैंड में पर्याप्त राजनीतिक सत्ता के संग्रह में सफलता प्राप्त करने मात्र में क्रांति संपन्न हो सकती है। यहां क्रांति शब्द का प्रयोग समाजवाद की स्थापना के लिए अर्थात साध्य के रूप में किया गया है, साधन के रूप में नहीं। जर्मनी तथा अन्य अनेक देशों में ऐसी सुविधाएं नहीं है तथा वहां अधिकांशत शक्ति को ही 'क्रांति के साधन' के रूप में मान्य किया गया। 1891 में एंगिल्स की 'क्रिटीक आफ दि जर्मन सोशलिस्ट पार्टीज एफुर्त प्रोग्राम' (जर्मन समाजवादी दल के एफर्त कार्यक्रम की टीका) नामक पुस्तक ने उन लोगों का और भी बल पहुंचाया जिन्हें मार्क्स की इस धारणा में आस्था थी कि कुछ देशों में क्रांति की आवश्यकता नहीं होगी। एंगिल्स ने मार्क्स की पुस्तिका 'क्लास स्ट्रगल्स इन फ्रांस' (फ्रांस में वर्ग संघर्ष) के 1895 संस्करण की भूमिका में विद्रोह का महत्व कम कर दिया तथा व्यापक मताधिकार और संसदात्मक संस्थाओं की उपयोगिता पर बल दिया। ये स्थापनाएं तथा मार्क्स द्वारा अराजकतावादियों के इस सिद्धांत की आलोचना आगे जाकर शताब्दी के अंत में संशोधनवादियों और क्रांतिकारियों के बीच विवाद का कारण बनी कि राज्य पर नियंत्रण स्थापित करने के बजाय उसका विनाश कर दिया जाए।

टिप्पणी

इस प्रकार मार्क्स की विरासत मिश्रित है। उन्होंने समाजवाद की प्राप्ति के लिए क्रांतिकारी और शांतिवादी दोनों साधनों के प्रयोग के लिए तार्किक आधार प्रस्तुत किए। इंटरनेशनल की कार्यकारिणी के सदस्य की हैसियत में उनकी व्यक्तिगत गतिविधि की अपनी उर्वर रचनाओं के बारे में यह टिप्पणी अधिक सही है,

अखाड़े का नियन्त्रण मुख्यत उन लोगों के हाथों में रहा जो समाजवाद का तीव्र तत्वीकरण करना चाहते थे। क्रांतिकारी हरावल दस्ते का जेकोबिनवादी नमूना उन अवसरों के लिए सुरक्षित रखा जाता था जिनपर लच्छेदार भाषण की आवश्यकता होती थी। जहा राजनीतिक क्षेत्र उपलब्ध थे वहा राजनीतिक खेल पूरी तरह खेला जाता था। चुनाव अभियान उत्तरोत्तर आकर्षक कार्यक्रम बनता चला गया, तथा गैर समाजवादी समूहों के साथ निर्वाचन संबंधी और ससदीय गठबंधन आम बात हो गया। जिन लोगों ने शुरू में ही संसदीय गतिविधि को अनेक संभावित रीतियों में से एक मानकर चलने की प्रतारणा की थी तथा यह चेतावनी दी थी कि इस रास्ते में अवसरवादिता के गढ्ढे हैं जिनमें गिरकर क्रांतिकारी लोग पतित हो सकते हैं वे अपने आपको पूरी तरह सही मानते थे। इसके बावजूद राजनीतिक कार्यवाही के बारे में मार्क्स के आग्रह को संभवत समाजवाद के लिए उनके द्वारा छोड़ी गई प्रमुख विरासत माना जा सकता है। मार्क्स ने सर्वहारा वर्ग का एक राजनीतिक दल के नेतृत्व में सगठित होने का संदेश देकर समाजवादी आदोलन को षडयन्त्र की भूमिका से ऊपर उठाकर अधिक कार्यक्षम सगठन का रूप प्रदान कर दिया।

श्रम और समाजवाद

आम जनता के दलों के लिए आम जनता के निर्वाचन क्षेत्रों की आवश्यकता होती है तथा समाजवादियों की उन लोगों से समर्थन की अपेक्षा वाजिब थी जिनके लिए इन नए दलों का कार्य करना था। किंतु गत शताब्दी में वामपक्ष के इतिहास से यह ज्ञात होता है कि (संभावित दलीय सदस्यों अथवा मतदाताओं के रूप में) श्रम के सहयोग पर आख मूदकर विश्वास नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार जहा तक समाजवाद के राजनीतिक विकास की पूर्वशर्तों का निर्धारण सभव हो वहा तक उनकी स्थापना तथा इस प्रक्रिया के दौरान समाजवादी तथा श्रम आदोलनों के पारस्परिक संबंधों का सर्वेक्षण विश्लेषण भी उपयोगी हो सकता है। 19वीं शताब्दी के अंतिम तीन दशकों में समाजवाद एक महत्वपूर्ण राजनीतिक शक्ति बन गया था अत तत्कालीन आर्थिक दशाओं का सर्वेक्षण इस नए युग का समुचित समारभ प्रतीत होता है।

संवर्द्धन और मंदी

उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें और नवें दशकों की व्यापक 'मंदी' के बावजूद उस शताब्दी के अंतिम कुछ दशकों में यूरोप और अधिकांश उत्तरी अमरीका में अत्यधिक मात्रा में उद्योगीकरण तथा शहरीकरण हुआ। यूरोप में यह प्रवृत्ति शताब्दी के अंत में ही नजर आने लगी थी। वहा इस उद्योगीकरण

अनेक क्षेत्र ऐसे भी थे जिनमे महज वद्धि दर मे ह्रास हुआ था। तथापि, समालो चकों ने मूल्यो औद्योगिक और कृपि उत्पाद व्यापार तथा रोजगार, जिसका हमारे प्रयोजन की दष्टि से महत्व है सरीखे सूचकों मे ह्रास का अस्तित्व स्वीकार किया था। यद्यपि यह मदी 1930 के आर्थिक सक्ट जैसी भीपण नही थी तथापि उसम उत्पादन के आकडा को तजी से कम कर दिया और व्यापारिक आत्म-विश्वास को डिगा दिया। 1873 से पहले के डेढ दशक म ब्रिटिश औद्योगिक वृद्धि की वार्पिक दर (कपास और भवन निर्माण उद्योगो को छोडकर अय उद्योगा म) औसतन तीन प्रतिशत थी। 1873 मे वह दर घटकर आधे से कुछ अधिक ही रह गई।[15]

मदी की कोइ सवसम्मत व्याख्या उपलब्ध नही है तथा वह भिन्न भिन्न देशा म भिन्न कारणो से उत्पन्न हुई थी। इग्लैड मे मूल्यो के ह्रास के कारणा मे ये कारण भी बताए गए मुद्रा की अपर्याप्त आपूर्ति, निवेशा मे कमी, तथा उनका अनुत्पादक होना एसी प्रौद्योगिक प्रगति जिसके द्वारा लागतो म कमी सभव हो गई विश्व व्यापार की वृद्धि म कमी तथा व्यापारियो की आर मे अपर्याप्त अनुक्रियाए। मदी के उभाड के कारणो म स्थान के अनुसार भी विविधता आ गई थी। सब देशा म मदी का एक समान कारण यह था कि किसी न किसी रूप मे यूरोप के बाहर से होड म वद्धि हो गई थी हालाकि जमनी मे मदी मे सबसे अधिक योगदान आठवें दशक के प्रारभिक वर्षों की व्यापार-स्फीति ने किया था, तथा धातु उद्योगो का विकास जारी रहा। समुद्रपारीय देशा के उद्योगीकरण के कारण इग्लड के निर्यात बाजार सिकुड गए। परिवहन म सुधार के फलस्वरूप अमरीका आस्ट्रेलिया तथा रूस के विराट कृपि क्षेत्र खुल गए जिनसे यूराप म सस्त अनाज, माम, तथा ऊन का आयात होने लगा। रूस म मजदूरी की सस्ती दरा तथा अमरीका मे कृपि यन्त्रो के अधिकाधिक उपयोग के कारण यह आयात इतनी नीची दरा पर होने लगा कि उससे यूरोप के किसानो का दीवाला निकलना स्वाभाविक था। कृपि सक्ट ने समूचे यूरोप की अथव्यवस्था को प्रभावित किया। इसका कारण यह था कि किसानो की क्रयशक्ति म कमी हो जाने के कारण घरलू बाजार म तयार माल की माग और खपत कम हो गई।

इस सक्ट को कुछ अभूतपूव मुसीबता ने और भी उग्र बना दिया अत्यधिक वर्षा शीत और सूखा तथा पशुओ और पौधा की महामारिया। फ्रास का घरलू बाजार सिकुडने का एक कारण यह भी था कि वहा जनसख्या कम करने की एक दीघ परपरा चली आ रही थी तथा वहा विलासिता की सामग्री के उत्पादन पर अधिक जोर दिया जाता रहा था जबकि इस प्रकार की सामग्री की माग मदी म

उसके पहले की अपेक्षा तथा 1896 के पहले उसके बाद की अपेक्षा बेरोजगारी बढ गई थी ? यदि नही तो मदी होन की सभावना मुश्किल से ही पदा होती। इस प्रश्न का उत्तर खोजने म एक कठिनाई यह है कि अय सकेतो की भाति इस सकेत के पीछे भी आकडा के साक्ष्य का अभाव रहा है। सरकारा ने बेरोजगारी के आकडा का सग्रह नही किया। उस समय तक राष्ट्रीय बीमा योजना अस्तित्व म नही आई थी। जो भी आकडे उपलब्ध ह वे श्रम सघो की ओर से प्राप्त हुए है तथा श्रम सघ इग्लैंड मे ही सबसे अधिक सख्या मे थे और सबसे अधिक भली प्रकार सगठित थे। अत वही विस्तत अभिलेखा और विवरणो से सयुक्त श्रम इतिहास उपलब्ध है। 1874 1895 (मदी) के दौरान बेरोजगारी 1851-73 और 1896 1914 की अवधि की अपेक्षा लगभग 2 प्रतिशत अधिक थी, तथा उसका औसत 7 2 प्रतिशत था।[19] यह बात बहुत महत्वपूण है कि निर्यात मे अत्यधिक वद्धि के बाद 1870 स 1873 के बीच बेरोजगारी की दर बहुत नीची थी, तथा अगल पाच वष तक वह नीची ही बनी रही। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि मदी गुरू हाने से पहले के तीन चार वर्षों मे बेरोजगारी के आकडा म असाधारण रूप से वद्धि हो गइ थी तथा आमतौर पर यह एहसास पैदा नही हो पाया था कि यह स्थिति आगे भी बनी रह सकती है।

वास्तविक मजदूरी का स्तर भी श्रमिको की जीवन दशाओ मे गिरावट का महत्वपूण सकेत था। देखने म ऐसा लगता था कि मदी के दौरान उसमे गिरावट नही आई है। मजदूरी की राशि मुद्रा म स्थिर बनी रही (श्रमिक मजदूरी म कटौती का प्रतिराध करत थे अत उसक माग म यह एक प्रारभिक बाधा थी), किंतु उसकी निरतर स्थिरता के कारण स्पष्ट नही थ। परिणामत, मूल्या मे गिरावट के कारण मे वास्तविक मजदूरी म वद्धि होना अनिवाय हा गया। प्रो० हेनरी पलिग ने यह निष्कष निकाला है कि वास्तविक मजदूरी म कमी के बजाय वद्धि होती गई तथा बेरोजगारी की ऊची दर अल्पकालिक रही तथा वह भारी उद्योगा तक ही सीमित रही। इस सबका परिणाम यह हुआ कि विशेषत इग्लड म श्रमिका को व्यापक मदी मे कोई आघात नही लगा।[20]

मजदूरी के स्तरा मे वद्धि की जाच स कुछ प्रश्न पैदा हात हैं। 1850-1860 क दौरान वास्तविक मजदूरी (बेराजगारी पर ध्यान न देत हुए) का मूल्य यदि 100 मान लिया जाए ता 1865-1889 म यह मूल्य बढकर 117 हा गया तथा 1874 म 133 पर पहुच गया। प्रथम विश्वयुद्ध के पहले हाने वाली यह तीव्रतम वृद्धि है।[21] अगले 12 वर्षों म उपयुक्त कारणा मे वास्तविक मजदूरी म और भी अधिक वद्धि हुई। इस वद्धि की दिशा और गति दोना महत्वपूण रहीं। 1850 स

जनरल यूनाियन के समर्थन द्वारा यह बात जाहिर कर दी कि वे राजनीतिक समाधान अपनाने के लिए तैयार हैं।[6] यहां राजनीतिक समाधान का अभिप्राय अनिवार्यतः संसदीय समाधान नहीं है। संयुक्तराज्य अमरीका में बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक की सदी के दौरान औद्योगिक संगठनों की महासभा (कांग्रेस आफ इंडस्ट्रियल आर्गेनाइजेशन्स सी० आई० ओ०) का विकास हुआ। उसका झुकाव राजनीति की ओर अधिक था।

इस प्रसंग में आर्थिक और राजनीतिक कार्यवाही के बीच भेद करना भी आवश्यक है क्योंकि राजनीतिक कार्यवाही ने ही समाजवाद को जन आंदोलन का रूप प्रदान किया है। प्रो० सलिग पलमन ने कहा है कि श्रम संघ स्वभावतः यथार्थवादी होते हैं। वे निरंतर नए लाभ प्राप्त करने तथा प्राप्त लाभों के संरक्षण में व्यस्त रहते हैं। वे जल्दबाजी में राजनीतिक दांवपेंच में फंसने के खतरों की ओर से सचेत रहते हैं।[27] सुचारु रूप से संचालित अर्थव्यवस्था के भीतर पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था को स्वीकार करने वाले श्रम संघ का प्रमुख कार्य श्रमिकों के उचित अंश के लिए संघर्ष करना है। यदि उसे अपने हितों की रक्षा के लिए स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करने का अवसर दिया जाए तो उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह आर्थिक साधनों का प्रयोग करेगा। परंतु यदि मजदूरी अथवा जीवन स्तर में वास्तविक कमी हो जाए अथवा उसकी संभावना पैदा हो जाए अथवा अमैत्रीपूर्ण सरकारों द्वारा उन्हें काम करने की पूर्ण स्वतंत्रता से वंचित कर दिया जाए तो समाजी परिवर्तनों की खोज शुरू हो जाती है तथा राजनीतिक समाधानों पर विचार किया जाने लगता है।

समाजवादी चिंतन कोई नया नहीं है परंतु संकट के समय असंतुष्ट तत्व नए सिद्धांतों की खोज के बजाय प्रायः पहले से तैयार आदर्शों को ही क्रियान्वित करने की चेष्टा किया करते हैं। फ्रांस की राज्यक्रांति रूसो की रचनाओं का परिणाम नहीं थी तथापि क्रांति फूट पड़ने पर फ्रांस के क्रांतिकारी उनकी ओर मुड़े। इसी प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें और नवें दशक में समाजवाद अधिक प्रासंगिक प्रतीत हुआ उसमें भी विशेषतः मार्क्स का चिंतन। दीर्घकालीन बेरोजगारी के वातावरण में समाजवाद श्रमिक वर्ग की सुधारों संबंधी व्यावहारिक मांगों के साथ आसानी से अनुकूलन कर सकता था। श्रमिक वर्ग की गतिशील भूमिका पर आधारित सामाजिक सिद्धांत भी एक प्रकार का प्रतिनिधि मार्क्सवाद है। मार्क्सवादी विरासत का एक अंश तात्कालिक सुधारों की प्राप्ति तथा अंततः उसके लिए राज्य के यंत्र का उपयोग है। इससे समूचा समाजवादी आंदोलन सुधारवाद की दिशा में मुड़ जाता है तथा क्रांतिकारियों अराजकतावादियों और

पारस्परिक्तावादियों की स्पर्द्धा समाप्त हो जाती है। प्रथम विश्वयुद्ध से पहले के दशकों में संगठित समाजवाद ने जिन मुद्दों पर संघर्ष किया तथा जिन क्षेत्रों में उसने विजय प्राप्त की वे तत्कालीन उदारवादी और लोकतंत्रात्मक परंपराओं और प्रथाओं की शक्ति पर निर्भर थे। यही कारण था कि समाजवाद पश्चिमी यूरोप में सबसे अधिक असफल रहा तथा ज्यों ज्यों पूर्व की ओर चलते जाते हैं उसकी सफलता उतनी ही कम होती जाती है।[28]

समाजवाद और सामाजिक संदर्भ

असमान सामाजिक संरचनाओं तथा परंपराओं ने विविध समाजवादी अनुक्रियाओं को जन्म दिया। उदाहरण के लिए जर्मनी में एक दृढ़ वर्ग संरचना तथा सनिक परंपरा और ब्रिटेन में अपेक्षाकृत अधिक प्रबुद्ध कुलीन वर्ग, राजनीति में उदारवादी परंपरा और राजनीतिक तथा सामाजिक प्रश्नों पर बुनियादी तौर पर अनुभवपरक दृष्टिकोण के अस्तित्व को ही जर्मन आंदोलन के यथार्थवाद और लचीलेपन एवं ब्रिटिश आंदोलन के अधिक शास्त्रीय और अमूर्त स्वरूप के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है। ब्रिटिश और जर्मन आंदोलनों के विकास में ठीक वैसा ही स्पष्ट भेद रहा जैसा कि ब्रिटिश और जर्मन श्रमिकों में है। सभी देशों में बुद्धिवादियों को प्रमुख स्थानों का अनुपात से अधिक भाग मिला क्योंकि समाज को संपादकों, वकीलों तथा संसदीय नेताओं के रूप में उनकी आवश्यकता होती है। इसी तरह जर्मन श्रमिक वर्ग अपने अनुभवों तथा दृष्टिकोण के कारण ब्रिटिश श्रमिक वर्ग के मुकाबले में उनपर अधिक निर्भर रहा। उन्होंने सिद्धांत का ही प्रतिपादन नहीं किया वरन दलीय नेतृत्व भी प्रदान किया। इन भेदों और भूमिकाओं को जितनी गहराई से समझ लिया जाता है यह बात उतनी ही अधिक आसानी से समझ में आ जाती है कि विभिन्न समाजवादी आंदोलनों द्वारा अपनाए गए विभिन्न मार्गों के भेदों की नहीं वरन उनकी समानताओं की व्याख्या आवश्यक है।

इन भेदों की व्याख्या में श्रमिक प्रतिरोध का निर्धारण करने वाली सामाजिक शक्तियों की परस्परक्रिया बहुत स्पष्ट दिखाई नहीं देती। उदाहरण के लिए ब्रिटिश और जर्मन कोयला खनिकों के संगठनात्मक विकास से क्रमशः उन सामाजिक आंदोलनों पर प्रकाश पड़ा जिनका उन्होंने समर्थन किया।[9] 1850 से पहले जर्मन खनिक या तो सीधे राज्य के लिए काम करते थे (मार्क्स बेगिन की तरह) अथवा राज्य की ओर से अनुमति प्राप्त मालिक के लिए। दोनों स्थितियों में उनका नियमन राज्य द्वारा किया जाता था। इसके विपरीत ब्रिटिश खदानों का स्वामित्व और प्रबंध निजी उद्यमियों के हाथों में था तथा वहां राज्य प्राय: मालिकों के

व्यापक प्रयास के लिए इस निष्ठा का विकास आवश्यक था। उनका प्रतिरोध आंदोलन उच्चतर सामाजिक स्तर वाले लोगों के बजाय सैद्धांतिक निष्ठाओं वाले सगठनों पर निर्भर हो गया। इस प्रकार जमन श्रमिक राजनीतिक और सैद्धांतिक आधारों पर सगठित आंदोलनों की ओर गए न कि प्रत्यक्षत प्रासगिक रोटी और मक्खन (भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति) की समस्या के प्रति समर्पित आंदोलनों की ओर। यह विश्लेषण जिस सीमा तक सही होगा उस सीमा तक हम यह बात आसानी से समझ पाएंगे कि सुस्थापित श्रमसघों से पहले समाजवादी और कैथोलिक दल (इसका झुकाव ईसाई समाजवाद की ओर था) का उदय क्यों हुआ।

श्रमिकों म उन सगठनों का समथन करने की प्रवत्ति थी जो श्रम की दशाओं म सुधारों की चेष्टा के बजाय परिवतनशील समाज की दष्टि से चिंतन करते थे। ब्रिटेन म समाजवादियों ने महसूस किया कि श्रमसघों के सदस्य राजनीतिक समाधानों के प्रति सशक हैं। जमनी म श्रमसघों के विकास को तत्कालीन राजनीतिक दलों स प्रोत्साहन मिला उनमे उन्ह सदस्यों की भर्ती का स्रोत दिखाई पडा। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक म जब श्रमसघों ने अपने भीतर अपने दृष्टिकोण पर बल देने की शक्ति महसूस की तथा उन्हे आर्थिक हितों की प्राथमिकता का बोध हुआ तो उनके और दलों के बीच पहले सघष और उसके बाद समझौते हुए। उस समय जमनी और ब्रिटेन म दल और श्रमसघों के सबधों म समवाय की स्थापना हुई तथा दोनों देशों के श्रमिक आर्थिक भूमिकाओं की वाछनीयता की पुष्टि करने लगे। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य परिणाम भी निकले किंतु परपरा द्वारा निबाही गई भूमिका के महत्व के बारे म यहा काफी कहा जा चुका है। जमनी म 'दल पर निर्भरता' का स्थान राज्य पर निर्भरता ने ले लिया। (परवर्ती काल म जमनी की सरकारों ने दल पर निर्भरता को प्रतिबंधित करने के लिए राज्य पर निर्भरता' की पुनर्स्थापना के लिए बिस्मार्क और हिटलर दोनों द्वारा बनाई गई सामाजिक विधियां इसका उदाहरण हैं।)

ब्रिटिश श्रमिक श्रमिक वर्ग' के समथक थे न कि समाजवादी दल के। यह सूत्र राजनीतिक सगठन के बजाय श्रम सघ (आर्थिक सगठन) की प्राथमिकता के साथ मेल खाता है। श्रमदल (लेबर पार्टी) मूलत इन श्रमिकों का सगठन था जो राजनीतिक हितों के बजाय अपने व्यावसायिक हितों के सरक्षण के लिए कटिबद्ध थे। वस्तुत वे दल की ओर तभी मुडे जब उन्होंने यह समझ लिया कि दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। ब्रिटेन म श्रमिक वर्ग के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख राजनीतिक सगठन ने प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के समय तक

समाजवाद के सबसे अधिक गतिशील तत्व ने उन्हें और भी सुदृढ बना दिया। 1886 म स्थापित गटवादी नियंत्रित श्रम सघ समूह श्रमसघो का राष्ट्रीय सघ' (नेशनल फैडरेशन आफ ट्रेड यूनियन्स) को दल की सदस्य भर्ती का स्रोत और उसके प्रचार का अखाडा माना जाता था। इस प्रकार फ्रासीसी श्रमिक आदोलन के इतिहास म श्रमसघो और समाजवादियो का सघष प्रारभिक काल मे ही एक प्रमुख तत्व क रूप म उभरकर सामने आ गया।

यूरोपीय समाजवादी आदोलनो के मध्य अन्य भेदो तथा कतिपय मूलभूत समानताओ का परीक्षण आगे किया जाएगा। विश्व समाजवाद के प्रवक्ता के रूप मे पुनगठित सगठन द्वितीय श्रमिक अतर्राष्ट्रीय (सेकड वकिग मैस इटरनेशनल) की गतिविधि का अवलोकन भी किया जाएगा। समस्त भेदो के बावजूद यूरोपीय समाजवाद के विकासक्रम म आश्चयजनक समानताए दृष्टिगोचर होती है। इस पुस्तक का एक महत्वपूण प्रयोजन उन समानताओ के कारणो की खोज करना है।

* *

तैयारी प्रदर्शित की। एस० डी० एफ० का भी यही दृष्टिकोण था। अत, ऐसा लगता था कि सभी स्थितिया श्रमिक वग की ओर से उसकी स्वीकृति के लिए अनुकूल है। मार्क्सवाद के बारे मे एस० डी० एफ० अथवा हिंडमा के अधूरे ज्ञान के कारण उसने आर्थिक कायवाही की अपेक्षा राजनीतिक कायवाही पर अतिशयतापूवक भरोसा किया। यद्यपि एस० डी० एफ० और सोशलिस्ट लीग ने श्रमसघो के नेताओ को स्वीकार कर लिया था तथापि उन दोनो का श्रमसघो से घृणा रही क्योकि वे श्रमिक वग की निष्ठा प्राप्त करने के मामले मे उनके प्रतिद्वद्वी थे। क्राति सबधी उनके सिद्धातो को ब्रिटिश श्रमिको ने कभी स्वीकार नही किया। इसका एक अनूठा उदाहरण यह है कि श्रम सघ नेता जान बन्स ने लाल झडा फहराने की हिंडमा की प्राथना को एकदम अस्वीकार कर दिया था। यद्यपि एस० डी० एफ० ने विशेषत लदन मे अपने सगठन का विस्तार किया, प्रदशन किए तथा ससद के समक्ष प्रतिनिधिमडल भेजे तथापि उसको लोकसभा का एक भी स्थान नही मिल सका। उसकी सदस्य सख्या कभी दस हजार से ऊपर नही जा सकी तथा वह जनता का दल नही बन सका।

एक समस्या यह भी थी कि उनका कोई भी सदस्य अपने जीवनकाल मे क्राति का कोई उदाहरण पेश नही कर सका। यहा स्थिति फ्रास से भिन्न थी। हम यह देख चुके है कि ब्रिटिश श्रमिको द्वारा समाजवाद अपनाने की प्रक्रिया बहुत धीमी और कष्टकर रही है। आत्मरक्षा के अपने साधनो पर निभर रहने की उनकी परपरा ने राजनीतिक कायवाही को हतोत्साहित किया। क्रातिकारी समाधानो की अस्वीकृति (नव श्रमसघवादियो द्वारा भी) के पीछे यह तथ्य रहा कि ब्रिटिश श्रमिक एस० डी० एफ० की रूढ़िवादिता के कारण उससे अलग हट गए तथा सामाजिक परिवतन के लिए तत्कालीन ब्रिटिश उपचारो की ओर आकर्षित हुए। जरमी बथम रिचड काब्डन जान ब्राइट तथा अधिकारपत्रवादियो के उपयोगितावाद मिश्रित उग्रवाद ने उन समस्त दलो का माग अवरुद्ध कर दिया जो श्रमिक वग के हिंसक विप्लव तथा श्रमिक वग के अधिनायकवाद का प्रतिपादन कर रहे थे। ब्रिटिश उग्रवादी परपरा म सामाजिक सुधारो की पर्याप्त योजनाए थी तथा ब्रिटिश श्रमिक वग किसी भी जन आधारित राजनीतिक दल का समथन तभी करता था जब उसे यह विश्वास हो जाता कि उसके हितो का ससद म ऐसे प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है जो लिबरल पार्टी (उदारवादी दल) द्वारा सभव नही है।

फेबियन सोसायटी

समाजवाद के विकास म फेबियन विचारो का योगदान चाहे कितना भी महत्वपूर्ण रहा हो आधुनिक शोध से ज्ञात होता है कि उन्होने मार्क्सवाद के सशोधन

म श्रीमती एनीबीसेंट ने सोसायटी के सिद्धातो की व्याख्या की थी। उन्होने लिखा ऐसे किसी बिंदु की कल्पना नहीं की जा सकती जिस पर फेबियन सोसायटी व्यक्तिवाद की सीमा लाघकर समाजवाद के क्षेत्र मे प्रवेश कर सके। परिवतन निरतर अग्रसर हो रहा है तथा हमारा अपना समाज भी समाजवाद की दिशा म बढ रहा है।' जमन विचारक एडुअड बनस्टीन ने भी आगे जाकर ऐसे विचार ही प्रकट किए। वह प्राय फेबियनो से मिलता जुलता रहता था।

फेबियनो का लक्ष्य समाजवादियो का निर्माण करना नही वरन समाजवाद की स्थापना करना था। वे राज्यसत्ता के विस्तार को समाजवाद मानते थे। वेब ने राज्य सरकार के कार्यो की सूची तैयार की थी और उनम से प्रत्येक काय को समाजवाद की किस्त कहा था। केवल एक फेबियन निबधकार हुवट ब्लैंड ने यह सुझाव दिया था कि मुख्य बात यह नही है कि राज्य क्या करता है, वास्तविक कसौटी तो यह है कि उसका प्रयोजन क्या है।'[1] इस दृष्टिकोण के द्वारा फेबियनो ने धीरे धीरे समाजवाद को प्रतिष्ठित बना दिया। उन्होंने उदारवादियो का हृदय जीतने की कोशिश की तथा स्वय इडिपेंडेंट लेबर पार्टी स अलग रहे। उनका प्रारभिक अस्पष्ट गणतत्रवाद भी समाप्त हो गया तथा उन्होने विद्यमान सस्थाओ के प्रतिरक्षण का सकल्प कर लिया। फेबियन विचारक जनसाधारण का समथन म सफल नही रहे। उनम स जाज बनार्ड शा जसे कुछ विचारक तो जनसाधारण की सत्ता की धारणा के ही विरुद्ध हो गए तथा उन्होने उसी लोकतत्र की आलोचना की जिसने उन्हे राज्य के कार्यो मे भाग लेने की अनुमति दी थी।

फेबियनो की गतिविधि के बारे म हाल म ही प्रो० एरिक हाब्सबाम ने जो खोजबीन की है उसम उनकी राजनीति पर नया प्रकाश पडा है। हाब्सबाम ने उनका चित्रण वतनभोगी प्रशासको के नए स्तर के रूप म किया है जो न तो मुनाफा व्यवस्था स सबद्ध था न व्यक्तिगत उद्यम के साथ। वे कहते है कि उनका समाजवाद विक्टोरियन काल के 'अहस्तक्षेप नीति' (लैस्स फेयर) की प्रतिक्रिया तथा राज्य द्वारा हस्तक्षेप की आवश्यकता के बोध स जन्मा था। आर्थिक उदारवाद के प्रति उनकी निराशा का उदय परिवर्तित समाज के दशन के कारण नही वरन अधिक व्यावसायिक क्षमता की अभिलाषा म से हुआ। ततत्व अत्यत सशोधित पूजीवाद के पक्ष म था जो राष्ट्रीय नियोजन तथा न्यूनतम जीवन स्तर के निर्धारण द्वारा कल्याणकारी राज्य की भूमिका तयार कर तथा इस प्रकार शुद्ध व्यक्तिवाद को समाप्त कर दे। आग चलकर उनके द्वारा राज्य तथा साम्राज्यवाद तत्र के समथन की बात इस सदभ म आसानी स समझ म आ जाती है।

फासीवाद सरीखा कठोर नहीं रहा।

युद्ध की समाप्ति पर जर्मनी की भांति आस्ट्रिया में भी समाजवादी दल सबसे बड़ा दल था अत शान्तिकालीन पुनर्निर्माण का दायित्व उसी को सौंपा गया। समाजवादी आस्ट्रिया को जर्मनी का अंग बनाना चाहते थे। इसके लिए व राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के अधिकार का उपयोग करना चाहते थे तथा उन्हें यह विश्वास था कि कटा छटा नया गणराज्य आर्थिक दृष्टि से समर्थ नहीं बन पाएगा। फरवरी, 1919 में संविधान सभा के निर्वाचनों में उनको बहुमत प्राप्त हो गया, उन्होंने अपने प्रमुख प्रतिद्वद्वी ईसाई समाजवादियों को छह मतों से पराजित कर दिया। मिश्रित सरकार बनी जिसका प्रधानमंत्री (चासलर) कार्ल रेनर बना। अतिवादियो, विशेषत साम्यवादी हगरियाई नेता बेला कुन के क्रांति भड़काने के प्रयास विफल हो गए जो वियना से यह चाहता था कि वह बुडापेस्ट का अनुकरण करे। अधिकांश समाजवादियों का अनुमान था कि इसका परिणाम पडोसियों के साथ युद्ध, देश के भीतर गृह संघर्ष तथा मित्रराष्ट्रों से मिलने वाली सहायता के अंत के रूप में सामने आएगा। आस्ट्रियाई साम्यवादी दल एक गुट से अधिक कभी नहीं बन सका, लेकिन एक ओर साम्यवाद के खतरे तथा दूसरी ओर पड़ोमी देशों में प्रतिक्रियावादी सरकारों के निर्माण ने किसानों तथा बुर्जुआ वर्ग के कुछ भाग को और अधिक दक्षिणपक्ष की ओर धकेल दिया। मित्रराष्ट्रों की ओर से जब आस्ट्रियाई जर्मन एकता पर पाबंदी लगा दी गई तो विदेश मंत्री आटो बोर ने त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद अन्य मंत्रियों ने भी त्यागपत्र दे दिया। सरकार का नियंत्रण छोटे संकीर्ण बुर्जुआ दलों द्वारा समर्थित ईसाई समाजवादियों के हाथों में आ गया तथा गणतंत्र की पूरी अवधि में उनका बहुमत बना रहा। उनकी शक्ति का स्रोत कैथोलिक और रूढ़िवादी देहाती क्षेत्र थे। समाजवादियों ने वियना पर नियंत्रण बनाए रखा तथा आवास शिक्षा और मनोरंजन के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त की।

प्रथम गणतंत्र के दौरान आस्ट्रियाई समाजवाद पर दल के भीतर के आस्ट्रियाई मार्क्सवादियों का प्रभुत्व बना रहा। हम पीछे यह अध्ययन कर चुके है कि 1914 से पहले उन्होंने समाजवादी चिंतन के क्षेत्र में क्या योगदान किया विशेषत राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद क्षेत्रों में। यद्यपि उनकी संख्या कम ही थी तथापि उन्होंने एडवर्ड बर्नस्टीन के संशोधनवाद का जो विरोध किया उससे दल में उसकी प्रगति रुक गई थी। आस्ट्रियाई मार्क्सवादी निरंतर मार्क्सवाद और नव काटवादी चिंतन के बीच सामंजस्य स्थापित करने की चेष्टा करते रहे तथा वे मार्क्सवाद के समाजशास्त्रीय पक्षों को अधिक महत्व देते रहे। इस गुट का प्रमुख

प्रतिनिधि आटो बोर था। अपने पूववर्ती विचारक विक्टर एडलर की भांति उसने दलीय एकता को प्रधानता दी तथा वह मार्क्सवाद के वैज्ञानिक चरित्र बनाए रखने के व्यापक प्रयास के अग के रूप मे मार्क्सवादियो के साथ भी सहयोग करने को तैयार था। बोर के मन म यह भय था कि सरकार मे भाग लेने से क्रांतिकारी आस्थाए भ्रष्ट हो जाएगी, इसी कारण वह लोकतांत्रिक रीतियो से सत्ता प्राप्त करने की हिमायत करता था। 1926 म दल के लिंज सम्मेलन मे उसने सवहारा वग के अधिनायकवाद की धारणा को अस्वीकार कर दिया किंतु यदि मध्यवग चुनावो मे सवहारा वग की विजय को मानने से इकार करे तो वह बलप्रयोग के पक्ष म था। वह आत्मरक्षा के साधन के रूप म हिंसा के उपयोग को पूणतया विहित मानता था। यह स्थिति काटस्की के मध्यमागवाद का स्मरण दिलाती है। क्रांतिकारी साम्यवाद और पाश्चात्य समाजवाद के बुजुआकरण के बीच यह एक मार्क्सवादी मध्यमाग की तलाश थी।

आस्ट्रियाई मार्क्सवादियो के दक्षिण की ओर तथाकथित अनुभववादी थे जो अधिकाश सामाजिक विधियो के निर्माण के लिए उत्तरदायी थे। रेनर और उसके साथी बुजुआ दलो के साथ सहयोग करके विद्यमान समाज के भीतर श्रमिको की स्थिति सुधारने के पक्ष म थे। वामपक्षियो के लिए राजनीतिक लोक तत्र महज एक औपचारिक व्यवस्था था। वे सामाजिक लोकतत्र को ही वास्तविक लोकतत्र मानते थे जिसके अतगत वगविहीन राज्य की स्थापना की जा सकती है।[8] समूची जनसख्या के अनुपात म आस्ट्रियाई समाजवाद चदा देने वाले सदस्यो और मतदाताओ दोनो दृष्टियो से विश्व मे सबसे बडा था। उन्होंने 1927 म 42 प्रतिशत मत प्राप्त किए तथा वियना मे दो तिहाई बहुमत लिया। इस प्रकार वियना को यूरोप का सबसे अधिक प्रगतिशील नगर माना जाने लगा था। तथापि ईसाई समाजवादी दल के प्रधानमत्री मासिनगर इगनाज सीपेल ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता से दूर रखा।

तीसरे दशक के उत्तराध मे फासीवाद एक महत्वपूण राजनीतिक शक्ति बन गया। हाइमवेहरेन एक अधसैनिक सगठन था जिसम अधिकाशत समृद्धतर किसानो के बेटे थे तथा उसका नेतृत्व शाही सनिक अधिकारियो के हाथो म था। उसके पीछे सरकार व्यवसायियो और चच का समथन था। समाजवादियो ने उसके मुकाबले के लिए शुत्जबड श्रमिक सशस्त्र सेना का सगठन किया। उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि राज्य की ओर से इन दोनो सेनाओ को विघटित किया जाए लेकिन सीपेल ने इसे अस्वीकार कर दिया। नाजियो की सफलताओ ने आस्ट्रिया म फासीवादियो को प्रोत्साहित किया। उन्हे प्रातीय चुनावो म काफी बडी मात्रा मे और राजधानी

मे उससे कुछ कम मात्रा म प्रतिनिधित्व पहल ही प्राप्त हो चुका था। लेकिन उन्होंने जो विजय प्राप्त की थी उससे हानि ईसाई समाजवादियो का हुई थी समाजवादियो को नही। ऐंजेलवट डोलफस को अपन विरोधियो अर्थात समाजवादियो और महा जमनीवादी दलो की अपक्षा एक मत अधिक मिल गया और वह प्रधानमत्री बन गया। उसने जमनी म नाजियो की विजय क तुरत बाद सारी सत्ता अपन हाथो म ले ली, तथा ससद की बैठको पर पाबदी लगा दी। उसन आस्ट्रिया को ईसाई निगमात्मक राज्य का नया स्वरूप प्रदान करने के लिए अध्यादेशो द्वारा शासन करना शुरू कर दिया। उससे यह अपेक्षा थी कि वह समाजवादियो अथवा नाजियो म से किसी एक के साथ गठबधन कर लेगा मगर उसन दोनो की भत्सना की। शुत्जबड का विघटन कर दिया गया और वियना को राज्य से दी जाने वाली सहायता म भारी कटौती कर दी। नाजी दल का भी अधिकृत तौर पर भग कर दिया गया लकिन नाजी अत्याचार जारी रह। समाजवादियो न नाजियो की अपक्षा डौलफस को पसद किया और यह अनुमान लगाया कि डौलफस क विरुद्ध सघष करने से नाजियो को बल मिलेगा। परिणामत उन्होन उसके विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध नही किया। बाद म बोर ने यह स्वीकार किया कि आस्ट्रियाई समाजवादियो की सबसे बडी भूल यह रही कि उन्होने डौलफस द्वारा सत्ता के अपहरण के समय एक आम हडताल का आवाहन तक नही किया। उसका यह निष्कष सही था कि दल द्वारा तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त न किए जान के कारण सवहारा के मनोबल को भारी आघात पहुचा।

6 फरवरी 1934 के पेरिस दगे ने आस्ट्रिया म गहयुद्ध भडका दिया। फ्रास से ऋण प्राप्त करने के लिए डौलफस ने यह वचन दिया था कि वह आस्ट्रिया मे लोकतत्रीय सस्थाओ का सरक्षण करेगा। जिस फ्रासीसी सरकार ने उससे यह वचन लिया था उसका पतन हो गया तथा डौलफस के मन म यह धारणा पैदा हो गई कि यूरोप का अतिम महान लोकतत्र भी समाप्त होन को है, अत उसने हाइमवेहरेन की माग मानकर आस्ट्रियाई समाजवादी लोकतत्र को विघटित करने के आदेश जारी कर दिए। लिंज के श्रमिको ने शस्त्रो की तलाशी के लिए आई हुई पुलिस का प्रतिरोध किया। वियना म आम हडताल का आयोजन किया गया और दोनो ओर स गोली चली। यह गहयुद्ध लबा तो नही चला मगर बहुत भीषण रहा।

समाजवादियो को सडको पर लडने का कतई अभ्यास न था। गुप्त शस्त्रभडार उनके हाथ नही लग पाए केवल दल के नेताओ को उनका पता मालूम था, लेकिन उन्हें पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था। दल आम हडताल का निश्चय भी

प्रसारित नही कर सका क्योंकि उसने हडताली बिजली कर्मचारियों के साथ यह व्यवस्था नही की कि वे समाजवादी समाचारपत्रो की बिजली चालू रहने दें। "गुटजबड ने वियना के हर घर के सामने सशस्त्र सघर्ष किया तथापि वियना हाथ से निकल गया और लोकतत्र और समाजवाद दोनो का वैधानिक रूप मे अत हो गया।

अनेक समाजवादी नेता भागकर चेकोस्लोवाकिया चले गए जहा उन्होने भूमिगत प्रतिरोध सगठन का निर्माण कर लिया। अगले चार वर्षो म आस्ट्रिया के भीतर छोटे छोटे समूह मिलकर विशाल विरोधी प्रदशन करते रहे। जिस समय हिटलर ने फरवरी 1938 मे चासलर कुत वान शुशनिग को चेतावनी दी उस समय समाजवाद एक बार फिर से एक राष्टीय शक्ति के रूप म उभर रहा था। शुशनिग न जब यह देखा कि इटली की सहायता पर भरोसा नही किया जा सकता तो उसने समाजवादियो की सहायता प्राप्त करने के लिए उन्हें अभिव्यक्ति की स्वतत्रता और श्रमसघो की स्वायत्तता देने का वचन दिया। चर्चा शुरू हुई, मगर उसके पूरा होने से पहले ही नाजी सेनाओ न आक्रमण कर दिया। नाजियो की विजय के फलस्वरूप वह समाजवादी आदोलन समाप्त हो गया जिसने सामाजिक लोकतत्र और साम्यवाद के बीच एक मध्यमार्ग अपनाने की कोशिश की थी। यह प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात के यूरोप मे सबसे अधिक रचनात्मक समाजवादी दल का निधन था। उसने गैर साम्यवादी वामपक्ष म होते हुए भी मार्क्सवादी आत्मबोध बनाए रखने और वामपक्ष की एकता की चेष्टा की थी, जिसके कारण साम्यवादी इटरनेशनल ने उसकी अत्यत कठोर भाषा मे भर्त्सना की थी।

अतर्राष्ट्रीय समाजवाद और फासीवाद

फासीवाद के विकास और उसकी सफलता के प्रति अतर्राष्ट्रीय समाजवाद की क्या प्रतिक्रिया रही ? समाजवादियो ने द्वितीय इटरनेशनल को पुनर्जीवित करने की चेष्टा की (1920 का बन इटरनेशनल) तथा अढाई इटरनेशनल (वियना, 1921) के समथक 1923 म अशत इटली म फासीवादी विजय और जमनी म नाजीवाद के लक्षण प्रकट होने के कारण उनके साथ मिल गए थे। लेकिन इतालवी फासीवाद अपने आपम विलक्षण था। 1928 के एल० एस० आई० सम्मेलन मे आटो बोर ने विश्व की राजनीतिक स्थिति के बारे मे अपने प्रतिवेदन मे विविध विषयो की चर्चा की लेकिन फासीवाद शब्द का उल्लेख तक नही किया। अधिकाश समाजवादियो की तरह उसे फासीवादी आदोलन का कोई विशेष अतर्राष्ट्रीय महत्व नही दिखाई दिया और उसने मुसोलिनी द्वारा दिए गए आश्वासना पर शब्दश विश्वास कर लिया कि 'फासीवाद निर्यात के लिए नही है।'

ऐसा मान लिया गया था कि फासीवाद का विकास प्रौद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए क्षेत्रों के साथ संबद्ध है, औद्योगिक दृष्टि से विकसित लोकतंत्रात्मक देशों में उसका कोई स्थान नहीं हो सकता। इस प्रकार आरंभ में फासीवाद के पूंजीवाद विरोधी आयाम और आर्थिक संकट के समय लोकप्रियता प्राप्त करने की उसकी सामर्थ्य को समाजवादी समझ ही नहीं पाए।

समाजवादी इंटरनेशनल के वियना सम्मेलन में नाजीवाद और आर्थिक मंदी दोनों के बारे में विस्तार के साथ चर्चाएं हुई। वहां फासीवाद के बारे में कहा गया कि वह मरते हुए पूंजीवाद द्वारा अपनाई गई गुंडागर्दी की नीति है। यह परिभाषा साम्यवादियों द्वारा दी गई परिभाषा के अनुरूप थी। लेकिन इस सम्मेलन ने उसका उपचार तलाश करने की कोशिश की। उसने यह प्रस्ताव रखा कि जर्मनी की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान करने और देश द्वारा किए जा रहे क्षतिपूर्ति भुगतानों को बिना शर्त रोकने के लिए पूंजीवादी देशों में प्रार्थना की जाए। इस प्रश्न पर प्रतिनिधियों के बीच गहरा मतभेद उत्पन्न हो गया कि एस० पी० डी० ब्रूनिंग सरकार के प्रति रुख अपनाए। ब्लम और बोर की तरह कुछ लोग सहनशीलता की सिफारिश कर रहे थे तथा आई० एल० पी० के जेम्स मक्सटन सरीखे अन्य लोग खुले संघर्ष की हिमायत कर रहे थे।

हिटलर के सत्तारोहण के बाद समाजवादी इंटरनेशनल के नेताओं ने अगस्त 1933 में पेरिस में बैठक की। वे फासीवाद के विरुद्ध एक सम्मिलित वामपक्षी मोर्चा बनाने के प्रश्न पर सहमत नहीं हो सके। इतालवी आप्रवासी पियत्रो नेन्नी सरीखे कुछ लोगों ने यह आग्रह भी किया कि कॉमिंटर्न की नीति के अनुसार क्रांतिकारी रीति नीति अपना ली जाए तथा सत्ता पर तुरंत अधिकार कर लिया जाए। अधिकांश स्कैंडिनेवियाई समाजवादियों ने साम्यवादियों के साथ पूर्णतया संबंध विच्छेद की सिफारिश की। उन्होंने कहा कि समाजवाद को मध्य वर्ग की सहानुभूति प्राप्त करके लोकतंत्रात्मक राज्यों को सुदृढ़ बनाना चाहिए। इन दोनों स्थितियों के बीच में आटो बोर और लिओन ब्लम का मध्यमार्ग था, जिसमें कहा गया था कि समाजवाद को अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखकर साम्यवादियों के साथ समझौते की कोशिश करनी चाहिए। मूल बात यह थी कि समाजवादियों के मन में यह बात आई ही नहीं कि फासीवाद एक अंतर्राष्ट्रीय शक्ति बन सकता है और वामपक्ष को उसका सामना संयुक्त रूप से करना चाहिए। उसको सफेद बूलांगवाद' के समान माना गया तथा कहा गया कि वह राष्ट्रों का महज घरेलू मामला है।[9] वास्तविकता इसके विपरीत थी, वह एक अनुपम जन आंदोलन था एक नया ऐतिहासिक तत्व। वह मरणासन्न पूंजीवाद न

था और उसकी परिभाषा बुर्जुआ सवहारा सघष की घिसीपिटी शब्दावली मे नही की जा सक्ती थी। यह वसी ही भूल थी जैसी 1914 मे राष्ट्रवाद की शक्ति का गलत अनुमान लगाकर की गई थी, मगर यह भूल उस भूल की अपक्षा अधिक भारी सिद्ध हुई। लोकतन्त्रात्मक सस्थाओ के सरक्षण के लिए समाजवादी तभी सगठित हो पाए जब सयुक्त जनता मोर्चे के समाजवादी और साम्यवादी कायकर्ताओ ने अपने अपने नेताओ की उदासीनता के बावजूद इस दिशा मे पहल की।

नव सशोधनवाद

मध्य और दक्षिण यूरोप म समाजवाद कुचला गया। पाश्चात्य लोकतन्त्रीय देशो मे फासीवाद और उसके द्वारा जाहिर तौर पर प्राप्त की गई सहानुभूति न क्या प्रभाव डाला ? चौथे दशक के समाजवादी आदोलन की विशेषता यह थी कि उसके दौरान समाजवाद को पुन सशक्त बनाने और उसे एक नई गति प्रदान करने की चेष्टा की गई। इस प्रयास ने फ्रास मे मार्सेल दे आत के नव समाजवाद का, इग्लैंड म ओस्वाल्ड मोजले की न्यू पार्टी का, और बेल्जियम मे हेन्रिक द मान के लेबर प्लान मूवमेंट (श्रम योजना आदोलन) का रूप ग्रहण किया। समाजवाद के इतिहासकार की दृष्टि मे इन व्यक्तियो और उनके विचारो का तुलनात्मक अध्ययन निस्सदेह महत्वपूण है। उन सबन सरकार के सुदढतापूवक सचालन जनसमथन के आवाहन तथा आर्थिक नियाजन पर निभरता की बात कही। लेकिन प्राय हर देश मे नव सशोधनवादी बहुसख्यक समाजवादियो के हाथा पराजित हुए अपने अपने दलो से अलग हुए और अध फासीवादी ढग से विकसित हुए। इस प्रक्रिया ने यूरोप के श्रमिकवग को और अधिक विभाजित कर दिया तथा उसका मनोबल क्षीण कर दिया।

नव समाजवाद

फासीवादिया की सफलताओ से मिले सबक से लाभ उठाने के लिए कृतसकल्प प्रथम समाजवादी आदोलनो म से एक एस० एफ० आई० ओ० के अतगत नव समाजवादी आदोलन था। उसके नेताओ मे महापौर तथा बोड स निर्वाचित ससत्सदस्य एड्रियन मार्क्वे तथा भूतपूव नार्मलवादी मार्सेल दे आत थे। दे आत को ब्लम का उत्तराधिकारी तथा दल का भावी अध्यक्ष माना जाता था। 1930 मे देआत न अपनी पुस्तक सोशलिस्ट पसपक्टिव्ज (समाजवादी सभावनाए) म अपने दल से मध्यवग तक पहुचन और सत्ता मे भाग लने की प्रायना की थी। एस० एफ० आई० ओ० क महासचिव और गेड के पुरान शिष्य पाल फार ने तुरत उस पर मशोधनवाद का आराप लगाया। 1933 म समाजवादी इटरनेशनल

की एक बैठक जमन सामाजिक लोकतंत्र की मृत्यु पर शव परीक्षा के लिए बुलाई गई थी, उसमें मार्क्वे ने कहा कि समाजवाद में अवरोध आ गया है और वह अपनी लोकप्रियता खो बैठा है। उसने कहा कि संकट और भ्रांति की विद्यमान घड़ी में व्यवस्था ने क्रांतिकारी अर्थ ग्रहण कर लिया है। उसने आगे कहा, "यदि हम समाजवादी होने के नाते संकल्प, कार्यवाही और व्यवस्था सरीखी धारणाओं में निहित विषयों के बारे में मौन रहते हैं तो हमारी भी वही गति हो सकती है जो उन देशों की हुई है जिनसे समाजवादियों का निर्वासित कर दिया गया था।"[10]

इससे पहले फ्रांस के समाजवादी सम्मेलन में दे आत और मार्क्वे ने जमन समाजवाद की विफलता से यह निष्कर्ष निकाला था कि व्यवस्था, सत्ता और राष्ट्र अपरिहार्य है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीयतावाद का रूमानी और काल्पनिक आदर्श बताया। उस समय नव समाजवादियों ने फासीवाद की सही परिभाषा करते हुए कहा कि फासीवाद महज प्रतिक्रियावादी अनिवार्य नहीं है वह एक जन आंदोलन है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि नई परिस्थितियों में यह अनिवार्य हो गया है कि समाजवादी संघर्ष के लिए नई रीतियां अपनाई जाएं। वे यह चाहते थे कि फासीवादी नारों के समान ही कुछ नारे समाजवादी भी अपनाएं, विशेषत उन्हें सशक्त सरकार की जनाकांक्षा की पूर्ति का आश्वासन देना चाहिए। पूंजीवाद के दोषों का प्रतिरोध क्रांति से नहीं नियोजन से होगा। नव समाजवादियों ने 'राष्ट्रीय' समाजवाद की धारणा प्रस्तुत की और यह बात स्वीकार की कि जिस प्रकार फासीवाद ने अपना सामाजिक कार्यक्रम समाजवाद से लिया है उसी प्रकार समाजवाद को भी फासीवाद से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

लियान ब्लम ने कहा कि इस तरह का चिंतन घृणास्पद है और उसने यह आस्था दोहराई कि पूंजीवाद से समाजवाद तक की यात्रा में फासीवाद एक अनिवार्य पड़ाव हो सकता है। दल के बहुमत ने ब्लम की इस धारणा के प्रति सहमति प्रकट की। एस०एफ०आई०ओ० की राष्ट्रीय परिषद ने नव समाजवाद को सर्वत अस्वीकार कर दिया तथा देआत मार्क्वे, पियरे रेनाडेल तथा चार अन्य नव समाजवादियों को दल से निकाल दिया। उनके प्रति सहानुभूति रखने वाले संसत्सदस्य और बुद्धिवादी भी उनके साथ ही दल से स्वेच्छापूर्वक निकल गए, इनमें कापेर मौरेल और पाल रेमदिए के नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने फ्रांस में एक नए समाजवादी दल की नींव रखी लेकिन उसकी सदस्य संख्या 20 000 से ऊपर नहीं जा सकी। नव समाजवादियों के विचार किस वर्ग को अच्छे लगते थे? वे अधिकांशत उन सक्रिय युवा तत्वों और असंतुष्ट दक्षिणपंथी सुधारवादियों को पसंद थे जिन्होंने 1932 में

ब्लम द्वारा मंत्रिमंडल में भाग लेने से इंकार करने पर उसकी निंदा की थी। इन दोनों तत्वों के बीच बहुत गहरे मतभेद थे जिनके कारण नए दल को सफलता मिलने की कोई संभावना नहीं थी। जहां तक ये दोनों तत्व मध्यवर्ग की सरकारों की निंदा करने के लिए समाजवादियों की भर्त्सना करते थे वहां तक तो ठीक था लेकिन इन तत्वों द्वारा पेश किए गए आर्थिक और वित्तीय समाधान उग्रवादियों तक को अत्यधिक प्रगतिशील प्रतीत होते थे। जनता मोर्चे की घटनाओं ने नव समाजवादियों को कोने में धकेल दिया, तथा रनाडेल की मृत्यु के बाद उसके अनेक समर्थक एस० एफ० आई० ओ० में लौट गए। स्वयं देआत 1936 के चुनावों में जनता मोर्चे के उम्मीदवार से हार गया। वामपक्ष द्वारा अस्वीकार कर दिए जाने पर देआत नाजियों को खुश करने की नीति का प्रमुख प्रवक्ता बन गया, तथा 1939 में उसने नारा लगाया "डैंजिग के लिए क्या मरा जाए ?" यह आंदोलन अधिनायकवादी और राष्ट्रीय नारों से आप्लावित था, इसके बावजूद उसने समाजवादी दल के इस आंतरिक विरोधाभास को उजागर कर दिया कि वह एक ओर तो क्रांति की धारणा का विरोधी था, दूसरी ओर वह सत्ता में भाग लेने से इंकार कर रहा था। तथा उसने नियोजन की जिस नीति का उस समय विरोध किया वह द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद समाजवादी चिंतन में फिर से उदय हो गई।

दे मान और श्रम योजना

नव समाजवादियों के कुछ विचार बेल्जियम के श्रम योजना आंदोलनों से मिलते जुलते थे। योजना का उद्देश्य अर्थव्यवस्था का रूपांतरण करना था, इसके लिए उसमें बुनियादी उद्योगों और वित्त के राष्ट्रीयकरण तथा बड़ी कृषि जोतों को निजी स्वामित्व से मुक्त करने की व्यवस्था थी। इसके बावजूद योजना के अंतर्गत निकट भविष्य में गैर एकाधिकारवादी गतिविधि का निजी स्वामित्व के हाथों में छोड़ने की व्यवस्था थी। उसका प्रयोजन फासीवाद के विकास को रोकना था, जिसके लिए मध्यवर्ग के बड़े हिस्से को समाजवाद के पक्ष में प्रभावित करना था। इस योजना के निर्माता प्रतिभाशाली किंतु अस्थिर हेंड्रिक दे मान ने बेल्जियन सेना में नौकरी की थी। वह संयुक्तराज्य अमरीका में व्यापक तौर पर घूमा था तथा जर्मनी में एक लंबे अरसे तक प्राध्यापक रह चुका था। वह जर्मनी को अपना आध्यात्मिक घर मानता था।

दे मान ने मंदी की सही परिभाषा करते हुए कहा कि वह सिकुड़ती हुई आय का काल है। फलत: श्रमिक वर्ग के लिए अधिक आय या बड़ा अंश प्राप्त करने के लिए दबाव गुट की तरह काम करने की नीति आत्म पराजय की नीति है क्योंकि

स्वयं आर्थिक आय का आकार ही घटता जा रहा है। मूल प्रयोजन राष्ट्रीय आय में निरंतर वृद्धि है जिसके लिए सामाजिक संरचना में परिवर्तन आवश्यक है। अर्थव्यवस्था को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में विभाजित करके, दोनों क्षेत्रों को एक राष्ट्रीय ढांचे के भीतर और एक नियोजित व्यवस्था के अंतर्गत लाकर तथा निजी क्षेत्र में मुक्त विकास का अवसर देकर यह आशा की गई थी कि मध्यवर्ग अनुन्नियाशील बनेगा तथा इस प्रकार उसे फासीवादी प्रभुत्व का साधन बनने से रोका जा सकेगा। श्रमिकों के साथ साथ निम्न मध्यवर्ग का समर्थन प्राप्त करने (वित्त पूंजीवाद इन दोनों ही वर्गों का समान रूप से शत्रु था), तथा एक सशक्त सरकार के अंतर्गत राष्ट्रीय आर्थिक नियोजन के मामले में यह योजना अनेक प्रकार से नव समाजवादियों के 'व्यवस्था, सत्ता और राष्ट्र' नामक सूत्र के समान थी। उसने यूरोप के बहुमत से समाजवादियों को प्रभावित किया तथा 1933 में बेल्जियम वर्कर्स पार्टी ने उसे अंगीकार कर लिया।

कुछ दुर्घटनाओं के कारण उसे पूरी तरह से लागू नहीं किया जा सका। इनमें से एक बेल्जियन वर्कर्स बैंक का दीवालिया हो जाना है। देश भर के श्रमिक संघों का कोश इसी बैंक में जमा था। इसके टूटते ही वे सब आर्थिक दृष्टि से तबाह हो गए। मार्च 1935 में बेल्जियम में राष्ट्रीय एकता मंत्रिमंडल का निर्माण किया गया। शुरू में श्रमदल ने उसमें भाग लेने से इंकार कर दिया था। इसका कारण यह था कि मंत्रिमंडल ने योजना को लागू करने से इंकार कर दिया था। बेल्जियम नरेश लियोपोल्ड तृतीय ने अंततः उसे मना लिया तथा दल के वामपक्षीय गुट का समर्थन प्राप्त करने के लिए उसके मुखिया पाल हेनरी स्पाक को पोस्टमास्टर जनरल नियुक्त कर दिया गया। इस प्रकार दल ने योजना के प्रमुख राजनीतिक लक्ष्य की पूर्ति के बिना ही उत्तरदायित्व संभाल लिया। अंत में दल की सारी शक्ति कैथोलिक फासीवादी आंदोलन (रक्सिस्ट पार्टी) का सामना करने में खर्च हो गई जिसका नेता लिआन डेग्रेल था। उसने उसे 1937 के चुनावों में हरा दिया। फ्रांस और स्पेन में जनता मोर्चों की सरकारों के निर्माण तथा यूरोपीय श्रमिक और समाजवादी व्यूहरचना समितियों में वैदेशिक मामलों की प्रमुखता ने योजना को और भी पीछे धकेल दिया। जब जर्मन सेना ने 1940 में बेल्जियम पर आक्रमण किया तब दे मान ने स्पाक तथा अन्य नेताओं की तरह भागकर ब्रिटेन में शरण लेने का मार्ग नहीं चुना। उस समय वह दल का नेता था। उसने दल से नाजियों के साथ सहयोग करने के लिए कहा, किंतु नाजी उसे पसंद नहीं करते थे अतः उसे विवश होकर 1942 में निर्वासन स्वीकार करना पड़ा। युद्ध की समाप्ति पर उसपर मुकदमा चलाया गया तथा उसकी अनुपस्थिति में ही उसके लिए मृत्युदंड की घोषणा कर दी गई। इसके बावजूद इस बात से इंकार

कि रेपोलो मे जिस जमनी समथक नीति का निर्माण किया गया था उसम अब सशोधन किया जाना चाहिए। हम यह उल्लेख कर चुके हैं कि माक्सवादी व्याख्याकार फासीवाद को भयाक्रात बुर्जुआ वग द्वारा निराशावश हिंसा का प्रयोग मात्र मानते थे लेकिन सत्ता में आने के बाद उसने क्रातियो के युग का द्वार खोल दिया। सोवियत नेता हिटलर को साम्यवाद का प्रथम चरण मानते थे अत उन्होने अपने बर्लिन दूतावास को हिटलर के सत्तारोहण के बाद सोशल डिमाक्रेट नेतत्व के साथ सपक समाप्त करने के आदेश दे दिए। वास्तव म कामिटन ने अपनी 'वग के विरुद्ध वग' की अपनी 1928 की नीति का तेजी से अनुसरण शुरू कर दिया तथा फ्रास म एस० एफ० आई० ओ० को 'द्रोहकारी दल' कहकर उसकी भत्सना की।

साम्यवादियो सहित सभी फ्रासीसी श्रमिको ने इस विश्लेषण को नापसद किया। फ्रासीसी साम्यवाद के प्रमुख नेता मारिस थोरेज ने कामिटन की कायकारिणी को अपनी रिपोट मे बताया कि उसकी नीति के परिणामस्वरूप दल के कायकर्ताओ म 'भ्रांति, सदेह और अनुशासनहीनता' का वातावरण पैदा हो गया है। उसने यह उल्लेख भी किया कि साम्यवादी नगरपालिका सदस्यो ने बुर्जुआ लोकतत्र की प्रतिरक्षा' का आवाहन करने वाले प्रस्ताव का समथन किया है। साम्यवादी श्रमसघीय नेताओ ने समाजवादी और ईसाई लोकतन्त्रवादी श्रमसघीय नेताओ के साथ चर्चाए की तथा उनके साथ मिलकर एक सयुक्त समिति का गठन किया। अपनी जाच पडताल के बाद कामिटन ने यह स्वीकार किया कि अनेक पी० सी० एफ० सदस्य समाजवादी दल के प्रति अपनाए गए रवैये म परिवतन चाहते हैं।[11] उसने फासीवादी विरोधी कायवाही के आवाहन के साथ साथ इस बात पर भी बल दिया कि सामाजिक लोकतत्र की धारणा के विरुद्ध सघष जारी रखा जाए तथा श्रमिको को यह विश्वास दिलाया जाए कि उसका और समाजवादी इटरनेशनल का दीवालियापन इतिहासिक दृष्टि से अपरिहाय है। व्यूहरचना की दृष्टि से मूल प्रयोजन समाजवादी श्रमिको को साम्यवादी नेतत्व के नीचे इकट्ठा करना था। इसका एक तरीका तो यह था कि सयुक्त मोर्चा बनाया जाए, लेकिन यह साम्यवादी और समाजवादी श्रमिको की सयुक्त समितियो के द्वारा ही सभव था, अर्थात नीचे से और इसके लिए साम्यवादी कायकर्ताओ म कठोर अनुशासन की अपेक्षा रखी गई थी। इस प्रकार के सयुक्त मोर्चे से निश्चय ही समाजवादी नेतृत्व को हानि उठानी पडती। जोसेफ पिलदुस्की के साथ हिटलर के समझौते ने (जिससे पोलैंड होकर सोवियत सघ पर जमन आक्रमण की सभावना कट गई थी) रूस की नीति म कोई परिवतन नही किया कम से कम ऐसा परिवतन तो हर्गिज नही हुआ जिससे यह सकेत मिलता हो कि वह फासीवाद के

तुरत प्रहार की आवश्यकता महसूस नही करता, वह 'साम्यवाद का 'क ख ग' भी नही जानता' तथा वह 'ससदीय मानसिक पक्षाघात'[14] से ग्रस्त है। अत साम्यवादी रीति-नीति का मुख्य प्रयोजन समाजवादियो और उग्रवादियो का यह सिद्ध करके बेनकाब करना था कि वे बुर्जुआ राज्य के सयत्र के भीतर आत्मसात हो गए हैं तथा अब पूजीवाद के उपकरणो के रूप मे काम करने लगे हैं। दलीय कार्यकारिणी ने कामिटर्न का अनुसरण जारी रखा तथा नाजियो द्वारा सत्ता प्राप्त करने के बाद तथा गहरे असतोष के बावजूद अपनी नीति म कतई परिवतन नही किया। दल के नेताओ और कायकर्ताओ म से बहुत को समझ म यह बात आ गई थी कि जिम्मेदारी का बटवारा चाहे जिस तरह भी किया जाए जमनी के समाजवादी और साम्यवादी एक पराजित शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

थोरेज ने यह बात पहले ही समझ ली थी कि घटनाए दलीय नेतृत्व (और कामिटर्न) को पीछे छोडती जा रही ह वही हुआ। बजट की समस्याओ ने किफायतशारी की योजनाओ को जन्म दिया और दूसरी ओर बढ़ती हुई बेरोजगारी के साथ आर्थिक मदी ने मत्रिमडल की बढ़ती हुई अस्थिरता मे योग दिया। जून 1932 से फरवरी 1934 के दौरान 20 महीने के अतराल मे 6 सरकारें बनी, और 1930 से 1936 के बीच साढ़े छह वर्षों मे 18। फ्रासीसी इतिहास में अतीत की तरह इस बार भी प्रभावशाली सरकार की सभावना के अभाव मे ससदीय व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई। लोकतत्रीय प्रक्रियाओ की अपर्याप्तता से निराश होकर फ्रास के लोग अन्य प्रणालियो की तलाश करने लगे। एक ऐसा वित्तीय घोटाला सामने आने पर, जिसमे वामपक्षीय राजनीतिज्ञ भी शामिल थे 6 फरवरी 1934 को सडको पर मुठभेडें शुरू हो गइ जिनम 15 व्यक्ति मारे गए, दजनो घायल हुए, एक रूढिवादी राष्ट्रीय एकता सरकार की स्थापना हुई, तथा श्रमिको के मन मे यह विश्वास उत्पन्न हो गया कि ये दगे फ्रासीसी लोकतत्र के लिए ड्रेफस काड के बाद सबसे बडे घरेलू खतरे के प्रतीक हैं।

6 फरवरी के बाद फासीवाद एक अस्पष्ट और विजातीय आदर्श नही रह गया था अब फ्रास के वामपक्ष का ध्यान फ्रास पर केंद्रित हुआ। समाजवादी और साम्यवादी कार्यकर्ताओ ने महसूस किया कि एकता के मिथक का पुनर्जागरण हो रहा है वह फ्रास के समाजवादी इतिहास म 1905 से पहले और 1920 के बाद एक प्रमुख तत्व रहा है। घटनाओ ने अब वामपथ को सयुक्त कर दिया। अगले दिन सी० जी० टी० के निमत्रण पर (उस समय समाजवादी श्रमसघो का सघ) सी० जी० टी० यू० (साम्यवादी श्रमसघो का सघ) तथा दो अन्य दलो के प्रतिनिधि प्रतिरोध कायक्रम पर विचार करने के लिए इकट्ठे हुए उनम इस बारे म

आम सहमति हो गई कि इस समय जन प्रदशनो और हडतालो की आवश्यकता है। उसके बाद इस प्रकार के अनेक आयोजन हुए। 1928 के बाद समाजवादियो और साम्यवादियो के बीच यह पहली सयुक्त कायवाही थी। फ्रासीसी श्रमिको और बुद्धिवादियो ने नेताओ की उदासीनता की अवहेलना करके फासीवाद का सामना करने के लिए सयुक्त अभिकरणो की स्थापना शुरू कर दी। इन अभिकरणो को लीग, पहरी समिति, कार्टेल आदि नामो स सबोधित किया गया।[15]

थोरेज की एक और मास्को यात्रा के बाद प्रावदा ने एक महत्वपूण निबध प्रकाशित किया जिसका पी० सी० एफ० के पत्र ल' ह्यूमेनाइट मे 31 मई को पुनर्मुद्रण किया गया। उसम कुछ शर्तो के साथ फासीवाद विरोधी सयुक्त मोर्चे की स्थापना की आवश्यकता को दोहराया गया तथा यह भी कहा गया कि ये शर्तें फ्राम मे पूरी हो चुकी है वहा 'सामाजिक लोकतत्रवादियो ने अभी तक सत्ता प्राप्त नही की है' तथा 'जनसाधारण के लिए सघप का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना आवश्यक' हो गया है। इस बारे मे तनिक सदेह नही किया जा सकता कि इस निबध ने पी० सी० एफ० के नेताओ को एकता की दिशा मे नए सिरे से तथा अधिक शक्ति लगाकर प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। ल'ह्यूमेनाइट के जिस सस्करण म प्रावदा का यह निबध प्रकाशित हुआ उसी मे एस० एफ० आई० ओ० के सदस्यो और नेताओ के नाम एक अपील भी प्रकाशित की गई (यह पहला अवसर था जब समाजवादी कायकारिणी को सबोधित किया गया था) जिसमे उससे कहा गया था कि वह नजरबद जमन साम्यवादी नेता थालमान की ओर से सयुक्त कायवाही करे। 5 जून को प्रकाशित एक अन्य पत्र म यह प्रस्ताव दोहराया गया। 11 जून को थोरेज और ब्लम के बीच चर्चाएं हुइ तथा चार दिन बाद एस०एफ० आई० ओ० न इस शत पर सयुक्त प्रदशनो का सिद्धात स्वीकार कर लिया कि पारस्परिक आलोचना समाप्त कर दी जाएगी। जून म अपने दल के इवरी सम्मेलन मे थोरेज ने अनिच्छापूवक यह प्रस्ताव रखा कि साम्यवादियो को फासीवाद के विरुद्ध 'किसी भी कीमत पर' समाजवादी कायकर्ताओ के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसका अभिप्राय यह था कि समाजवादी दल के नेताओ के साथ चर्चाएं की जा सकती हैं।

यह परिवतन इतना अचानक हुआ कि उससे यह बात तुरत समझ म आ जाती है कि एस० एफ० आई० ओ० को ऐसा क्यो लगा कि एकता का प्रस्ताव एक नई चाल है तथा इस बात का प्रमाण है कि साम्यवादी अपनी शर्तों पर ही एकता चाहते हैं। इसके बावजूद दोनो दलो मे समझौता हुआ। इसका कारण यह था कि सघ के स्तर पर अनेक एकता समझौते हो चुके थे जिन्हान ब्लम और फौरे

दोनो पर समझौते के लिए दबाव डाला। साम्यवादी ही नही समाजवादी नेता और कायकर्ता भी यही चाहते थे। जुलाई 16 को सयुक्त कायवाही समझौते का एक प्रारूप तैयार हो गया। पाल फौरे जा वैप्तिस्ते लेवास तथा अन्य एकता विरोधी नेता अब भी हिचक रहे थे, उनके मन मे यह भय था कि कहीं मास्को द्वारा निर्देशित आदोलन न शुरू हो जाए, लेकिन उनके समान समझौता स्वीकार करने के सिवाय अन्य कोई माग नही रह गया था। पिछली 25 फरवरी को ब्लम ने 'ल पापुनेयर' नामक पत्र मे यह सकेत द दिया था कि एम० एफ० आई० ओ० का अतिम निश्चय क्या होगा। उसने यह बात भी कही कि जनता समाजवादियो द्वारा सयुक्त मोर्चे मे शामिल होने से इकारी को नही समझ पाएगी। एस० एफ० आई० ओ० अपने इस विश्वास पर कभी काबू नही पा सके कि साम्यवादियो के अचानक सौम्य हो जान का कारण सोवियत वदेशिक नीति की परिवर्तित मार्गें है विशेषत बढती हुई फ्रास रूस मैत्री। समझौत के लिए अधीर सदस्यो ने जब यह देखा कि नेताओ के मन म हिचक है त ग वे आश्वासनो पर वल द रहे है तो उनकी यह धारणा पुष्ट हो गई कि श्रमिकवग की एकता की स्थापना का अभि क्रम पी० सी० एफ० के हाथो मे चला गया है और वह वास्तव म वामपक्ष का हिमायती' है। 27 जुलाई को सयुक्त कायवाही समझौत पर हस्ताक्षर हो गए। यह समझौता प्रतिरक्षात्मक था, उसमे निर्वाचनो के समय सयुक्त मोर्चे की व्यवस्था नही थी किंतु आगामी स्थानीय चुनावो मे जब लोगो न यह देखा कि प्रत्येक दल ने दूसरे के सशक्त उम्मीदवार के मुकाबले मे अपने उम्मीदवार का वैठा लिया है तो उनके मन मे इस बारे म शका नही रही कि निर्वाचनो के लिए सयुक्त मोर्चे का निर्माण भी होने वाला ही है।

अतर्राष्ट्रीय स्तर पर एल० एस० आई० ने एस० एफ० आई० ओ० का यह निवे दन ठुकरा दिया कि अन्य समाजवादी सगठनो को भी इसी प्रकार सयुक्त कायवाही करनी चाहिए। उसके अध्यक्ष वाडरवेल्ड से लेकर उसके सबसे वडे प्रतिनिधि मडल अथात ब्रिटिश श्रम दल तक उसका बहुमत फ्रासीसी समाजवाद की अपेक्षा कही अधिक दक्षिणपथी था। वह अपनी महत्वपूण फ्रासीसी शाखा की साम्य वादियो के साथ गठबधन की निंदा करने के लिए अनिच्छुक था अत उसने फ्रासीसी लोकतत्र को फासीवादी खतरे से बचाने के लिए एस० एफ० आई० ओ० को साम्यवादियो के साथ सयुक्त मोर्चा बनाने की छूट दे दी।

इसके विपरीत 1935 की गमिया म सातवें कामिटन सम्मेलन ने, जो इस समय तक सयुक्त मोर्चा निर्वाचनो के लिए जनता मोर्चे का रूप ग्रहण कर चुका था, फ्रासीसी 'सवहारा को बधाई दी तथा उसके प्रतिनिधिमडल' का अभिनदन

किया। नए सचिव दिमित्रोव ने कहा कि फ्रास के श्रमिको ने अतर्राष्ट्रीय सवहारा के सामने फासीवाद से लडने के साधनो का उदाहरण पश किया है। एल० एस० आई० के विपरीत कामिटन ने यह सिफारिश की कि कुछ परिस्थितियो म साम्यवादी दल ऐमी सयुक्त मोर्चा सरकारो म शामिल हो सकने है जो फासीवाद विराधी हा और जिनके पीछे सशक्त जन आदोलनो का समथन हा। दिमित्रोव ने कहा कि साम्यवाद ने नई व्यूह रचना का बोध' प्राप्त कर लिया है। वह वस्तुत अपने विकास क 'चौथे चरण' म प्रवश कर गया है, वग सघष का स्थान अब वग सहयोग ने ले लिया है।

यह कहना पर्याप्त होगा कि मोर्चे का चुनाव, सधि तक विस्ता र साम्यवादी अभिक्रम और समाजवादी व्यवहार के कारण ही सभव हो सका। पहले मध्य वर्गों को समझौते के अतगत शामिल करने के लिए उसका विस्तार किया गया। 30 जून के 'ल'ह्यूमेनाइट' म प्रकाशित अपने लेख मे थोरेज न उग्रवादियो को सबसे बडे दल' के रूप म मायता दी तथा यह स्वीकार किया कि फ्रास के राजनीतिक जीवन पर उमका भारी प्रभाव है। एडुअड देलेदिए के नतत्व म दल के एक गुट ने एडुअड हैरियट के मागदशन मे सगठित अधिक रूढिवादी तत्वो की आपत्तियो की अवहेलना कर दी तथा साम्यवादी दल की अपील का अनुगमन किया। इसके बाद अनेक सीमावर्ती गुट भी सयुक्त मोर्चे मे शामिल हो गए। 1936 के चुनावो के लिए समय रहते अनक कठिनाइयो का निवारण कर लिया गया, जैसे साम्यवादियो और उग्रवादियो ने समाजवादियो की अधिकाधिक राष्ट्रीयकरण की माग पर नियत्रण लगा दिया, दूसरी ओर साम्यवादिया की अति ससदीय कायवाही की माग को उग्रवादियो और समाजवादिया ने दबा दिया।

तीन दला के पारस्परिक सहयोग के फलस्वरूप जनता मोर्चा विजयी हो गया। नए चेबर आफ डेपुटीज मे प्रमुख दल का स्थान उग्रवादियो के बजाय समाजवादिया ने ले लिया। साम्यवादिया ने 70 स्थान प्राप्त किए तथा उनके मतो की सख्या 6 8 प्रतिशत से बढकर लगभग दोगुनी अर्थात् 12 5 प्रतिशत हो गई। दक्षिणपथी दलो को 1932 मे प्राप्त मतो म केवल 1 5 प्रतिशत का ही घाटा उठाना पडा अर्थात कुल डाले गए मतो मे उनका प्रतिशत 37 4 से घटकर 35 9 रह गया। निर्वाचन परिणामा से यह बात बहुत खूबी के साथ सामने आई कि फ्रास की राजनीति मे निर्वाचन मैत्री कितनी उपादेय है विशेषत वामपक्ष के लिए उसकी अपरिहायता सामने आ गई।

समाजवादी साम्यवादी सयुक्त कायवाही की स्थापना का यह विवरण इस बात

का सकेत देता है कि यद्यपि इससे सोवियत नीतियो का बढावा मिलता था और इसके लिए अतत सोवियत सहमति अनिवार्य थी तथापि तथ्यत एकता की स्थापना कामिटन आदेश से स्वतत्र रहकर हो रही थी तथा कामिटन की स्वीकृति उसे बाद मे मिली। सोवियत भूमिका निषेधाधिकार के प्रयोग की थी। तृतीय इटरनेशनल या तो वामपक्ष की एकता की प्रवत्ति को भग कर सकती थी अथवा उसकी पुष्टि कर सकती थी, उसने दूसरा माग चुना।

सयुक्त मोर्चे के ससत्सदस्यो की सख्या 146 थी जिससे उसे बहुलता प्राप्त हो गई और लिआन ब्लम ने प्रधानमत्री पद सभाल लिया। दल के अध्यक्ष के नाते तीसरे दशक के आरभ से ही ब्लम ने समाज का रूपातरण किए बिना ही पूजीवादी ढाचे के भीतर समाजवादियो द्वारा सत्ता के प्रयोग, तथा क्राति द्वारा सत्ता पर विजय के बीच भेद किया था। साम्यवादियो ने वह स्थिति अपना ली जो एक लबे समय तक समाजवादियो ने अपना रखी थी और मत्रिमडल मे शामिल होने से इकार कर दिया। इतना ही नही उन्होने अपनी काय स्वतत्रता भी बनाए रखी।

सरकार का निमाण होते ही राष्ट्र का सबसे बडा हडताल आदोलन फूट पडा जिसमे बीस लाख श्रमिको ने भाग लिया। फ्रास के इतिहास मे श्रमिको ने पहली बार कारखानो पर अधिकार कर लिया। इसका एक कारण तो यह था कि वे मालिको को तालाबदी का अवसर नही देना चाहते थे, दूसरा यह कि व अपने अस्तित्व को मजबूती से जताना चाहते थे। 1920 की इटली की हडतालो से ये हडताले भिन्न थी इनका प्रयोजन पूजीपतियो के स्वामित्व के अधिकार को अस्वीकार करना था। ब्लम ने कहा है कि अधिकाश हडताली अपने आपको कारखानो के सरक्षक और सहस्वामी' मानने लग थे। धरना बहुत खुशी खुशी दिया जा रहा था तथा श्रमिको म ऐसा उत्साह था जिसकी तुलना सभवत मई 1968 के छात्र श्रमिक विद्रोह के साथ की जा सकती है।

मालिको ने समझौता करने की तैयारी प्रकट की तथा सरकार से मध्यस्थता करने के लिए कहा। इसके परिणामस्वरूप मैटिगनन समझौत हुए जिन्होने फ्रास के श्रमिको को सामूहिक सौदेबाजी और उसम निहित श्रमसघो के अस्तित्व के अधिकार उद्योगवार व्यवस्थापको की नियुक्ति और सात से पद्रह प्रतिशत वेतन वृद्धि का आश्वासन दिया। इसे नया डील अथवा नया सौदा कहा जाता है। कालातर मे उन्हे कानून द्वारा सवेतन अवकाश और 40 घटे के सप्ताह के अधिकार भी दे दिए गए। इसके बावजूद कारखाना की घेरेबदी हटाने के लिए मजदूरो को फुसलाने म थोरेज को अपनी सारी शक्ति लगा देनी पडी, क्योकि कुछ लोग

दलो की स्थापना लगभग उन्नीसवी शताब्दी के अत मे हुई थी जिसके कारण उन्ह सवहारा वग के आदोलनो के राजनीतिक और सगठनात्मक पक्षो के बीच उस सघप की विभीषिका का सामना नही करना पडा था जिससे उनके पूववर्ती दलो को गुजरना पडा था। इस देरी का एक परिणाम यह भी हुआ कि उन्ह भली प्रकार स्थापित उदारवादी और रूढिवादी दला के साथ काम करना पडा। स्कडिनवियाई समाजवादियो के जिस लचीलेपन और यथाथवादी दृष्टिकोण की प्राय चर्चा होती है वह नाड प्रजाति के राष्ट्रीय चरित्र की अभिव्यक्ति होने के वजाय वस्तुत राजनीतिक विवशताओ का परिणाम था। उनका समाजवाद सद्धातिक होने के बजाय अधिकाधिक सामाजिक न्याय की इच्छा से प्रेरित था। वहा जो कुछ भी राष्ट्रीयकरण अथवा आय का पुनर्वितरण किया गया वह किसी सिद्धात को मूत रूप देने की इच्छा का परिणाम नही था वरन उसका प्रयोजन कायक्षमता म वद्धि करना था।

तीनो दल एक सरीखे न थे। डेनमाक का समाजवादी दल नार्वे के दल की अपेक्षा अधिक सुधारवादी था। नार्वे के समाजवादी दल ने कुछ समय तक साम्यवादी इटरनेशनल के साथ काफी समीपता से काय किया था तथा उसे उग्रतम समाज वादी दला म से एक माना जाता था। किंतु वे मध्य और पश्चिमी यूरोप के समाजवादी दलो से भिन्न थे, उनके पास मदी से लडन और कल्याणकारी राज्य की स्थापना के बारे मे निश्चित कायक्रम थे तथा वे उन कायक्रमो को मूत रूप देन के लिए कटिवद्ध थे। नार्वे के समाजवादी दल ने 1935 मे सत्ता ग्रहण करने पर एक विस्तत सावजनिक निर्माण कायक्रम शुरू किया तथा बेरोजगारी मे तजी से गिरावट आ गयी। उसने राष्टीय निवृत्ति लाभ याजना भी लागू की बेरोजगारी बीमे तथा कारखानो से सवधित कानूनो का विस्तार किया, तथा युद्ध होन से पहले वह एक नियोजित अथव्यवस्था की दिशा म तैयारी कर रहा था। डेनमाक के समाजवादी दल को देश के केंद्रीय बक, बीमा व्यवसाय, तथा एकाधिकारी स्तर के कुछ उद्योगो के राष्टीयकरण, तथा व्यापकतर सामाजिक विधिनिर्माण के कायक्रम पर वहुमत प्राप्त हुआ। लकिन दूसरो के लिए आदश स्वरूप तथा गैर समाजवादिया के लिए 'मध्यमाग' स्वीडन के सामाजिक लोकतत्र ने पश किया।

1889 म अपनी स्थापना के समय से ही सामाजिक लोकतत्रवादी दल न विस्तृत निर्वाचन आधार प्राप्त करन की कोशिश की। 1911 म ही उसने समाजवाद की परिभाषा करते हुए उसे मानवतावादी नीतिशास्त्र बताया तथा छोटे किसानो के स्वामित्व के सरक्षण का वचन दिया। उसने व्यापक वयस्क मताधिकार का समयन किया तथा उसे उसका सबस अधिक लाभ मिला। 1920 म स्वीडन के

और व्यक्तियो का प्रश्न अधिक बन गई। इसके अतिरिक्त वहा स्थानीय स्वशासन तथा फोक्रोरेलसेर (इस शब्द का अनुवाद सभव नही है, इसका सकेत उन सावजनिक आदोलनो की ओर है जिनका मूल चरित्र आर्थिक नहीं होता) की परपराए भी इस विकास मे सहायक रही। ये सगठन पिछली शताब्दी के अत म उदय हुए तथा उन्होने मताधिकार के विस्तार, शिक्षा, मद्यनिषेध तथा श्रमसघवाद सरीखे प्रयोजनो को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने स्वीडन के नागरिको को छोटे पैमाने की लोकतत्रीय सस्थाओ मे भाग लेने का अवसर देकर लोकतत्रीय राजनीति के विद्यालय की भूमिका अदा की। इनमे प्राप्त प्रशिक्षण के कारण ही स्वीडन के नागरिको न राजनीतिक मामलो म बहुत भारी सख्या म तथा उच्चतर स्तर पर भाग लिया और वे लक्ष्यो का सशोधित करने तथा समझौते करने के लिए तयार रह। एक सशक्त सहकारी आदोलन न राष्ट्रीयकरण म बढ़ोतरी की इच्छा को कम कर दिया तथा सामाजीकरण के स्थान पर कल्याणकारी विधियो के निमाण की प्रवृत्ति को बल पहुचाया। सामाजिक लोकतत्रवादियो की प्रेरणा का एक प्रमुख स्रोत सगठित श्रम के साथ उनका घनिष्ठ गठबधन था तथापि ब्रिटिश श्रम दल के विपरीत स्वीडन का समाजवादी दल श्रमिको की तात्कालिक मागो से ऊपर उठ गया और उसन मदी का सामना सफलतापूवक किया।

दल के रूढिवादी पूववर्ती पदाधिकारी इसम विफल हो गए थे। 1932 म बेरोजगारी 25 प्रतिशत तक जा पहुची थी। समाजवादियो न अन्य देशो मे अपस्फीति को स्वीकार कर लिया था लेकिन मजदूरी और बेरोजगारी भत्ता के मामल म उसे लागू करने का विरोध किया। समाजवादी इटरनेशनल श्रमिक मालिक सघष की दृष्टि से चितन करता रहा, उसन सरकारी नीति की दृष्टि से सोचा ही नही। इसी कारण उसने यह माग कि की उपभोक्ता की बढती हुई क्रयशक्ति की समूची लागत मालिको को उठानी चाहिए। इसके विपरीत स्वीडन के समाजवादी नेताओ ने कहा कि मदी के दौरान निजी व्यय की कटौती की क्षतिपूर्ति क लिए सावजनिक निवेश म वृद्धि की जानी चाहिए।

इस कायक्रम को क्रियान्वित करने वाले मत्रिमडल म प्रतिभाशाली लोग थे। इनम प्रमुख थे प्रधानमत्री पर एल्बिन हनसन विदेशमत्री रिकाड सडलर (जिसने माक्स के ग्रथो का अनुवाद किया था), तथा वित्तमत्री अर्न्स्ट विगफस। सरकार के साथ घनिष्ठतापूवक सबद्ध स्वीडन के आर्थिक विज्ञान अध्ययन केंद्र (स्वीडिश स्कूल आफ इकानामिक साइस) ने इस मत्रिमडल को सहारा दिया। केंद्र के निर्देशक गुन्नार मिडल और एरिक लिडल थे।

उपभोग और उत्पादन को बल पहुचाने के लिए सार्वजनिक खर्चों मे वृद्धि की गई। धन का उपयोग केवल राहत कार्यों के लिए नही वरन कार्य परियोजनाओ के लिए भी किया गया। यह धन कराधान के द्वारा प्राप्त नहीं किया गया क्योंकि उससे तो क्रयशक्ति का निर्माण होने के बजाय हस्तातरण मात्र होता, अत उसके लिए ऋण लिए गए। यह जानबूझकर अपनाई गई घाटे की वित्तीय व्यवस्था की दिशा मे प्रथम महान प्रयोग था। विशेषत मिडल ने इस धारणा का खडन किया कि सतुलित बजट ही सही और ठोस वित्तीय नीति है। उन्होने कहा कि राज्य को व्यावसायिक वातावरण को महज प्रतिबिंबित करने के बजाय उसपर प्रभाव डालना चाहिए। ऋणो की अदायगी अधिक समृद्ध काल म की जानी थी जब करो से प्राप्त राजस्व की मात्रा बढ जाने की आशा थी। दल को इससे मदद मिली राष्ट्र न 1931 म स्वणमान का परित्याग कर दिया था। स्वणमान के बधन से मुक्त स्वतत्र मुद्रा आर्थिक पुनरुत्थान के लिए अनुकूल परिस्थितियो के निर्माण म कारगर सिद्ध होती है।

सरकार अपना कायक्रम क्रियान्वित करने के लिए कटिबद्ध थी। समाजवादी दल की विजय के फलस्वरूप देश के प्रमुख बैंको ने ब्याज की दरें बढाकर नई अर्थ-व्यवस्था के प्रति वैमनस्य का प्रदशन किया। बडे पमाने पर ऋण लेने की योजनाए तत्काल खटाई म पड गइ। तथापि सरकार झुकी नही, उसने दबाव डाला और बैंको को आत्मसमपण के लिए विवश कर दिया।

1933 के उत्तराध म अथव्यवस्था मे सुधार के लक्षण प्रकट होने लगे। उस वप माच म बेरोजगारी 1,87,000 तक जा पहुची थी (बेरोजगारी का उस वप का औसत 1,64,000 ही रहा)। 1934 म यह सख्या घटकर 1,15 000 रह गई, 1937 म केवल 18 000 और 1938 म स्वीडन बेरोजगारी के अभिशाप से लग भग मुक्त हो गया। इसके अतिरिक्त ऋणो की अदायगी शुरू हो गई तथा सामाजिक सेवाओ का एक व्यापक कायक्रम क्रियान्वित किया जाने लगा। इसमे मातृत्व और शिशु भत्ते, सवेतन अवकाश, राज्य कमचारियो के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना मे सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार, तथा वृद्धावस्था निवृत्ति वेतन सुधार आदि का समावेश किया गया था। 1936 म समाजवादियो को ससद के 230 म स 112 स्थान प्राप्त हुए और उसने पुन सरकार बना ली। इस बार उसन बहुमत प्राप्त करन के लिए साम्यवादी दल के साथ गठबधन करन के बजाय कृषक दल के साथ नाता जोडा। उसने वैदेशिक मामलो मे अपनी स्वतत्रता बनाए रखने और एक स्वतत्र नीति का अनुसरण करने की दृष्टि से ऐसा किया। स्कैंडिनेवियाई समाजवादियो ने आम तौर पर और स्वीडन के समाजवादियो ने

विशेष तौर पर आर्थिक संकट के दौरान राज्य की भूमिका के बारे में एक नई धारणा की प्रस्थापना की तथा कल्याणकारी विधि निर्माण के क्षेत्र में अगुवाई की। इसी कारण उन्हें अहस्तक्षेपनीति वाले पूंजीवाद और मार्क्सवादी लेनिनवादी समूहवाद के बीच मध्यमार्ग की खोज के लिए व्यापक प्रतिष्ठा मिली।

समाजवाद बनाम फासीवाद

समाजवादी इंटरनेशनल और विदेश नीति

नाजियों के सत्तारोहण के बाद जर्मनी द्वारा वर्साय की संधि के खुलेआम और बार बार उल्लंघन के कारण फासीवाद का जब और अधिक समय तक किसी एक देश का आंतरिक मामला नहीं माना जा सकता था। अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद ने उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना स्वधर्म समझा। यद्यपि एल०एस०आई० के विधान में यह कहा गया कि समस्त अंतर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर उसके निश्चय उसके सभी सदस्यों पर बंधनकारी होंगे तथापि यह बात किसी के दिमाग में नहीं आई थी कि निश्चयों को लागू करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था की जानी चाहिए। उसके सदस्य दलों से यह अपेक्षा की गई थी कि वे स्वेच्छा से अपनी स्वतंत्रता पर सीमाएं लगा लेंगे। परिणामतः समाजवादी इंटरनेशनल जानकारी के विनिमय और परस्पर स्वीकार्य अनाक्रमणशील नीतियों के निर्माण का अभिकरण बन गया।

अंतर्राष्ट्रीय मामलों के बारे में प्रचलित दृष्टिकोण का बोध जर्मन समाजवादी आटो बर्ल्स के इस कथन से होता है "जब फिर कभी युद्ध नहीं होगा।' समाजवादियों ने राष्ट्रसंघ का समर्थन निशस्त्रीकरण और अंतर्राष्ट्रीय पंच फैसले के *उपकरण के रूप में किया। साथ ही उन्होंने उसकी कमियों की ओर भी संकेत किया* तथा उसकी सत्ता में बढ़ोतरी की मांग की। एल० एस० आई० की दृष्टि में युद्ध का मुख्य कारण पूंजीवाद था। वह वैदेशिक तथा घरेलू मामलों में क्रमिकतावादी दृष्टिकोण और शांति बनाए रखने के प्रति प्रतिबद्ध था। परिणामतः, उसने एक ओर तो राष्ट्रसंघ को पूंजीवादी सरकार के हाथ की कठपुतली बताया और दूसरी ओर उसने उसके साथ सहयोग करने की कोशिश की। इस प्रकार वैदेशिक मामलों के बारे में समाजवादी नीति की दुर्बलता इंटरनेशनल की संरचनात्मक कमियों उसके सदस्य दलों के नीति संबंधी मतभेदों सदस्य दलों की अपनी अपनी सरकार की विदेशनीति का समर्थन करने की प्रवृत्ति फासीवाद के बारे में बुनियादी गलतफहमी, तथा प्रथम विश्वयुद्ध के अनुभव द्वारा परिपुष्ट स्थाई शांतिवादी और सैन्यकरण विरोधी परंपरा में निहित थी। यह शांतिवादी और सैन्यकरण विरोधी परंपरा एक सक्रिय और सुबद्ध समाजवादी नीति के निर्माण में महानतम बाधा रही।

हिटलर द्वारा सत्ता ग्रहण करने से पहले एल० एस० आई० की दिलचस्पी केवल इस बात मे थी कि अतर्राष्ट्रीय निशस्त्रीकरण और पच फैसले के द्वारा शाति का सरक्षण किया जाए। 1928 मे उसके ब्रूसेल्स सम्मेलन मे जमन रीशस्टाग के अध्यक्ष पाल लोब और पाल फौरे सरीखे प्रतिनिधियो ने राइनलैंड को जल्दी मुक्त कराने की माग की जिससे जमनी को निशस्त्रीकरण के प्रति वफादार रखा जा सके तथा शाति कायम रखी जा सके। एस०पी०डी० की सहनशीलता नीति के बारे म विभाजित प्रतिक्रियाओ तथा जमनी के गणराज्य के सामने उठ रही चुनौतियो को समाप्त करने के लिए इटरनेशनल द्वारा ससार के राष्ट्रो से जमनी को ऋण देने की प्राथना के बारे मे पीछे चर्चा की जा चुकी है।

अगस्त 1933 मे समाजवादी इटरनेशनल के पेरिस मे आयोजित विशेष अधिवेशन म स्पाक के नेतत्व मे वामपथियो ने यह आरोप लगाया कि जमन सामाजिक लोकतत्र का विनाश सुधारवाद की कमजोरियो के कारण हुआ। उन्होने कहा कि गैर समाजवादी समूहो के साथ सहयोग के स्थान पर 'सवहारा एकता' और 'क्रातिकारी वर्गों के अधिनायकवाद' की स्थापना को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। लेकिन इन विचारो मे सबधित प्रस्ताव पास नही हो सका जिसम साम्य वादी इटरनेशनल के साथ बातचीत का आग्रह किया था। बोल्शेविक विरोधी भावना बहुत उग्र थी। निशस्त्रीकरण और पच फैसले की परपरागत मार्ग स्वीकार कर ली गइ। सम्मेलन ने यह स्वीकार किया कि जमनी को समान व्यवहार मिलना चाहिए लेकिन उसने समान व्यवहार की प्राप्ति के लिए जमनी द्वारा शस्त्रीकरण के प्रयास का विरोध किया। इस सिफारिश के द्वारा वे परोक्षत ब्रिटेन और फ्रास से निशस्त्रीकरण की माग कर रहे थे।

शाति के प्रति समाजवाद की अडिग आस्था सदिग्ध न थी। लिआन ब्लम ने कहा कि फासीवादी शाति को स्थाई बनाने का जो भी अवसर प्रदान करे हम उसका पूरा अवसर करना चाहिए।[17] इस प्रकार समाजवाद को बिना शत शाति-वाद की स्थिति से शाति बनाए रखने की कठिन स्थिति म धकेल दिया गया। हिटलर जैसे जैसे अपने शासन को सुदढ बनाता चला गया वैसे वसे समाजवादी इटरनेशनल म नाजीवाद की चुनौती का सामना करने की रीति-नीति के बारे मे मतभेद बढता गया। एस० पी० डी० के तिरोहित हो जाने के बाद ब्रिटन का श्रमदल और एस० एफ० आई० ओ० दो सबसे अधिक शक्तिशाली दल रह गए। वे अपन शातिवाद के लिए बदनाम थे। एल० एस० आई० के सम्मेलनो मे भाग लेने वाले अनेक प्रतिनिधियो का चिंतन अतर्राष्ट्रीयतावादी था तथा वे प्राय अपन दल की नीतियो का विरोध करने लगत थे। य प्रतिनिधि ऐसे तटस्थ दशो के

प्रतिनिधियो के साथ मिलकर शक्तिशाली नाजी विरोधी उपायो के इस्तमाल के पक्ष मे मत देते थे जिन्हे यह मालूम था कि उनके देश को युद्ध म भाग नही लेना पडेगा। इस प्रकार इटनेशनल म ब्रिटेन और फ्रास के समाजवादी दलो की अपेक्षा जमन समाजवादी दल की अधिक आलोचना होती थी। एल०एस०आई० ने जमनी को और अधिक छूट देने का विरोध किया। ऐसी मान्यता बन गई कि छूट से नई मागें पैदा हो जाएगी। साथ ही अधिकाश ब्रिटिश और फ्रासीसी समाजवादियो ने अपनी अपनी सरकारो द्वारा अपने सनिक बल को और अधिक मजबूत बनाने की कोशिशो का विरोध किया जिसके कारण जमनी द्वारा छूट की मागो को अस्वीकार करने की अपनी क्षमता को सीमित कर लिया।

हिटलर द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद ब्रिटेन और फ्रास के समाजवादी दलो ने उसपर नियत्रण लगाने के अपनी सरकारो के विरल प्रयत्नो का विरोध किया। ब्लम ने शस्त्रीकरण पर किए जाने वाले व्यय मे वद्धि तथा अपने देश के द्विवर्षीय सैनिक सेवा मे वृद्धि का विरोध किया। पाल फौरे ने उसका प्रबल समथन किया। उनका व्यवहार प्रथम विश्वयुद्ध के स्रोतो से सीखे गए पाठो और वर्साय सधि के प्रति उनके विहित रोष से सचालित होता रहा। निश्चय ही समाजवादियो का निश्चय सुगम नही था। नाजियो के अत्याचारो की कहानिया फैलती जा रही थी तथा अनेक समाजवादी अनिश्चय और अपनी स्थिति के अतर्विरोध के कारण टूट रहे थे।[18] इसके बावजूद 1935 म एल०एस०आई० ने ब्लम द्वारा तयार किया गया एक प्रस्ताव स्वीकार किया जिसम आम निशस्त्रीकरण की माग की गई थी (इसम जमनी का भाग लेना अनिवाय नहीं माना गया था)। यह आशा प्रकट की गई कि नाजी विश्व लोकमत के दबाव म उस निश्चय पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश हो जाएगे। इथोपिया के सकट के समय फ्रास के समाजवादियो को ब्रिटेन के युद्धलिप्सुओ का भय सताने लगा और वे इस बात के लिए हर्गिज तैयार नही थे कि फ्रास या राष्ट्रसघ का ब्रिटेन की साम्राज्यवादी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति का साधन बनाया जाए। अत उन्होने इटली के विरुद्ध आर्थिक नाकाबदी का समथन किया किंतु सैनिक नाकाबदी का विरोध किया। श्रमदल ने ब्रिटिश सरकार द्वारा किसी भी कायवाही के प्रति अपनाए गए उदासीनता के दष्टिकोण का समथन किया तथा अपनी इस इच्छा पर फिर से बल दिया कि वर्साय सधि को सशोधित किया जाए। इस प्रकार समाजवादी इटरनेशनल की प्रतिक्रिया फिर से अतर्राष्ट्रीय समझौते द्वारा निशस्त्रीकरण के आवाहन के रूप म प्रकट हुई। अगले साल एस० एफ० आई० ओ० ने जमनी द्वारा राइनलैंड पर फिर स कब्जा करने के विरुद्ध सैनिक कायवाही को अस्वीकार कर दिया।

श्रमदल और विदेश नीति एक स्थिति का उदय

निरोधात्मक कार्यवाही के प्रति उदासीनता के बावजूद जब ब्रिटेन के श्रमदल न यह देखा कि जमनी मे नाजी दल विजयी हो गया है तथा सुदूर पूव मे जापान आक्रामक नीति अपना रहा है तब उसने 1933 म वैदेशिक मामलो को अधिक महत्वपूण स्थान देना शुरू किया। शीघ्र ही दल के भीतर इस बारे मे मतभेद सामने आ गए कि स्थिति का सामना किन उपायो से किया जाए। उस समय दल का अध्यक्ष जाज लासबरी था, वह पूणतया शातिवादी था उसने आत्मरक्षा के लिए शस्त्रीकरण का विरोध किया तथा राष्ट्रसघ को अल्पविकसित राष्ट्रो के विरुद्ध मालदार देशो का समुदाय बताकर उसकी भत्सना की। दल के अय तत्व इतनी दूर तक तो नही गए, फिर भी वे इस भ्रम म जीते रहे कि निशशस्त्रीकरण और सुरक्षा समानायक शब्द है। इसके बावजूद श्रमसघीय नेता विशेषत अर्नेस्ट बेविन द्वारा प्रभावित और निर्देशित श्रमसघ काग्रेस की राष्ट्रीय परिषद ने सामूहिक सुरक्षा और आक्रमण के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध का खुला समथन किया। इतना ही नही उ होने साम्यवादियो के साथ मिलकर सयुक्त मोर्चा बनाने से इकार कर दिया। श्रमदलीय नेता नई नीति की दिशा मे माग टटोल रहे थे अतत उ होने प्रतिरक्षात्मक युद्ध के समथन की तयारी व्यक्त कर दी। इस बारे म साउथपोट सम्मेलन मे एक प्रस्ताव पास किया गया लेकिन उसकी भाषा बहुत अस्पष्ट थी। निश्चय ही दल के अधिकाश सदस्य शातिवादी थे। वे फ़ासीसियो के भी उतने ही विरोधी थे जितने नाजियो के तथा वे यह महसूस करत थे कि जमनी की निशस्त्रीकरण के मामले मे समानता के व्यवहार और आत्मनिणय की अधिक शक्ति की माग काफी सीमा तक यायसगत है।

1935 के तथाकथित शाति मतपत्र मे पूछा गया था कि क्या आक्रमणकारी को युद्ध द्वारा रोका जाना चाहिए ? उत्तर देने वाले ब्रिटिश नागरिको के 9 म से 7 ने इस प्रश्न का उत्तर हा मे दिया। इथोपिया (अबीसीनिया) पर इतालवी सेनाओ के आक्रमण के बाद होने वाली श्रमदलीय वार्षिक सम्मेलन म निश्चय किया गया कि राष्ट्रसघ के अधिकार पत्र म जिन अनिवाय उपयो की व्यवस्था की गई है' आक्रमणकारी के विरुद्ध उन सबका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसके बावजूद स्टफड क्रिप्स और शातिवादी जाज लासबरी न इस निश्चय के विरुद्ध आवाज उठाई। क्रिप्स ने बलपूवक कहा कि पूजीवादी सरकार जो भी युद्ध छेड़ती है वह अनिवायत साम्राज्यवादी युद्ध होता है।' लासबरी ने इस निश्चय के विरोध मे दल की अध्यक्षता का परित्याग कर दिया और उसके स्थान पर क्लीमेंट एटली दल का अध्यक्ष चुना गया। उस वष के चुनाव अभियान म

दोनों दलों ने युद्ध को छोड़कर अन्य प्रत्येक प्रकार की नाकेबंदी की माग की। इस चुनाव में श्रमदल ने लोकसभा मे पहले की अपेक्षा सौ स्थान अधिक प्राप्त किए।[19]

दल मे मतभेद बने रहे और वह शस्त्रों पर किए जाने वाले खर्च का विरोध करता रहा। उसकी राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभापति ह्यू ग डाल्टन और बड़े पैमाने पर पुनशस्त्रीकरण के हिमायती श्रमिक नेता अर्नेस्ट बेविन अपने प्रयासों से दल को ऐसी स्थिति मे ले गए जहा जाकर उसने सामूहिक सुरक्षा की व्यवस्था का समर्थन कर दिया। स्पेन के गृहसंघर्ष ने अपने विकास के चरण को पूरा कर लिया। 1936 में श्रमदल ने सिद्धांतत पुनशस्त्रीकरण का बचाव किया लेकिन उसने एक ऐसी सरकार के अंतर्गत शस्त्रीकरण ऋणों के पक्ष में मत देना जरूरी नहीं समझा जिसकी विदेश नीति पर उसे भरोसा न था। साम्राज्यवाद के बारे मे पूर्ववर्ती आशकाए सही निकली। विक्टर गोलाज द्वारा स्थापित लैफ्ट बुक क्लब ने श्रमदल पर इस बात के लिए दबाव डालना शुरू किया कि वह साम्यवादियो और आई० एल० पी० के साथ मिलकर संयुक्त मोर्चे का गठन करे। गोलाज फासीवाद विरोधी गठबंधन का प्रमुख हिमायती था। क्लब का प्रबंध जान स्ट्रैची और हेराल्ड लास्की के हाथो मे था। स्पेन के युद्ध ने मुद्दे को स्पष्ट कर दिया। उसने फासीवाद के समस्त विरोधियो को खुलकर उसका सामना करने के लिए आमंत्रित किया और उन्हे साथ मिलकर सोचने और संयुक्त रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

मगर संगठित श्रमसंघ और श्रमदल दोनों ही वामपक्षीय एकता के लिए उत्सुक न थे। जनवरी 1937 मे दल ने क्रिप्स की सोशलिस्ट लीग को अपने भीतर से निकाल दिया तथा जो लोग उसका समर्थन कर रहे थे उन्हे भी निकालने की धमकी दी। साम्यवादी दल भले ही छोटा और एकाकी था तथापि साम्यवादियो के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने के प्रस्ताव ने तीसरे दशक की स्मृतिया ताजी कर दी तथा दल इस निर्णय पर पहुच गया कि साम्यवादी दल चुनावो में व्यर्थ का बोझा बन जाएगा। यद्यपि उसने वैदेशिक स्तर पर फ्रांस अथवा संयुक्तराज्य अमरीका के साथ फासीवाद विरोधी गठबंधन करने से इंकार कर दिया और राष्ट्रीय स्तर पर साम्यवादियो तथा आई० एल० पी० के साथ संयुक्त मोर्चा भी नही बनाया तथापि उसने 1930 में पुनशस्त्रीकरण का समर्थन करने का निश्चय कर लिया। एक बार निश्चय कर लेने पर उसने एस० एफ० आई० ओ० की तरह ढुलमुल नीति नही अपनाई तथा चेकोस्लोवाकिया की प्रतिरक्षा का समर्थन सर्वसम्मति से किया। उसने नेवाई चेंबरलेन द्वारा किए गए म्यूनिख समझौते की छूटो को अस्वीकार कर दिया।

युद्ध छिड जाने के बाद आई० एल० पी० के बहुत नगण्य अल्पमत न ही समाजवादियों की ओर से पूजीवादी व्यवस्था के अतगत युद्ध प्रयासा के समथन का विरोध किया। 1939 के रूसी जमन सधि का समथन करके साम्यवादियो ने यत्किचित वामपक्षीय सहानुभूति भी गवा दी।

समाजवाद और द्वितीय विश्वयुद्ध का समारभ

इथोपिया मे राष्ट्रसघ की विफलता और राइनलैंड के पुनशस्त्रीकरण के बाद यूरोप के अनेक छोटे समाजवादी दला का विश्वास सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था पर से उठ गया हालाकि वे जबानी तौर पर उसका समथन करत रहे। हालैंड के समाजवादी पूण एकपक्षीय निशस्त्रीकरण चाहते थे। डेनमाक के समाजवादी और भी अधिक शातिवादी थे तथा उन्होने अपने देश की सशस्त्र सेनाओ को प्राय पूरी तरह विघटित कर दिया। बल्जियम के श्रमिक दल के अनेक सदस्यो के मन मे फ्रास के साथ दोस्ती के महत्व म सदेह होने लगा। लेकिन चेकोस्लोवाकिया और पोलैंड के समाजवादियो ने राष्ट्रीय प्रतिरक्षा को और अधिक मजबूत बनाने और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को सुदढ बनाने की सिफारिश की। फिर भी सबसे अधिक महत्व ब्रिटेन और फ्रास के समाजवादी दलो का था। ब्रिटेन का श्रम दल 1936 से सामूहिक सुरक्षा की व्यवस्था का समथन कर रहा था, किंतु फ्रासीसी समाजवादियो मे इस बारे मे मतभेद थे।

स्पन के गृहयुद्ध ने भी समाजवादी इटरनेशनल को अपना दृष्टिकोण बदलने की प्रेरणा दी। ब्रिटेन और फ्रास की सरकारा ने अहस्तक्षेपवादी नीति अपनाने का फैसला कर लिया था। इसके बावजूद जमनी और इटली ने विद्रोहियो को सहायता दी और इस तरह समाजवादियो के सामने एक अत्यत वास्तविक उलझन पैदा कर दी वे युद्ध का खतरा मोल लिए बिना ही गणतन्त्रवादियो की सहायता करना चाहत थे। एल० एस० आई० और आई० एफ० टी० यू० ने अपनी नीति के सशोधन का पहला सकेत अहस्तक्षेपवादी नीति के इस उल्लघन की भत्सना के द्वारा दिया। उन्होंन श्रम सगठनो से कहा कि वे स्पेन की सरकार के विरुद्ध की गई नाकेबदी को समाप्त कराने की दिशा मे काय करें। जुलाई 1937 म श्रम दल ने अहस्तक्षेपवादी नीति समाप्त करने की माग की। फ्रास म अधिकाश समाजवादी अपनी सरकार की नीति का समथन करत रह।

माच 1938 म जमनी की सेनाओ ने आस्ट्रिया पर अधिकार कर लिया। उसके थोडे समय बाद ही ट्रेड यूनियन फेडरेशन ने अपन सम्मेलन म घोषणा की कि इस घटना ने हिटलर के असली इरादो के बारे म रही सही गलतफहमी को भी

दूर कर दिया है। उन्होने फिर से यह माग की कि स्पेन की आर्थिक तथा सामरिक नाकाबदी समाप्त की जाए तथा चेकोस्लोवाकिया की स्वतन्त्रता के बारे मे प्रभाव शाली आश्वासन दिए जाए। जब 1938 के सकट के दौरान ब्रिटिश सरकार ने जर्मनी के सामने यह बात जाहिर कर दी कि यदि उसने चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण किया तो ब्रिटेन फ्रास की मदद करेगा, तब एल० एस० आई० की कार्यकारिणी समिति ने इस कदम की सराहना की। लेकिन गर्मियो मे स्थिति बिगड गई और युद्ध का खतरा बढ गया, इससे यूरोपीय समाजवादी क्षेत्रो मे चिंता की लहर दौड गई। श्रम दल क्षण भर के लिए तो सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समर्थन करने मे हिचका लेकिन फिर उसने म्यूनिख सधि को शर्मनाक विश्वास घात कहकर उसकी निंदा की। एस० एफ० आई० ओ० के भीतर पौल फौरे के गुट की निगाह 1914 की गर्मियो पर टिकी हुई थी अत उसने म्यूनिख सधि को युद्ध का विकल्प बताया। एस० एफ० आई० ओ० के वामपक्ष का प्रतिनिधित्व जो जायरोस्की कर रहा था उसने तुष्टीकरण की कठोर शब्दो मे निंदा की। ब्लम ने बीच की स्थिति अपनाई। उसके मन मे 1938 की मैत्री सधि से यह बात बैठ गई थी कि बल प्रयोग करने की तैयारी से ही शाति की रक्षा की जा सकती है, लेकिन वह दल की एकता बनाए रखने के लिए बेचैन था तथा वह म्यूनिख सधि से इतना चिंतित न था जितना कि इस बात से कि उस सधि पर हस्ताक्षर के समय चेकोस्लोवाकिया का प्रतिनिधि मौजूद नही था। अधिकाश फ्रासीसी नागरिकों की तरह अधिकाश समाजवादी ससत्सदस्या ने भी देलेदियर का समर्थन किया। प्रतिनिधि सदन (चेंबर आफ डेपुटीज) मे म्यूनिख सधि के विरुद्ध मत देने वालो मे साम्यवादियो के अलावा एक समाजवादी और एक रुढिवादी सदस्य था।

एल० एस० आई० की कार्यकारिणी ने म्यूनिख सधि की निंदा की, लेकिन उसे अपना प्रतिरोध इस प्रकार व्यक्त करना पडा जिससे कि वह म्यूनिख विरोधी ब्रिटिश तथा म्यूनिख समर्थक फ्रासीसी समाजवादियो को मजूर हो सके और बेल्जियम स्विटजरलैंड तथा स्कैंडिनेविया के तटस्थतावादी समाजवादियो को ठेस न लगे। फलत, उसने सधि के स्वरूप की ही आलोचना की, तुष्टीकरण के सार की नही। इसपर चेकोस्लोवाकिया के समाजवादियो ने समाजवादी इटरनेशनल की सदस्यता का परित्याग कर दिया। हगरी और पोलैंड के समाज वादियो ने चेकोस्लोवाकिया से छीन गए क्षेत्रो का स्वागत किया। समस्त व्यावहारिक प्रयोजनो की दृष्टि से समाजवादी इटरनेशनल का अत हो गया। शाति के प्रति उसकी अडिग प्रतिबद्धता ने उसे समाप्त कर दिया तथापि उसने प्रमुख लोकतत्रीय देशो पश्चिमी यूरोप के और जनता के विचारो को प्रतिबिंबित किया। फ्रास मे तुष्टीकरण की नीति तभी समाप्त हुई जब यह बात स्पष्ट हो गई

कि इटली किसी भी हालत म उसका मित्र नही बन सकता। जायरास्की और ब्लम ने फौरे को हरा दिया लेकिन तबतक इतनी देर हो चुकी थी कि इसमे स्पेन के गणतत्रवादियो को सहायता नही मिल सकी। अत म भग्नहृदय ब्लम ने देखा कि उसके दल के बहुसख्यक ससत्सदस्यो ने जून 1940 म माशल पेता को शासन की समूची सत्ता सौंप दी। ब्रिटिश लोकसभा म श्रम दल के विरोध के कारण चेंबर लेन को प्रधानमत्री पद से हटना पडा लेकिन इस विजय से सबसे अधिक लाभ चर्चिल को मिला।

प्रतिरोध के दौरान वामपक्ष को अपने उद्धार के लिए बहुत कठोर परिश्रम करना पडा। यद्यपि विभिन्न प्रतिरोध आदोलनो के बीच विशेषत राजनीतिक सघटनो की दृष्टि से समानताओ और विभिन्नताओ का बोध केवल तुलनात्मक इतिहास से ही प्राप्त हो सकता है तथापि यह कहा जा सकता है कि उनम समानताए दष्टि गोचर होती हैं। उन्होने जनता के भीतर बडे पैमाने पर हलचल पैदा की तथा प्रतिरोध के दौरान जो आदश विकसित हुए उन्होने समाजवादी चितन को एक बडा स्थान प्रदान किया। उन्होने राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण के लिए योजनाओ का निर्माण किया जिनमे युद्धोत्तर काल के आरभ मे राजनीति को समाजवादी रग प्राप्त हुआ। समाजवादियो ने वामपक्षीय सगठन को गरिमा प्रदान की (उधर दक्षिणपथियो पर यह आरोप था कि उन्होने फासीवादी शक्तियो का साथ दिया अथवा वे उनसे सबद्ध हो गए) जिसके कारण उन्हें 1945 के बाद सत्ता ग्रहण करने का अवसर दिया गया।

* *

समकालीन समाजवाद

* *

द्वितीय विश्वयुद्ध से पहले यूरोप के समाजवादी अपने आपको मार्क्सवादी परपरा के सच्चे उत्तराधिकारी मानते थे, साम्यवादियो को नही। 1970 तक आते आते उन्होने अपन कायक्रम के निर्धारणवादी पक्षो को गौण बना लिया था तथा मार्क्स-वादी चिंतन म निहित पदार्थवादी मूल्यो के बजाय नैतिक और मानवीय मूल्यो को प्रमुखता प्रदान कर दी थी। उन्होने समाजवाद की जडें नैतिक, दार्शनिक और धार्मिक स्रोतो मे खोजी और पाईं। यद्यपि लोकतत्र पूजीवाद और साम्यवाद दोनो के प्रतिकूल है तथापि प्राय समाजवादियो को ऐसा लगा कि लोकतत्र के लिए बडा खतरा सोवियत सघ की ओर से है। उस खतर का टालने के लिए उन्होने मध्यवर्गीय लोकतत्रीय दलो के साथ सहयोग करने का सकल्प कर लिया। किंतु समाजवादियो द्वारा प्रदर्शित नए सशोधनवाद ने (पुरान सशोधनवाद की तरह) नए तथा और उग्रतर वामपक्ष को जन्म दिया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरात समाजवाद की कहानी सही मायने मे युद्ध के दौरान उभरे प्रतिरोध आदोलनो से शुरू होती है। उस समय जो नियोजन हुआ उसने राष्ट्रीय मुक्ति की भूमिका तैयार की। उसमे युद्धोत्तर समाज के एक नए स्वरूप की कल्पना भी निहित थी तथा उस समय जो विचार बने वे समाजवादी लक्ष्यो से बहुत कुछ मिलत जुलत थे। यहा भी विविध प्रतिरोध आदोलनो और उनके सैद्धांतिक आधारो के तुलनात्मक अध्ययन से ही यह बात मालूम हो सकती है कि वे अपने सिद्धातो के प्रति किस मात्रा म प्रतिबद्ध थे। फ्रास मे सरकारी स्तर पर नाजी विजेताओ के साथ सहयोग किया जा रहा था अत वहा प्रतिरोध आदोलनो ने अनिवायत गृहयुद्ध का रूप ले लिया जिसम वामपक्ष विशी सरकार के विरुद्ध डटा हुआ था। जमनी म समाजवादी शक्तियां तो कभी की धराशायी हो चुकी थी अत वहा जो कुछ भी प्रतिरोध शेष रह गया था वह रूढिवादी प्रकृति का था। लकिन रूढिवाद एक क्रातिकारी नाजी आदोलन को रोकने म सवथा असमथ सिद्ध हुआ।

1941 की गर्मियो म सोवियत सघ पर जमनी के आक्रमण के बाद साम्यवादी भी प्रतिरोध आदोलन मे शामिल हो गए। उन्ह भूमिगत रहकर काम करन का अधिक अनुभव था, तथा वे अधिक अनुशासित थे अत उन्होने सहज ही एक प्रमुख भूमिका सभाल ली। इसके बावजूद समाजवादी लक्ष्य साम्यवादिया द्वारा आरोपित न थे वरन जनता द्वारा बडे पैमाने पर स्वीकार किए जा चुके थे। उस समय तक्नीकी और व्यूहरचना सबधी प्रश्न सबसे अधिक महत्वपूण हो गए। साम्यवादिया और समाजवादियो के बीच की पुरानी फूट और क्राति बनाम सुधारवाद के विवाद का फासीवादी नियत्रित देशो के भूमिगत सगठना के लिए कोई विशेष महत्व नही रह गया था। हा, यह सही है कि वे समय समय पर विरोधी विचार प्रकट करते थे। 1935 से जमनी के साम्यवादी दल के अध्यक्ष वाल्टर उल्ब्रिख्ट ने मास्को से सोशल डिमाक्रेट्स की मित्र देशो के प्रति अनुकूलता की नीति का विरोध किया। उसने जमनी और सोवियत सघ के बीच सधि की हिमायत करत हुए यह सकेत दिया कि युद्ध के बाद कुछ कठिनाइया पैदा हो सकती है। इस सबके बावजूद अधिकाश समाजवादी और साम्यवादी लोकतत्रीय और मानवतावादी मूल्यो को सस्थागत रूप मे प्रतिष्ठित करन की दिशा म प्रयास करते रह।

समाजवाद सत्ता मे

1950 तक ऐसा लगता रहा कि समाजवाद ही युद्धोत्तर यूरोप की नियति है। 1945 म श्रमदल ने सत्ता प्राप्त की। फ्रास और इटली म समाजवादियो ने साम्यवादिया और ईसाई लोक्तत्रवादियो के साथ मिलकर त्रिदलीय सरकारो म भाग लिया तथा 1947 के बाद से साम्यवादियो के सहयोग के बिना ही सरकारे बनाइ और चलाइ। पश्चिमी जमनी मे समाजवादी ही मुख्य विरोधी पक्ष थे तथा स्केंडिनवियाई विधानमडलो मे समाजवादी दल प्रमुख बने रह। ऐसा लगता था कि पश्चिमी यूरोप समाजवाद के प्रति प्रतिबद्ध हो गया है। पूर्वी यूरोप म समाजवादियो और साम्यवादिया ने मिलकर जनवादी लोकतत्र का निर्माण किया और सत्ता प्राप्त की।

युद्ध के उपरात समाजवाद की सफलता के क्या कारण थे? वामपक्ष की प्रतिष्ठा उसके लिए सबसे अधिक सहायक तत्व सिद्ध हुई। यह प्रतिष्ठा उस एक लबे समय तक फासीवाद के विरुद्ध सघष करने और प्रतिरोध आदोलना मे बडे पैमाने पर भाग लेने क कारण प्राप्त हुई थी। दक्षिण पक्ष जनता की निगाह म गिर गया था। अधिकाश नाजी नियत्रित देशो मे नाजिया का साथ देन वाल लोग रूढिवादी व्यवसायी वग के थे। इससे यह धारणा पुष्ट हुई कि

फासीवाद अनिवायत समाजवाद के प्रति मध्य और उच्च वर्गों की प्रतिक्रिया का प्रतीक है। मुक्ति सघप म भाग लेन वाल लोगो ने यह सकल्प लिया था कि लोकतत्रीय पद्धति से निर्वाचित सरकारो पर सगठित व्यवसायी वग का प्रभाव कम कर दिया जाएगा। ब्रिटेन और फ्रास मे राष्ट्रीयकरण के कदम उठाए गए (ब्रिटेन म तो राष्ट्रीयकरण क प्रयास को रूढिवादी दल का समथन मिला और फ्रास म जनरल द गाल की सहमति इन्ह उल्लेखनीय अपवाद माना जा सकता है)। राष्ट्रीयकरण न समाजवादियो के नए समाजवादी चरित्र की पुष्टि की और यह सिद्ध किया कि सामाजिक परिवतन की आवश्यकता का व्यापक तौर पर स्वीकार किया जा रहा है। यह माना जान लगा था कि जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध न रूस म पूजीवाद को समाप्त कर दिया था उसी प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध भी समाजवाद की विजय म परिणत होगा।

1945-1951 श्रमदलीय सरकार

श्रमदलीय सरकार ने जो 'क्राति' सपन्न की उसकी शुरुआत 1940 म हो गई थी। चर्चिल के युद्धकालीन मत्रिमडल म श्रमदलीय मत्रियो को घरेलू मामला का नियत्रण सौंपा गया था, तथा क्लीमट एटली, आथर ग्रीनवुड, अर्नेस्ट बेविन, हवट मारीसन तथा स्टेफ्ड क्रिप्स सरीखे नेताओ ने समय की आवश्यकतावश तथा स्वेच्छा से दैनदिन ब्रिटिश जीवन म काफी मात्रा म हस्तक्षेप शुरू कर दिया था। युद्धोत्तर ब्रिटेन के लिए दल की याजना म विस्तत सामाजीकरण की कल्पना की गई थी। स्वतत्र समाज म पूण रोजगार के लिए बीवरिज योजना मे व्यापक सामाजिक सुरक्षा की माग की गई थी और उसका लक्ष्य जनसाधारण की दरिद्रता और बेराजगारी का उन्मूलन करना था। इस याजना का निर्माण उदारवादी दल क सदस्य बीवरिज ने किया था, यह अपने आपमे इस बात का प्रमाण है कि प्राय सभी ब्रिटिश नता बडे समाजी परिवतन (समूहीकरण नही) की आवश्यकता के बारे मे सहमत थे। श्रमदल सामाजिक बीमा योजना का विस्तार, न्यूनतम कायदशाओ और जीवनस्तर की स्थापना नि शुल्क चिकित्सा, स्कूल जाने वाले बच्चो के लिए भोजन और शिक्षा क अधिकाधिक अवसर चाहता था। निश्चित दलीय कायक्रमो मे बैंक आफ इग्लैंड, गैस तथा कोयला उद्योग बिजली, रेलमार्गों और सडक परिवहन तथा धातु उद्योगो के राष्ट्रीयकरण की माग की गई थी। उनका लक्ष्य समस्त उद्यागो का नही वरन केवल उन उद्योगो का राष्ट्रीयकरण करना था जो उसके लिए 'परिपक्व' है। अन्य उद्योगो का वे नियमन करना चाहते थे तथा छाटे व्यवसाय से उन्ह कुछ लना देना न था।

मतदाताआ न लाकसभा मे 393 श्रमदलीय उम्मीदवारा को चुना जबकि रूढिवादी

दल और उसके समर्थकों को केवल 213 स्थान मिले। विंस्टन चर्चिल के स्थान पर एटली ब्रिटेन का प्रधानमंत्री बना। इतनी महान विजय का क्या कारण था? युद्ध से पहले की रूढ़िवादी दल की भूलों और बेरोजगारी को नागरिक भूले नहीं थे साथ ही उनके मन में श्रमदल द्वारा युद्धकाल के दौरान निबाही गई प्रभावशाली भूमिका की स्मृति बहुत ताजी थी। अभावों के बावजूद सरकारी नियंत्रण व्यवस्था इतनी माकूल थी कि विश्वयुद्ध के दौरान पहले की अपेक्षा सबसे अधिक लोगों को भोजन और वस्त्र उपलब्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त श्रमदल ने बहुत सावधानीपूर्वक ब्यौरेवार कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा मध्यवर्ग का समर्थन काफी मात्रा में प्राप्त किया। श्रमदल के टिकट पर चुने गए लोग महज श्रमिक वर्ग के न थे, नई लोकसभा में श्रमसंघों की सिफारिश पर खड़े किए गए और विजयी उम्मीदवारों की संख्या एक तिहाई से भी कम थी। अनेक युवा और व्यावसायिक सदस्य सभी वर्गों और व्यवसायों के प्रतिनिधि थे।

ट्रेड यूनियन कांग्रेस के नेता अर्नेस्ट बेविन को वैदेशिक मामलों का मंत्री बनाया गया। ह्यूग डाल्टन वित्तमंत्री बने तथा उन्होंने और स्वास्थ्य मंत्री एनुरिन बीवान ने मिलकर अधिकांश घरेलू विधिनिर्माण का दायित्व निबाहा। बैंक आफ इंग्लैंड और ह्रासमान कोयला उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का बहुत विरोध किया गया, हां, रेलमार्गों के राष्ट्रीयकरण का थोड़ा अधिक विरोध हुआ क्योंकि वे अपेक्षाकृत कुछ अधिक मुनाफे का सौदा थे। रूढ़िवादी दल ने एक सड़क परिवहन और धातु उद्योगों के राष्ट्रीयकरण पर आपत्ति प्रकट की अतः श्रमदल ने उसे अंत के लिए उठा कर रख दिया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना की विशेष तौर पर आलोचना की गई। बीवान को यह मांग स्वीकार करनी पड़ी कि ब्रिटिश नागरिकों को निजी चिकित्सकों और सरकारी अस्पतालों में से किसी से भी इलाज कराने की स्वतंत्रता रहेगी। राष्ट्रीयकृत उद्योगों के भूतपूर्व मालिकों का प्रतिधन चुकाया गया। समाजवादियों ने कहा कि इस तरह निजी क्षेत्र में लाभकारी निवेश के लिए पूंजी की बहुत बड़ी राशि उपलब्ध हो गई तथा सरकार पर भारी ऋणों का बोझ चढ़ गया जिसे बाद में सार्वजनिक स्वामित्व का मूल लक्षण ही मान लिया गया। राज्य के स्वामित्व में आने वाले नए उद्योगों का संचालन मंडलों अथवा सार्वजनिक निगमों को सौंप दिया गया तथा उनकी नियामक परिषदों में ऐसे लोगों को मनोनीत किया गया जो निजी उद्योगों से संबद्ध थे। वस्तुतः कोई बहुत भारी परिवर्तन नहीं हुआ।[1]

वैदेशिक मामलों में श्रमदल ने अपनी पूर्ववर्ती सरकार की नीति का ही अनुसरण किया। बेविन की निगाह में रूस उद्दंड था तथा पश्चिमी यूरोप कमजोर और

असुरक्षित। उसने सयुक्त राज्य अमरीका के साथ पूरा सहयोग करने का निश्चय किया। वामपक्ष ने पश्चिमी यूरोपीय प्रतिरक्षा सधियो के प्रति दल के समर्थन की भत्सना की। उसा पूव और पश्चिम के बीच चल रहे शीतयुद्ध म तटस्थता की स्थिति अपनाने की सिफारिश की जिसमे उनके बीच चौडी होती चली जा रही खाई पर पुल बाधा जा सके। उसने दल से कहा कि वह वामपक्ष की आर झुकाव बनाए रखे। साम्राज्य के बारे मे शिकायत का अधिक मौका न था। भारत, बर्मा और श्रीलका को स्वतन्त्रता दे दी गई। इनम से केवल बर्मा ने ब्रिटेन के साथ राष्ट्रमडल म रहा से इकार किया। ससद की अवधि 1950 मे पूरी हो गई, उसी वप फरवरी मे हुए चुनावा म श्रमदल को लोकसभा मे 315 और रूढिवादी दल को 298 स्थान मिले। श्रमदल के कायक्रम मे कुछ अन्य सुधारा की योजना रखी गई थी, विशेषत शिक्षा के क्षेत्र म। श्रमसघ उसके प्रति वफादार रहे जिस कारण उसकी विजय हुई। शीत युद्ध जारी था और स्तालिन न पश्चिमी मित्र राष्ट्रा के प्रति सद्भावना के तौर पर 1943 मे जिस कामिटन को भग कर दिया था उसके स्थान पर कामिनफाम का स्थापना कर ली गई थी। इससे श्रमसघीय नेताओ के मन मे यह आशका उत्पन्न हुई कि साम्यवादी लोग श्रमसघा मे घुसने की चेष्टा करेंगे। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया साम्यवादिया के बहिष्कार द्वारा व्यक्त की तथा बेविन की नीतिया का और भी अधिक उत्साह और उत्कटता पूवक समथन किया।

इस सबके बावजूद मतभेद गहरे होत गए। क्रिप्स की मृत्यु के बाद जब ह्यू गर्टस्केल ने बोड आफ ट्रेड का कायभार सभाला तो उसने स्वास्थ्य मत्रालय पर जो किफायतशारी थोपी उसके कारण बीवान न मत्रिमडल से त्यागपत्र दे दिया और उसके बाद वाणिज्य मत्रालय से हराल्ड विलसन ने भी त्यागपत्र द दिया। एटली ने महसूस किया कि अगले चुनाव के लिए अधिक सशक्त बहुमत की आवश्यकता होगी। किंतु निर्वाचन आयोग के पुनगठन और स्थानो के पुनर्वितरण का लाभ रूढिवादी दल को मिला जिसके समथक बहुत अधिक सकेंद्रित नहा थे तथा उसे लाकसभा म 26 स्थाना का बहुमत प्राप्त हो गया। यह दल लगभग 13 वर्षों तक सत्ता म रहा, लेकिन उसने ब्रिटेन म श्रमदल द्वारा स्थापित कल्याणकारी राज्य की सरचना को नष्ट नही किया।

फ्रासीसी समाजवाद त्रिदलीय व्यवस्था से तीसरी शक्ति की ओर

प्रतिरोध के गौरव मे मगन फ्रासीसी समाजवाद ने न तो अपने सगठन मे सरचनात्मक कायापलट करने की कोशिश की, न व्यापक स्तर पर समूचे समाज म ही। एम०एफ० आई० ओ० ने उन लागो को दल से बाहर खदेड दिया जिन्होंने माशल

पेता के पक्ष मे मत दिया था। लेकिन दल के नियमित सदस्य, विशेपत देहाती क्षेत्रो म रहने वाले सदस्य प्रतिरोध आदोलन के कायकर्ताओ' के बारे मे सशक्ति हो उठे फलत उन्हे दलीय सगठन मे आत्मसात नही किया जा सका। लिआन ब्लम ने समाजवाद के अधिक मानवतावादी सस्करण का पक्ष लिया जिसके अतगत वगमघप की धारणा और पदाथवादी निर्धारणवाद (नियतिवाद) के स्थान पर वैयक्तिक स्वतत्रता और व्यक्तित्व के विकास को प्रमुखता दी जाए। समाजवाद के इस मानवतावादी नव सस्करण का प्रमुख प्रवक्ता डेनियल मायर था लकिन मार्सेल पीवट और अग्रेजी के भूतपूव शिक्षक तथा एरास के युवा ससत्मदस्य गाई मौले के विरोध के कारण वह पनप नही पाया। वे एस० एफ० आई० ओ० को चच के विरोध के प्रति प्रतिबद्ध एक वर्गीय दल बनाए रखन के लिए कटिबद्ध थे। 1946 मे एक दलीय सम्मेलन मे इस कदम का समथन कर दिया गया तथा मौले को दल का सचिव नियुक्त किया। मौले माक्सवादी होने की अपक्षा नव गेंडवादी अधिक था, उसके मागदशन म सम्मेलन ने 'सिद्धातो का एक घोपणा पत्र' (ए डिक्लेरेशन आफ प्रिंसिपिल्स) स्वीकार किया जिसमे समूहीकरण की माग गई थी तथा दल के 'वर्गीय और क्रातिकारी' स्वरूप पर बल दिया गया था। जनवरी 1946 म जनरल द'गाल द्वारा अस्थाई सरकार की अध्यक्षता से अचानक त्यागपत्र देने पर उसका स्थान समाजवादी नेता फैलिक्स गोविन ने सभाला। आगामी चद महीनो म नेशनल असेंबली ने गैस और बिजली उद्योगो, बीमा व्यवसाय, खदानो, बैंक आफ फ्रास, अ य प्रमुख जमाकारी बको तथा परिवहन का राष्ट्रीयकरण कर लिया।

एस० एफ० आई० ओ० ने ब्लम की यह बात मान ली कि वह साम्यवादियो के साथ अपना अस्तित्व विलीन नही करेगी तथा दानो दलो ने प्रत्येक चुनाव म अलग अलग उम्मीदवार खडे किए। लेकिन दल ने अतत साम्यवादियो और ईसाई लोकतत्रवादियो के साथ मिलकर एक त्रिदलीय निर्वाचनीय और ससदीय गठबधन का निर्माण किया। अपने दोनो सहयोगियो के बीच म स्थित होने के कारण मत्रिमडल म अधिकाश स्थान उसे ही मिले तथा उसका ही एक अध्यक्ष विसेंट औरियोल चौथे गणतत्र का प्रथम राष्ट्रपति चुना गया। समाजवादी प्रधानमत्री पाल रमेदियर की मरकार ने पुनराघुनीकरण तथा उद्योगीकरण के लिए मौनट याजना को लागू करना शुरू किया।

किंतु शीतयुद्ध के उग्र होते ही त्रिदलीय सरकार का पतन हो गया। ब्रिटेन के श्रमदल की तरह फ्रामीसी समाजवादियो ने भी पश्चिमी मेमे म स्थान ग्रहण कर लिया। पूव मे एक देश के बाद दूसरा साम्यवादी नियत्रण मे आता चला

गया, तथा 1947 की गर्मियो मे जब साम्यवादी दल ने हडतालो का एक सिल मिला शुरू किया तो यह माना जाने लगा कि व फ्रास मे भी वही प्रक्रिया शुरू करने की दिशा म बढ रहे हैं। रमेदियर ने अपने मन्त्रिमडल से साम्यवादियो को निकाल फेंका। परिणामत पी० सी० एफ० विरोधी खेमे म शामिल हो गया और उसीम रहा। फ्रासीसी समाजवादियो को कुछ गलतफहमियो का भी अनुभव हुआ। उन्होंने पूर्वी यूरोप के देशो मे अपने सहयोगी समाजवादियो को जेलो म सडते देखा था जिसके कारण उन्हे विश्वास हो गया कि साम्यवादी नता फ्रास के हितो की अपक्षा सोवियत सघ के हितो को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। इस प्रकार साम्यवाद विरोधी ग्रथि के निर्माण ने अतलातक सधि सगठन म फ्रास का प्रवेश सुगम बना दिया।

परिणामत समाजवादी व्यूहरचना मे परिवतन आ गया। एस० एफ० आई० ओ० के लिए यह आवश्यक हो गया कि वह मध्यमार्गी दलो के साथ सहयोग करके एक ततीय शक्ति का सगठन करे, जो वामपक्ष म साम्यवादियो और दक्षिण पक्ष म द'गाल के 'रैली आफ द फ्रेंच पीपुल' आदोलन का समान रूप से विरोध करे। कुछ समाजवादी द'गाल के सगठन म फासीवादी तत्वो का दशन करते थे। लेकिन मध्यमार्गी दलो के साथ सहयोग का अथ था समाजवादी कायक्रम के एक बडे अश का परित्याग। 1951 के चुनाव ततीय शक्ति के दलो के अनुकूल रहे (समाज-वादियो को 106 स्थान मिले, यानी पहले की अपेक्षा 40 कम)। एस० एफ० आई० ओ० ने जब निजी (धार्मिक) शिक्षा सस्थाओ को सरकारी अनुदान देने से इकार कर दिया तो यह बात जाहिर हो गई कि ईसाई लोकतन्त्रवादियो के साथ उसका सहयोग अब और अधिक नही निभ सकता। फ्रास के राजनीतिक इतिहास म ऐसे अनेक अवसर आए जब दक्षिण पक्ष ने वामपक्ष के विभाजन का लाभ उठाया इस बार भी वही हुआ। उसने माच 1952 मे एतोइन पिने के नेतृत्व मे अपना मन्त्रिमडल बना लिया। 1954 55 मे पियरे मेडे फ्रास की उग्र वादी सरकार और एक वष बाद मोले की सरकार को छोडकर समाजवादी और फ्रास का समूचा वामपक्ष निरतर विरोधी खेमे मे रहा है।

बेल्जियम, आस्ट्रिया और इटली मे समाजवाद

बेल्जियम म भी लगभग ऐसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई। युद्ध के तुरत बाद वहा समाजवादियो और सामाजिक ईसाइयो ने मिलकर एक वामपक्षीय सम्मिलित सरकार का गठन कर लिया। उसके बाद 1949 तक पाल हनरी स्पाक का समाजवादी मन्त्रिमडल सत्तारूढ रहा। उस वष के चुनावो मे विरोधी पक्ष की विजय हुई तथा 1954 1958 और पुन 1961-1966 की सम्मिलित सरकारो को

छोडकर सत्ता उसके ही हाथो मे रही। आस्ट्रिया की स्थिति भी लगभग फ्रास और बेल्जियम जैसी ही रही। काल रेनर को गणतत्र का अध्यक्ष बनाया गया तथा 1947 से 1966 के बीच समाजवादियो ने सम्मिलित सरकारो म भाग लिया। उसके बाद वह विरोधी पक्ष म जा बैठा।

यद्यपि 1945 और 1946 म इतालवी समाजवाद को ईसाई लोकतत्रवादी सरकारो मे प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ था तथापि वह युद्धोत्तर काल मे सरकारो म भाग लेने अथवा उनके नियत्रण और उसके बाद विरोधी पक्ष मे बैठने की प्रक्रिया से अलग हट गया। दल अपनी आतरिक फूटो से टूट गया। पी० एस० आई० का एक गुट साम्यवादियो के साथ निकट सहयोग का आग्रह कर रहा था, अत मध्यमार्गी समाजवादी दल से अलग हो गए और उन्होने सामाजिक लोकतत्रवादी दल की स्थापना की। इसका नेतृत्व सयुक्तराज्य अमरीका से लौटे जेसेप सरगत तथा फासीवाद विरोधी लेखक इगनाजियो सिलोन ने किया। साम्यवादियो के साथ गठबधन के हिमायतियो का प्रमुख पवक्ता पियेत्रो नेन्नी था। पी० सी० आई० का अध्यक्ष तो गलियात्ती था। उसने क्रातिकारी दृष्टिकोण बनाए रखकर फ्रासीसी समाजवादियो की अपेक्षा अधिक लचीलेपन का परिचय दिया। वह यह चाहता था कि उसका दल एक बार फिर सरकार मे भाग ले। नेन्नी के नेतृत्व मे पी० एस० आई० ने एक दशक से अधिक लबे समय तक साम्यवादियो के साथ निर्वाचनीय गठबधन बनाए रखा लेकिन ईसाई लोकतत्रवादियो के नेतृत्व म बनी सम्मिलित सरकारो मे सरगत के गुट ने भाग लिया। मुख्य समाजवादी दल 1963 तक किसी मध्य वामपक्ष गठबधन का अग नही बन पाया।

समाजवाद विरोधी पक्ष मे

युद्ध के बाद चद वर्षों के भीतर यूरोपीय समाजवादियो को विरोधी पक्ष म धकेल दिया गया। पश्चिमी जमनी मे वे सत्ता म आए ही नही। पूर्वी यूरोप म पाचवें दशक के अत म व उनपर साम्यवाद हावी हो गया, पश्चिमी यूरोप मे उन्हें शीतयुद्ध के यथाथ और उदार पूजीवाद के आकर्षण ने धर दबोचा। छठे दशक म समाजवादी दल सब कही प्रतिरक्षात्मक स्थिति म पहुच गए। उनकी लगातार पराजय ने उनपर व्यूहरचना और आदर्शों की दृष्टि से गहरा प्रभाव डाला।

जनवादी लोकतत्र

युद्धोत्तर शासन की एक विचित्र प्रणाली उन देशो म विकसित हुई जिनमे दोनो विश्वयुद्धो के बीच की अवधि म बडे जमीदारो का प्रतिक्रियावादी शासन था अथवा जिन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध म गुजरकर जमनी का समथन किया था, अथवा

जिनमे दोनो लक्षण मौजूद थे। बोहेमिया को छोडकर अन्य देशो मे बडे भूमि धारी जागीरदारो का बोलबाला था, तथा बिखरे हुए औद्योगिक क्षेत्रो मे विदेशी निवेशो का प्रभुत्व था जिसके कारण उन्हे अर्ध औपनिवेशिक स्तर प्राप्त हो गया था। युद्ध उनके लिए बहुत विनाशकारी सिद्ध हुआ था। जर्मनी ने पोलैंड की 20 प्रतिशत जनसख्या को विशेषत बुद्धिवादियो को और युगोस्लाविया म 17 प्रतिशत जनसख्या को नष्ट कर दिया था। युद्धोत्तर अर्थव्यवस्था और सामाजिक सरचना अकालो और आर्थिक तबाही से ग्रस्त थी।

पूर्वी यूरोप मे प्रतिरोध आदोलन प्रबल थे लेकिन फ्रास की तरह उनको युद्धोत्तर सम्मिलित सरकारो से अलग रखने के बजाय उनमे शामिल किया गया था। भिन्न प्रकार के तत्वो के समावेश के कारण ये सरकारें आर्थिक पुनरुद्धार और नाजियो के साथ सहयोग करने वाले लोगो से बदला लेने के अल्पावधि कार्यक्रमो पर ही सहमत हो सकती थी। विभिन्न शक्तियो के दीर्घावधि प्रयोजन भिन्न थे लेकिन उन सबमे बुनियादी कृषि सुधारो तथा कम से कम राष्ट्रीयकरण की योजनाओ के मूल तत्व मौजूद थे। समाजवाद ने जमीदारो की सत्ता के उन्मूलन तथा कुलीन वर्ग और चर्च की सत्ता के परिसीमन की हिमायत करके अपने पक्ष मे समर्थन प्राप्त किया। उनके सामने प्रश्न यह था कि वे सम्मिलित सरकारें (जो अपने आपको जनवादी लोकतत्र कहती थी) किसी प्रकार के सशोधित समाजवाद की दिशा मे लौट जाएगी अथवा सुधारो के क्रियान्वित हो जाने के बाद समाजवाद की ओर आगे बढ़ेंगी? यदि वे समाजवाद की दिशा मे बढ़ती तो एक भीषण राजनीतिक सघर्ष उत्पन्न हो जाता क्योकि सरकारो के भीतर दोनो पक्षो के हिमायती काफी सख्या म मौजूद थे। जमीदार चर्च (पोलैड और हगरी म वह विशेष तौर पर प्रभावशाली था) और उदार मध्यवर्ग के कुछ अश उन किसानो और मजदूरो के साथ मुठभेड कर सकते थे जो व्यापकतर कृषि सुधारो की माग कर रहे थे और जिन्हे सामाजिक विधिनिर्माण से लाभ की अपेक्षा थी।[2]

मुठभेड का अवसर आया ही नही। लोकतत्रीय व्यवस्थाए साम्यवादी शासन के सामने धराशायी हो गइ। 1948 मे चेकोस्लोवाकिया पर साम्यवादी आधिपत्य के बाद यह प्रक्रिया सपूर्ण हो गई। ये राज्य सोवियत सघ के उपग्रह बन गए तथा 1956 और 1968 मे हगरी और चेकोस्लोवाकिया के उदाहरणो ने यह सिद्ध कर दिया कि उनपर सोवियत सघ का पूरा नियत्रण है। यह बात स्पष्ट हो गइ कि लौह आवरण के पीछे स्वतत्र और सामाजिक लोकतत्रवादी सरकारो को बर्दाश्त नही किया जा सकता। पूर्वी यूरोप मे युद्धोत्तर लोकतत्रीय

व्यवस्थाओ का पतन क्या हुआ ?

पश्चिमी इतिहास विज्ञान की दृष्टि मे उत्तर स्पष्ट है। रूसी सेना की उपस्थिति और सोवियत सघ द्वारा स्थानीय साम्यवादी नेताओ को दिए गए समर्थन के कारण समाजवादी तथा अन्य लोकतन्त्रीय तत्वो के सामने ऐसी बाधाए खडी हो गई जिन्हे वे लाघ ही नही सकते थे। समाजवादी दलो के साम्यवाद विरोधी नेताओ को या तो नाजियो द्वारा थोप गए निर्वासन से स्वदेश लौटने ही नही दिया गया और यदि वे लौट भी आए तो उन्हे भगा दिया गया। अस्थाई सरकारो के भीतर साम्यवादियो को प्रमुख मन्त्रालय प्राप्त हो गए विशेषत पुलिस और सचार। समाजवादियों का साम्यवादियो के साथ सयुक्त मोर्चो के समझौते के लिए फुसलाया गया जिन्होने चुनावा मे उम्मीदवारो को सम्मिलित सूची तैयार करने का प्रस्ताव रखा। यदि समाजवादी इकार करते (जैसा कि चेकोस्लोवाकिया मे हुआ) तथा उनके पीछे बहुमत का समर्थन दिखाई देता ता पुलिस की मदद से उनके नेताओ को सत्ता से बाहर कर दिया जाता। चुनावा के बाद साम्यवादियो ने दोनो दलो के परस्पर विलय का प्रस्ताव रखा, तथा सयुक्त सूची के आधार पर चुने गए ससत्सदस्यो का समर्थन प्राप्त करके वे अपनी मागो को लागू करने मे सफल हो गए। उसके बाद जिन समाजवादिया ने इस स्थिति को स्वीकार नही किया उन्ह तथा अन्य विरोधियो को राजनीति से खदेड दिया गया। इस प्रकार एक ऐसे जनवादी दल का निर्माण किया गया जिसके अनुयायी समाजवादी विचारो के थे और जिसका नेतत्व विश्वसनीय सोवियत समर्थक नेताओ के हाथा म था।[3]

इस दृश्य मे काफी सत्य है तथापि यह अधूरा है। रूसी सेनाआ ने लोकप्रिय लोकतन्त्रीय सरकारा को सत्ता से खदेडा तो अवश्य किंतु उसकी उपस्थिति से उन सरकारो के निर्माण का कोई सबध नही हैं।[4] इस बात को भुला दिया जाता है कि युद्ध के तत्काल बाद पूर्वी यूरोप मे साम्यवादियो का बहुत वाजिब प्रभाव था और उन्हे जनता का समर्थन प्राप्त था तथा साम्यवाद विरोधी तत्वो न स्वय को सावजनिक जीवन से दूर धकेल दिया था, जैसे समग्र कृषि सुधार के मामले म उन्होंने प्रतिक्रियावादी रवैया अपनाया। इसक अतिरिक्त इस बात के भी कुछ प्रमाण उपलब्ध हैं कि रूमानिया और हगरी म सोवियत सघ द्वारा प्रेरित गर साम्यवादी दना को वैमनस्य न नहीं वरन जनाक्राश न सरकार से बाहर खदेड दिया था। उनके विघटन के फलस्वरूप साम्यवादिया न उनके वामपथा को अपन साथ जोडा तथा (साम्यवादिया द्वारा नियत्रित) राष्ट्रीय मोर्चो का

गठन किया, तथा लोकतत्रीय प्रक्रियाओ के प्रति प्रतिबद्ध समाजवादियो को कुचल डाला।

एस० पी० डी० विरोधी पक्ष मे

यूरोप के समाजवादी दलो पर एक नजर डालने से यह ज्ञात होता है कि छठे दशक मे और सातवें दशक के प्रारभिक वर्षों मे उन्हे विरोधी पक्ष की भूमिका निबाहने मे कितनी कठिनाइयो का सामना करना पडा। इस सर्वेक्षण से हमे यह बोध भी होगा कि अपनी विफलता के कारण उन्हे अपने सिद्धातो और अपनी व्यूहरचना म कितने बडे परिवतन करने पडे।

जमनी की सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी फ्रासीसी और ब्रिटिश समाजवादी दलो से इस मायने मे भिन्न थी कि उसे सत्ता से च्युत होना पडा। पश्चिमी जमनी मे समाजवादी कोनराद अदेनावर तथा उसके उत्तराधिकारियो के क्रिश्चियन डिमाक्रेटिक यूनियन दल के सामने एक लबे समय तक गौण भूमिका निबाहते रहे। अपने बवेरियाई मित्र दलो के साथ मिलकर एस० पी० डी० सघीय गणराज्य के निमाण के समय अथात 1949 से लेकर 1969 तक जमनी के राजनीतिक जीवन पर छाया रहा। इसके कारणो को समझना भी जरूरी है। जमनी के समस्त दलो मे से समाजवादी दल ही नाजी प्रलय मे से निष्कलक निकलकर आया था। हिटलर ने उसे गैरकानूनी घोषित कर दिया था तथा पूरी तरह कुचल डाला था। एस० पी० डी० को यह ख्याल था कि हिटलर के पतन के बाद सत्ता उसके हाथो म आएगी, लेकिन ऐसा नही हुआ। इसका कारण एक सशक्त और प्रतिस्पर्धी साम्यवादी दल का अस्तित्व नही था। यद्यपि मित्रराष्ट्रो ने के० पी० डी० (साम्यवादी दल) को फासीवाद विरोधी घोषित कर दिया था तथापि उस बहुत कम मत मिले और 1956 मे उसे मौलिक उदारवादी और लोकतत्रीय व्यवस्था' के भीतर असगत बताकर गैरकानूनी घोषित कर दिया गया।

अशत इसकी जिम्मेदारी उस नई त्रासदी पर है जिसकी अनुभूति 1945 के बाद समाजवाद और जर्मनी दोनो को हुई। पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्र मे देश के विभाजन के फलस्वरूप दल पश्चिमी क्षेत्र मे प्राटेस्टेंट और सर्वहारा बहुमत से वचित हो गया। महिला मतदाताओ का झुकाव ईसाई लोकतत्रवादियो के समर्थन की ओर रहा। वह एस० पी० डी० के अध्यक्ष कुर्त शूमाकर के व्यक्तित्व पर भी आधारित था। वह घोर राष्ट्रवादी होते हुए भी फासीवाद का कट्टर विरोधी था। उसको बदी शिविर म रखा गया था। वह लदन मे अपने निर्वासन के दौरान दल की कार्यकारिणी समिति क सदस्य एरिक आलेनहावर तथा सोवियत सघ से लौटे

ओटो ग्रोटवोहल से मिला। उसने समाजवादी और साम्यवादी दलो के बीच विलय की सभावना से एकदम इकार कर दिया। वाइमर गणराज्य मे अपने पूववर्ती लोगो की तरह उसकी भी यह धारणा पुष्ट हो चुकी थी कि साम्यवाद अतत मास्को का उपग्रह बन जाएगा। कुछ समय बाद पूर्वी जमनी म साम्य वादियो के नियत्रण मे सयुक्त समाजवादी दल का उदय हुआ।

सितबर 1949 के चुनावो मे सी० डी० यू० को ससदीय बहुमत के लिए आवश्यक मतो से एक मत अधिक मिल गया अदेनावार को चासलर (प्रधान मत्री) बनाया गया और एस० पी० डी० को विरोधी पत्र की भूमिका म धकेल दिया गया। शूमाकर ने गृहनीति के क्षेत्र मे व्यापक राष्ट्रीयकरण और वैदेशिक नीति के मामले मे स्वतत्रता का आग्रह किया। मई 1946 मे युद्ध के बाद पहली बार दल का सम्मेलन हुआ। इस हनोवर सम्मेलन म इस बात पर बल दिया गया कि व्यवसायी वग ने हिटलर का साथ दिया तथा कहा गया कि पूजीवाद हमेशा लोकतत्र के लिए खतरा बना रहेगा। शूमाकर ने सार और रुहर के मुद्दो पर, पुनर्शस्त्रीकरण तथा जर्मनी को अतलातक शिविर म शामिल करने के मामलो मे अदेनावर का डटकर विरोध किया। उस लगा कि इन सब बातो से जमनी के एकीकरण मे बाधा पडेगी। वह राष्ट्रीयता की भावना का आदर करने के मामले म कटिबद्ध था तथा वह यह नही चाहता था कि 1919 की भूल को दोहराया जाए। उसने इस बात से इकार किया कि युद्ध और अत्याचारो के लिए जमनी की समूची जनता सामूहिक रूप से जिम्मेदार है। शीतयुद्ध के वेग पकडते ही बर्लिन उसका प्रमुख समरागण बन गया। मित्रराष्ट्रो के अधिकारियों ने शूमाकर और उसके समाजवादी दल के बजाय अदेनावर का समथन किया क्योकि वे लोकतत्रीय समाजवाद और साम्यवाद के बीच अतर देख पाने म असमथ थे।

1933 के पहले की तरह दलीय मामले दलीय नौकरशाही के हाथो मे रह। दल पूरी तरह ससदीय था लेकिन क्रातिकारी भाषा का इस्तमाल करता था जिससे उसके समथक मतदाता भी विदक जाते थे। दल के जो सशक्त सदस्य स्थानीय अथवा नगरपालिका शासन म भाग ले रहे थे उनका ध्यान आदर्शों की अपक्षा कार्य क्षमता और परिणामो पर अधिक था। व भी दलीय व्यवस्था का प्रभावित नही कर पाए। एस० पी० डी० ने कोई नया कायक्रम नही अपनाया, वह उसी कायक्रम से चिपकी रही जो 1925 म हाइडलबग सम्मेलन मे अपनाया गया था। दल अपने आपको समूचे समाज के हितो को जोडने के बजाय एक वग के साथ जुडा रहा जिसके कारण शूमाकर का व्यापक समथन नही मिल पाया। इसर

अतिरिक्त युद्धोत्तर जमनी का तेजी से बढती हुई समृद्धि उदारवादी कायक्रम का परिणाम थी जिसके कारण गैर समाजवादी रीतियो को गरिमा प्राप्त हुई। इस समद्धि का लेखा जोखा करते समय यह बात पूणतया बिसरा दी गई कि पश्चिमी जमनी को उस दौर मे शस्त्रास्त्र पर वह सब भारी खच नही करना पडा जो उसे अयथा करना पडता, साथ ही यह भी बिसरा दिया गया कि स्वीडन (जहा समाजवादियो की सरकार थी) तथा (जहा वे सरकार मे शामिल थे) आस्ट्रिया डेनमाक हालैंड और स्विटजरलड मे भी वैसी ही बढोतरी हुई थी।[5] 1952 मे शूमाकर की मृत्यु और उसके स्थान पर दल के नए अध्यक्ष ओलेनहावर के निर्वाचन तक दल ने सिद्धातो के साथ समझौता नही किया। फलत दल एक भी चुनाव मे विजयी नही हो सका। शीतयुद्ध उसके विरुद्ध पड रहा था। 1949 के चुनाव से पहले बर्लिन की घेराबदी हुई, 1953 के चुनावा से पहले पूर्वी जर्मनी मे विद्रोह हुआ, 1957 के चनावा से पहले हगरी पर सोवियत सघ ने सशस्त्र आक्रमण किया तथा 1961 के चुनावो से थोडा पहले ही बर्लिन दीवार का निर्माण हुआ। इन सब घटनाआ ने समाजवाद के प्रति जमनी के मतदाताआ का उत्साह शिथिल कर दिया।

ब्रिटेन मे श्रमदल सत्ताच्युत हो गया

यूरोप के अय देशो म भी समाजवादी दल अल्पमत म थे। उनम से प्रत्यक का भाग्य स्थानीय दशाआ पर निभर था, लेकिन उनमे कुछ समानताए उभर आइ। युद्ध के तत्काल बाद समाजवादियो अथवा समाजवादी प्रेरित सरकारा ने मजदूरी की दरो म कटौतिया की, राशनिंग की प्रणाली चालू की, श्रमसघो की स्वतत्रताआ पर प्रतिबध लगाए तथा आवश्यक वस्तुओ के अभाव के कारण किफायतशारी के कदम उठाए। इन सबके कारण उनकी लोकप्रियता मे कमी आ गई तथा मतदाताओ के मन मे यह भ्रम पैदा हो गया कि आर्थिक तगी का सामना करने के लिए बनाए गए कानून समाजवाद के प्रतीक हैं। इग्लैंड मे य उपाय बहुत सुगमतापूवक अमल मे आ गए क्योकि वहा नागरिक भावना बहुत बलवती थी। लेकिन यूरोप के देशो म इन कानूनो का भारी पैमान पर उल्लघन हुआ तथा काला बाजार अस्तित्व म आ गया। नाजियो द्वारा लादी गई सरकारो के शासनकाल मे कानूनो का उल्लघन करना आखिर देशभक्ति का सबूत माना गया था। जनता के लिए नियत्रण असह्य हो उठे और उन्ह एसा लगा कि ये समाजवादी व्यवस्था का अनिवाय अग हैं। उनको बाजार पर सावजनिक नियत्रण के समाजवादी सिद्धात के साथ जोड लिया गया। आर्थिक उदारवाद की अभीप्सा रूढिवादियो की विजय के रूप मे अभिव्यक्त हुई। और अधिक शोध के आधार पर यह भी पता लगाया जा सकता है कि इस स्थिति के

विकास म अमरीकी प्रभाव कहा तक सहायक रहा। यह तो तय ही है कि पश्चिमी जमनी मे सयुक्तराज्य अमरीका का प्रभाव बहुत प्रबल था, और चाहे जानबूझ कर ऐसा किया गया हो या अनजान म ही यह भी सच है कि माशल योजना के अतगत सहायता प्रदान करने वाले अभिकरणो मे उसके उदाहरण और उसकी उपस्थिति ने समाजवादी दलो के प्रतिकूल तथा अहस्तक्षेपवादी उदारवादिया के पक्ष मे काय किया।[6] उधर समाजवाद ने भी अपने आपको स्थिति के अनुकूल ढालने की कोशिश नही की। उसन अपना वर्गीय चरित्र बनाए रखा, अत मध्यवग मे वृद्धि होने के कारण उसे अल्पसख्या म ही रह जाना पडा। समाजवादी दल अब क्रातिकारी नही रहा था तथापि वह क्रातिकारी प्रतीको को आढे रहा जिसके कारण बहुत से मतदाता उनसे विमुख हो गए।

1951 मे बीवान और अन्य वामपक्षी समाजवादियो के विरोध के कारण फूट पड जाने से ब्रिटेन म श्रमदल की स्थिति कमजोर हो गई। इसी कारण एक बार पराजित होने के बाद वह एक लबे समय तक सत्ता से वचित रहा। वाम पक्ष सैनिक खर्च मे कमी करना और ब्रिटेन का अतलातक सधि सगठन से हटाना चाहता था। वह स्पष्ट तौर पर समाजवादी कदम उठाने का भी हिमायती था, जसे पूजी पर करारोपण। उसे राष्ट्रीयकृत उद्योगा की ओर से उत्पन्न निराशा से भी बल मिला। आर्थिक वद्धि की दर मद हो गई थी, इसका एक कारण यह था कि कोयला और रेलमार्गो सरीखे उद्योग घाटे म चल रह थे। श्रमदल की नीतिया बेरोजगारो के आकडे बढने से रोकने मे तो सफल रही किंतु उनसे उत्पादनशीलता मे वृद्धि नही हो पाई थी।

दल का वामपक्ष एक लबे समय से अधिक उग्र कायक्रमो के प्रति जनता का समथन प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा था। 1924 मे मेकडानेल्ड सरकार के पतन के बाद उसने यह नारा लगाना शुरू कर दिया था कि 'समाजवाद हमारे जीवनकाल मे'। 1931 मे दूसरी मेकडानेल्ड सरकार के पतन के बाद वामपक्षी तत्वा न सोशलिस्ट लीग का गठन किया था। लीग ने 'ट्रिब्यून' नामक एक उग्रवादी पत्र का प्रकाशन शुरू किया जो बाद के प्रत्येक वामपक्षीय अभियान का जनक अथवा पोषक रहा। छठे दशक म प्रभावशाली पत्र न्यू स्टटसमैन के समथन पर वामपक्षी समाजवादी बीवान के नतत्व म सगठित हो गए।

यहा यह बात समझनी आवश्यक है कि श्रमदल की फूट ही उसकी सत्ता से वचित रखन वाला एकमात्र कारण न थी। उसके चुनाव यत्र का नष्ट होन दिया गया था। रूढिवादिया ने बुद्धिमानी से काम लिया उन्होने श्रमदलीय सरकार के

कार्यों को उलटने के बजाय उन्ह ज्यों का त्यों रहने दिया तथा उनका लाभ स्वय उठाया। श्रमदल ने जिस लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना की थी उसको नष्ट नही किया गया तथा सडक परिवहन और इस्पात उद्योगों के अलावा अन्य राष्ट्रीयकृत उद्योगों को ज्यों का त्यों रहने दिया गया। 1955 और 1959 मे श्रमदल की हार के बाद ऐसा लगने लगा था कि अब वह कभी सत्ता प्राप्त नही कर पाएगा।

नवीनतम सशोधनवाद

गैटसकेल और विलसन

श्रमदल एक लबे समय तक लगातार सत्ता से बाहर रहा, उस दौरान उसके विभिन्न गुटो के पारस्परिक वैमनस्य और दोषदर्शन के कारण फूट गहरी होती चली गई। इस फूट का कटुतम प्रदर्शन श्रमदल द्वारा अपनाई जाने वाली विदेश नीति के बारे म होने वाले विवाद म हुआ। 1952 मे जिस समय कोरिया युद्ध चरम बिंदु पर था दल की कार्यकारिणी ने सिद्धातत पुनर्शस्त्रीकरण को स्वीकार कर लिया। 55 श्रमदलीय लोकसभा सदस्यो ने इस प्रस्ताव म निहित भारी व्यय के कारण इसे अस्वीकार कर दिया। बीवानवादी गुट कार्यकारिणी मे बहुमत प्राप्त करने म सफल हो गया और उसने मारीसन डाल्टन को दल से निकाल दिया। 1955 म 62 ससत्सदस्यो ने हाइड्रोजन बम के निर्माण का विरोध किया और उसके उपयोग पर भारी पाबदिया लगाने की माग रखी। बीवान ने पिछले वर्ष जमनी के पुनशस्त्रीकरण का विरोध किया था तथा छाया मत्रिमडल से त्यागपत्र दे दिया था। लेकिन जब ईडन सरकार द्वारा स्वेज पर आक्रमण के फलस्वरूप श्रमदल की विजय के आसार नजर आने लगे तो वह उसम वापस शामिल हो गया क्योंकि दल की विजय के लिए फूट का निरसन आवश्यक था। लेकिन सुयोग्य हैराल्ड मैकमिलन नया प्रधानमत्री बना तथा उसने रूढिवादी दल को सत्ता म बनाए रखा।

इधर दल का वामपक्ष अधिकाधिक उग्रवादी नीतियो की माग कर रहा था, उधर दल की कार्यकारिणी 1955 से ह्यू ग गैटसकेल के हाथो मे थी और वह दल के कार्यक्रम मे सम्मिलित समूहीकरण सबधी अशो को सशोधित करना चाहती थी। चुनावो म बार बार और अधिक करारी हार के कारण ही दलीय प्रयोजनो के सशोधन की माग उठी थी। दल के सामन यह प्रश्न उठ खडा हुआ था कि क्या युद्धोत्तर ब्रिटेन म वर्गीय आधार वाला श्रमदल व्यावहारिक दृष्टि से समुचित माना जा सकता है? गैटसकेल का अनुमान था कि राष्ट्रीयकरण की माग

निर्वाचना की दृष्टि से बहुत हानिकारक सिद्ध हो रही है तथा वह पूजीवादोत्तर समाज मे अप्रासगिक भी है। 'यू फबियन एसेज (1952) और सी० ए० आर० क्रासलैंड की पुस्तक 'द फ्यूचर आफ सोशलिज्म' (1957) के आधार पर वह मिश्रित अर्थव्यवस्था का हामी बन गया था। दोनो ग्रथो मे 1946 से 1951 के दौरान श्रमदल की कमियो का विश्लेषण किया गया था तथा यह बताया गया था कि भविष्य मे सत्ता प्राप्त करने पर उसे किस कायक्रम का अनुसरण करना चाहिए। यह कायक्रम तो दल के अध्यक्ष के लिए एक प्रकार से पाठ्यपुस्तक ही बन गया था। क्रासलैंड का सुझाव था कि दल को अपना सैद्धातिक लबादा उतार फेंकना चाहिए तथा निजी और सावजनिक उद्योगो के आधुनिकीकरण पर शक्ति लगानी चाहिए। उसने लिखा कि उद्योगो की सफलता की कसौटी कायक्षमता है न कि स्वामित्व। उसने यह भी कहा कि आर्थिक लक्ष्यो के बजाय सामाजिक लक्ष्यो, तथा वर्गीय भेदभाव मिटाने के लिए शिक्षाप्रणाली म सुधार पर बल दिया जाना चाहिए।

इस सबके बावजूद गटसकेल दल अपने कायक्रम की चौथी धारा को निकालने के लिए तैयार नही कर पाया जिसमे उत्पादन और विनिमय के उपकरणो (साधनो) पर सावजनिक स्वामित्व स्थापित करने का आवाहन किया गया था। 1960 म श्रमदल के स्कारबारो सम्मेलन मे वह परमाणविक निशस्त्रीकरण की नीति के प्रति वामपक्षीय विरोध पर हावी नही हो पाया। वामपक्ष परमाणविक शस्त्रो का एकपक्षीय निशस्त्रीकरण चाहता था। 1931 के बाद से दलीय सम्मेलन म एक श्रमदलीय नेता की किसी महत्वपूण मुद्दे पर पहली बार पराजय हुई। वास्तव म श्रमसघ एक लबे अरसे तक मध्यमार्गी रहने के बाद अब वामपक्ष का समथन करने लगे थे। उनका प्रमुख प्रवक्ता 'ट्रासपोट ऐंड जनरल वक्स यूनियन' का सघपवादी अध्यक्ष फ्रक कजिस था जिसने समूचे परमाणविक प्रतिरक्षण का विरोध किया और यह इच्छा प्रकट की कि दल को ऐसा कायक्रम अपनाना चाहिए जिससे समाजवाद का स्वर उभरता हो। दलीय सम्मेलनो म श्रमसघो के हाथो म मतो की बहुसख्या होती थी अत उनके विरोध के कारण दल के नेतृत्व की पराजय निश्चित हो जाती थी।

किंतु इस वामपक्षीय दबाव के कारण दल अपने गैर सैद्धातिक पथ से विचलित नही हुआ। उसी स्कारबारो सम्मेलन ने कायकारिणी द्वारा की गई उस घोषणा की भी पुष्टि की जिसमे यद्यपि वग सघष और समाजवादी प्रयोजनो के सिद्धातो की दुहाई दी गई थी तथापि यह स्वीकार किया गया था कि 'अथव्यवस्था म सावजनिक और निजी दोनो प्रकार के उद्यमो का स्थान है।' जाहिर है कि

दल अपने वामपक्ष के बजाय मध्यवग को जीतने के बारे मे अधिक दिलचस्पी प्रकट कर रहा था तथा नागरिको के मन पर यह छाप डालने की कोशिश कर रहा था कि वह रूढिवादी दल का शत्रु होने के बजाय प्रतिद्वद्वी अधिक है। गैंटसकेल ने एकपक्षीय परमाणविक निशस्त्रीकरण की नीति के प्रति अपना विरोध जनता के सामने रख दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि उस नीति के समथक अल्पसख्या म रह गए। तीन श्रमसघो ने उसका समथन करना बद कर दिया। अगले वर्ष ब्लैकपूल सम्मेलन मे दल के नेतृत्व को तीन चौथाई मत मिले। कायकारिणी ने यह बात स्पष्ट कर दी कि यूरोपीय देशो के साथ ब्रिटेन के निकट सबधा के बारे मे वामपक्ष का जो प्रतिकूल रवया है वह उससे सहमत है। गैंट्सकेल ने साझा बाजार मे शामिल होने का विरोध किया और कहा कि उससे 'एक हजार वष के इतिहास पर पानी फिर जाएगा।' इस प्रश्न पर कजिस ने उसका अनुमोदन किया।

गैंटसकेल की युवावस्था म ही मत्यु हो गई और उसका स्थान हैराल्ड विलसन ने ग्रहण किया। इसस दल के विकास मे कोई परिवतन नही आया क्योकि विलसन जिसने बीवान का समथन किया था अब पहले की तरह सघषवादी नही रहा था। श्रमदल ने 1964 के चुनावो मे इस्पात के पुनराष्ट्रीयकरण, भवन निर्माण के लिए सरकारी सहायता तथा आर्थिक वद्धि की दर को वापस स्थिर करने क कायक्रम के आधार पर लोकसभा म 24 स्थानो का बहुमत प्राप्त कर लिया। इसके बाद दल को अनेक सफलताए मिली वृद्धावस्था निवत्ति वतन मे वृद्धि डाक्टरो के नुस्खो पर लगाए गए करो की समाप्ति पूजीगत लाभ पर कराधान, मत्युदड की समाप्ति , गहनिर्माण के लिए दी जाने वाली सहायता म वृद्धि तथा मजदूरी की दरो मे वद्धि की अनुमति (यह वद्धि उस सरकारी मडल ने सुझाई थी जिसकी स्थापना मुद्रास्फीति पर नियत्रण लगान के लिए की गई थी)। दो वष बाद विलसन के प्रयास से दल को 64 का बहुमत प्राप्त हो गया। लेकिन उसकी सरकार आर्थिक समस्याओ म फस गई, विशेषत प्रतिकूल भुगतान सतुलन की समस्या मे। निर्यात को बढावा देने के लिए 1967 के अत म पौड का अव मूल्यन करना पडा। राडेशिया के गोरे अल्पसख्यक ब्रिटिश शासन के प्रति बगावत करके उससे अलग हो गए तथा सरकार ने रोडेशिया की बागी सरकार को कुछ ही सप्ताहा के भीतर गिराने के लिए नाकाबदी की जो नीति अपनाई वह बुरी तरह विफल हो गई।

विलसन सरकार ने जब अमरीका की वियतनाम नीति का अनुमोदन किया तो दल के वामपक्षीय सदस्या म गहरा रोष उत्पन्न हो गया। विलमन सयुक्तराज्य

अमरीका के साथ निकट सबध बनाए रखने के लिए कृतसकल्प था। इसके पीछे अपने देश के आर्थिक कष्टो के निवारण की भावना भी निहित थी। जब विलसन ने नवस्वाधीन पूर्वी अफ्रीकी गणराज्यो द्वारा खदेडे गए एशियाई नस्ल के ब्रिटिश नागरिको को ब्रिटेन मे घुसने से रोक दिया तब उसकी विश्वसनीयता म और भी कमी हो गई। अश्वेत नस्लो के लोगो के बडे पैमाने पर आव्रजन की सभावना स देश घबरा गया था। अतत उसने साझा बाजार के प्रति अपने रवये को उलट दिया। वह एक लबे समय तक साझा बाजार म ब्रिटेन के प्रवेश का विरोधी रहा था। उसने साझा बाजार के सामने ऐसी शर्तें रखी जिन्हे वह कभी स्वीकार नही कर सकता था, जैसे राष्टमडल (कामनवेल्थ) व्यापारिक लाभो को बनाए रखने की शत। 1966 मे विलसन साझा बाजार मे ब्रिटेन के प्रवेश के पक्ष म हो गया। उसने कहा कि ब्रिटेन और यूरोपीय आर्थिक समुदाय आपस मे मिलकर अमरीका के प्रभुत्व का भली प्रकार प्रतिरोध कर सकते है। जून 1970 मे विलसन की अचानक पराजय और साझा मडी म ब्रिटेन के प्रवश से सबधित चर्चाओ म रूढिवादी प्रधानमत्री एडवड हीथ की सफलता पर विलसन और श्रमदल के वामपक्ष ने उसका विरोध किया किंतु वे उसके प्रति ससदीय अनुमति को नही रोक पाए।

श्रमदल की पराजय लोकमत जानने के लिए सगह किए गए सर्वेक्षणो के आधार पर निकले निष्कर्षों के विपरीत सिद्ध हुई। देश के सामने उज्वल आर्थिक भविष्य नजर आ रहा था क्योकि अवमूल्यन तथा आयात प्रतिबध अपने प्रयोजनो म सफल सिद्ध हो रहे थे हालाकि उत्पादकता म वृद्धि नही हो पाई थी लेकिन दल मुद्रास्फीति को समाप्त नही कर पाया था, 1953 के मुकाबले म पौंड की क्रयशक्ति लगभग आधी रह गई थी उसके साथ ही करो की दर म वद्धि हुई थी और मजदूरी की दर मे वृद्धि पर पाबदी लगा दी गई था। इन सब बाता का मतदाताओ पर निर्णायक प्रभाव पडा तथा रूढिवादी दल लोकसभा म 31 सदस्यो का बहुमत प्राप्त करन म सफल हो गया। चुनाव अभियान के दौरान श्रमदलीय नेता समाजवाद का जिक्र तक नही कर पात थे।

पीछे मुडकर देखा जाए तो ज्ञात होगा कि गैटसकेल द्वारा प्रतिपादित सशोधन वाद विजयी हो गया है। वहा यह प्रश्न उठ खडा हुआ कि क्या श्रमदल अमरीकी राजनीतिक दल जैसा स्वरूप ग्रहण कर लेगा यानी वह एक निर्वाचन यत्र बन जाएगा तथा सैद्धातिक अथवा जन आदोलन के आधारो का परित्याग कर देगा? श्रमदल के अधिकाश तरुणतन ठीक यही चाहते हैं। व उन, दूरदशन विज्ञापन तथा जनता की आवश्यकताओ को समझन के लिए बाजार अनुसधान तकनीको

का आधुनिकीकरण चाहते हैं और दलीय कार्यक्रमों को सुसंगत बनाना चाहते है। इसके अनुसार व यह चाहते हैं कि श्रमदल अपने सैद्धांतिक अवशेषों का भी परित्याग कर दे और नागरिकों के मन पर एक अधिक गतिशील बिंब का निर्माण करे। उनका कहना है कि यह बिंब देश के निर्वाचकों को पसंद आएगा क्योंकि व वर्गहीन और असिद्धांतवादी होते जा रहे हैं। इसके विपरीत वामपक्ष के लोग अभी तक वह मानते है कि दल समाजवाद के अभियान के प्रति प्रतिबद्ध है। एक नए और क्रांतिकारी वामपक्ष के उदय ने इस स्थिति को और भी अधिक जटिल बना दिया है। इस क्रांतिकारी वामपक्ष को मई 1968 के फ्रांसीसी छात्रों के विद्रोह से बल मिला। इसमे अधिकांश युवा है, और हालांकि उनसे इस बात का आग्रह किया जाता है कि वे अपनी आवाज को प्रभावशाली बनाने के लिए दल म शामिल हो जाए तथापि वे दल मे शामिल नही हुए है। यह नया वामपक्ष संभवत सही ही कहता है कि समाजवाद की स्थापना संसद के माध्यम स नही हो सकगी। उधर श्रमदल के नियमित सदस्यों का यह विचार भी संभवत सही है कि समाजवाद क्रांति स नही आएगा।

इस बात को पूरी तरह भुला दिया गया है कि गैटसकेल ने उत्पादन और वितरण के साधनो पर सावजनिक स्वामित्व की स्थापना के लक्ष्य का विरोध नही किया था। यहा सावजनिक स्वामित्व का अथ समूहीकरण नही लगाना चाहिए, साव जनिक स्वामित्व क अनेक स्वरूप है जैसे राज्य का स्वामित्व नगरपालिकाओ का स्वामित्व और सहकारी संघो का स्वामित्व। आज श्रमदल का प्रगतिशील और सुधारवादी दल कहा जा सकता है जिसका लक्ष्य जल्दी से सत्ता मे लौट जाना है। दल के भीतर संशोधनवादी ज्वार के लिए दल द्वारा कल्याणकारी राज्य की रचना उसकी संसदीयत की दीर्घ परपरा, ब्यौरेवार नीति विषयक चिंतन पर उसका प्राय एकाधिकार (उदाहरणाथ, बीवानवादियो को कराधान की जटिलताओ और कल्याणकारी राज्य के प्रशासन म बहुत कम दिलचस्पी थी), और गैटसकेल के नेतृत्व के गुण [7] आदि तत्व जिम्मेदार रह हैं तथापि संशोधनवाद की यह विजय बहुत महगी सिद्ध हुई, उसने अपने पीछे कटुता और शंका का वातावरण छोड दिया।

जमनी के समाजवादियो ने मार्क्सवाद को तिलांजली दी

श्रमदल अपन कायक्रम के समाजवादी पक्षो का परित्याग करके सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टियो से प्रगतिशील उदारवादी दल मे परिणत होने की धमकी दे रहा था। जमनी के सोशल डिमाक्रेटिक दल ने पहले ही यह स्वरूप ग्रहण कर लिया है। दल म ऐसे सदस्यों की संख्या बढती जा रही थी जो यह मानत थे कि

दल इस कारण चुनावो म विजयी नही हो सका क्योकि उसने मार्क्सवादी सिद्धातो का परित्याग कर दिया है तथा उसने अपने आपको समूची जनता के साथ जोड लिया है। 1954 मे अपने बर्लिन सम्मेलन मे एस० पी० डी० ने सरकार की आर्थिक नीतिया की कमजोरियो पर ध्यान आकर्षित करने और राष्ट्रीयकरण की उपक्षा करने का निश्चय किया। उसने राष्ट्रीय आय के अधिक समान वितरण और आर्थिक नियोजन पर बल दिया। वाइमर गणराज्य के जमान की तरह दल पर दक्षिण और वामपक्षा की ओर से आक्रमण नही हो रहा था अत दल क बुनियादी प्रयोजनो का बचाव पेश करने की कोई आवश्यकता ही नही रह गई थी। वैदेशिक सबधो मे अधिक स्थिरता, शीतयुद्ध म थमाव, श्रमिक वग की अपक्षाकृत समद्धि और शूमाकर की मत्यु के कारण सिद्धातो की दुहाई दने की आवश्यकता समाप्त हा गई तथा एक व्यापकतर निर्वाचितीय आधार निर्माण करन का अवसर मिल गया। इसके अतिरिक्त नेताओ की एक नई पीढी एस० पी० डी० की कायकारिणी मे प्रविष्ट हुई इसमे वे लाग थे जिन्हें युद्ध के बाद लोकप्रियता मिली थी। जिस समय उन्होंने अपनी स्थिति को मजबूत बनाया उस समय दल का सगठन सुधारवादियो के नियत्रण म था।[8]

1957 की पराजय और उच्च सदन मे क्रिश्चियन डिमाक्रेटिक पार्टी द्वारा पूण बहुमत की प्राप्ति से उन लोगो को नया मसाला मिल गया जो दल द्वारा मार्क्स वादी आधार के परित्याग की हिमायत कर रहे थे। उस वप तथा अगले वप दल के सम्मेलना मे स्वीकृत प्रस्तावो से दल की नीति मे उन परिवतना का पूव सकेत मिलता है जो आगे जाकर गोडेसबग म किए गए। 1959 म बड गोडेसबग म स्वीकार सम्मेलन मे एक नया कायक्रम स्वीकार किया गया जिसन 1925 म हाइडेलबग म किए गए कायक्रम का स्थान ले लिया। नए कायक्रम ने एक लबे अरसे से प्रतिपादित आर्थिक नियतिवाद के स्थान पर एक मानवतापरक आदश व्यक्ति द्वारा आत्म परिपूणता की प्राप्ति, प्रस्तुत किया। दल के भीतर विचारा की बहुलता को स्वीकार किया गया और यह तय किया गया कि जिन बुनियादी नैतिक मूल्यो के बारे म दल सवसम्मति का निर्माण हो सके उन्हें ही लागू किया जाए। नए कायक्रम म कहा गया कि समाजवाद की जडें अपरिहायत ईसाई नीतिशास्त्र, शास्त्रीय दशन और मानवतावाद म निहित हैं।

सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी न स्वय को केवल सवहारा वग क नही वरन समूची जनता के साथ तद्रूप कर लिया। उसने मिश्रित अथव्यवस्था की हिमायत की और उस समूहीकरण तथा पूजीवाद क बीच का माग बताया। उसन मुक्त बाजार की व्यवस्था का स्वीकार कर लिया तथा समूची अथव्यवस्था क लिए केंद्रीय नियोजन

की धारणा को स्वीकार कर दिया। उसने राष्ट्रीयकरण के अंतिम सत्य' का परित्याग कर दिया। नए सूत्र म 'ययासभव अधिकतम होड तथा महज आवश्यक नियोजन' का विधान किया गया था। घोषणा म कहा गया कि महत्व सपत्ति का नही आर्थिक सत्ता का होता है अत दल आर्थिक सत्ता के केंद्रीयकरण का विरोध करेगा भले ही वह राज्य के हाथो म हो या निजी व्यवसायियो के हाथो मे हो। किंतु उसम आर्थिक विकेंद्रीयकरण की माग स्पष्ट शब्दो म नही की गई थी। प्रबधकारी सरचनाओ मे श्रमिको जनता तथा उपभोक्ताओ के हितो के प्रतिनिधित्व के बारे मे भी अस्पष्ट भाषा का प्रयोग किया गया। चच विरोधी वक्तव्य नही दिए गए तथा सघीय गणराज्य के बुनियादी कानूनो के पालन की सिफारिश की गई। दल ने निश्चय कर लिया कि सघष लोकतत्रीय पद्धति स' किया जाएगा। उसने साम्यवादियो पर आरोप लगाया कि वे उग्र रीतियो से स्वतत्रता का दमन कर रहे है तथा व्यक्तियो के अधिकारो और व्यक्तियो तथा जनता के आत्मनिणय के अधिकार का उल्लघन कर रहे हैं।

कायक्रम मे मार्क्स का किंचित उल्लेख नही किया गया, न उसम 'वग' और 'वगसघष' सरीखी शब्दावली का प्रयोग किया गया। उसम कोई सामाजिक सिद्धात प्रस्तुत नही किया गया, तथा लोकतत्र को साधन के बजाय साध्य मान लिया गया। सपूर्ण अभिलेख मे बहुत सयत भाषा का प्रयोग किया गया। एस० पी० डी० ने शासन करने की अपनी तैयारी और क्षमता प्रकट करने के लिए अपनी अब तक की विदेश नीति का भी परित्याग कर दिया। दल ने 1952 मे शूमाकर योजना का (उसके समथकों मे धमपुरोहितो और पूजीपतियो के होने के कारण) विरोध किया था तथा उसन यूरोपीय प्रतिरक्षा समुदाय (ई०डी०सी०) को जमनी के एकीकरण तथा पश्चिमी जगत और सोवियत सघ के बीच की खाई पाटने के माग म बाधा मानकर अस्वीकार कर दिया था। दल ने उन राज्यो के साथ सहयोग करना पसद किया था जिनम सबल समाजवादी आदोलन हो। लेकिन अब उसने उत्तर अतलाक सधि सगठन (नाटो) का जमनी के एकीकरण की अनिवाय शत मान लिया तथा कहा कि उसके लिए पश्चिमी जमनी को अपना समुचित अश चुकाना होगा, अर्थात दल ने सी० डी० यू० के विदेश नीति कायक्रम की बुनियादी मान्यताओ को स्वीकार कर लिया।

1961 के चुनावो मे एस० पी० डी० की स्थिति मे मामूली सा सुधार हुआ। उसे 36 प्रतिशत और सी० डी० यू० को 45 प्रतिशत मत मिले। चासलर पद के लिए उसका उम्मीदवार पश्चिमी बर्लिन का महावीर आकषक विली ब्राट था। वह दिसबर 1963 मे ओलेनहावर की मत्यु के पश्चात दल का अध्यक्ष बना था।

1965 के चुनावो मे दल को एक और निराशा का सामना करना पडा। उसकी पराजय से नगरपालिका और क्षेत्रीय समितियो के स्तरो पर राजनीतिक अनुभव वाले व्यक्तियो की सख्या मे वृद्धि को प्रोत्साहन मिला। क्या एस० पी० डी० क भीतर उन लोगो को अपने विचार प्रकट करने का पर्याप्त अवसर दिया गया जो निरतर वृद्धिशील यथार्थवादी दृष्टिकोण स्वीकार करने के विरुद्ध थे। इस प्रश्न के उत्तर के लिए अधिक गहन शोध की आवश्यक्ता होगी तथापि 1959 मे समालोचनाकारी एस०डी०एस० (जर्मन ऐसोसियेशन आफ सोशलिस्ट स्टूडेंटस) को दल म से निकाल दिया गया। चार साल बाद विरोधी पत्रिका डि एडर जीटुग' को साम्यवादी चाल बताकर उसकी भर्त्सना की गई, उसका सचालन वोवाटस के भूतपूर्व सपादक कर रहे थे।

नवबर 1966 मे एरहार्ड सरकार के पतन के बाद एस० पी० डी० के सामने इसक सिवाय कोई रास्ता ही नही बचा कि वह सी० डी० यू० तथा उससे सबद्ध बवेरिया समाजवादी दल के साथ महागठबधन म शामिल हो। क्रिश्चियन डिमाक्रेटस फ्री डिमाक्रेटिक पार्टी के साथ मिलकर शासन नही करना चाहते थे, वे उसे अविश्वसनीय साझी मानते थे लकिन उन्हें पूर्ण बहुमत भी प्राप्त नही हुआ था कि वे अकेले ही सरकार बना सकते। दूसरी ओर एस० डी० पी० और एफ०डी० पी० को सयुक्त रूप स 6 मतो का बहुमत प्राप्त था। फ्री डिमाक्रेटिक पार्टी क लोग उदारवादी थे और उनका आर्थिक कार्यक्रम क्रिश्चियन डिमाक्रेटिक यूनियन के साथ मेल खाता था वे कुछ सीमा तक राज्य के हस्तक्षेप के प्रति सहमत थे लेकिन राज्य और चर्च के बीच स्पष्ट रूप से भेद करते थे। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह थी कि एफ० डी० पी० क सदस्यो म स एक अल्पसख्यक गुट पूर्वी जर्मनी अर्थात जर्मन डिमाक्रेटिक रिपब्लिक को राजनीतिक मान्यता देने के पक्ष मे थे।

इस राजनीतिक गठबधन से सघीय जर्मन गणराज्य का गभीरतम राजनीतिक सकट हल हो गया। इसके बावजूद एस० डी० पी० के अनेक सदस्यो ने 1 दिसबर 1966 को चासलर कुर्त कीसिंजर के मत्रिमडल मे अपने दल के प्रवेश पर नाराजगी जाहिर की। सत्ता म भागीदार बनने से दल को लाभ प्राप्त हुआ। दल के मुख्य नीति निर्देशक हर्बर्ट वेह्नर ने पहले ही इस बारे म भविष्यवाणी कर दी थी। इससे एस० डी० पी० पर से स्थाई विरोधी दल होने का कलक धुल गया तथा उसे अधिक विहितता प्राप्त हो गई। उसने अपनी शासन क्षमता सिद्ध की तथा उसके नेता, ब्राट (वैदेशिक सबध विभाग का मत्री) था जनता की निगाहो म आए। सत्ता म आने के फलस्वरूप दल अधिक दृढ नीतिया प्रस्तुत कर पाया तथा इस प्रकार उसने मतदाताओ को 1969 और 1972 म उसके बारे म अधिक

विश्वासपूर्ण राय बनाने का अवसर दिया। ब्राट ने पूव की ओर स्थित साम्यवादी जगत के साथ नए सबधो का द्वार खोला। उसने युगोस्लाविया और रूमानिया के साथ राजनयिक सबधो की पुनर्स्थापना की तथा अन्य साम्यवादी राज्यो के साथ सबधो की स्थापना के लिए माग प्रशस्त कर दिया। जमनी के घरेलू मामलो के मत्री के नाते वेहनर ने जमन डिमाक्रेटिक रिपब्लिक के साथ सबधो के विम्रता का प्रस्ताव रखा। आर्थिक मामलो के मत्री काल शिल्लर न देश को उस मदी के चगुल से बाहर निकाला जिसके कारण 1966 में एरहाड की सरकार का पतन हुआ था। फिर भी राजनीतिक क्षेत्रो मे यह भय व्याप्त था कि विरोधी पक्ष के अभाव मे जमनी के लोकतत्र का बिंब उज्वल नही हो सकता।

28 सितबर 1969 के चुनावा के परिणामस्वरूप एस० डी० पी० एफ० डी० पी० की सयुक्त सरकार का पुनगठन सभव हो गया। आने वाले वर्षों मे सबस बडा अभिनव वैदेशिक मामलो के क्षेत्र म लिया गया। पहले तो सोशल डिमाक्रेटस, उसके बाद फ्री डिमाक्रेटस और अतत जनता का एक बडा भाग इस बारे मे सजग हो गया कि अडेनावर की नीति को रद्द किए बिना सयुक्तराज्य अमरीका और फ्रास के नियत्रण से अधिक स्वतत्रता प्राप्त नही की जा सकती, तथा पूर्वी जमनी और सोवियत सघ के साथ राष्ट्र के सबधा को और अधिक यथार्थवादी भूमिका पर खडा नही किया जा सकता। अगस्त 1970 म रूस के साथ अनाक्रमण सधि की गई। इसके बाद जमन डिमाक्रेटिक रिपब्लिक और पोलड के साथ सधिया की गई। इनके द्वारा दोना के बीच ओडर नीस रेखा को सीमा मान लिया गया तथा (स्थायित्व के स्थान पर) जमनी की सीमाओ की 'अनुल्लघनीयता' की पुष्टि की गई। 1971 म बर्लिन के स्तर के बारे मे समझौता हो गया तथा उसी साल ब्राट को नोबल शाति पुरस्कार मिला। 19 नवबर 1972 के चुनावो मे दल न पहली बार रूढिवादी विरोधी पक्ष पर सघीय गणराज्य की स्थापना (1949) के बाद विजय प्राप्त की, जिससे उसकी पूर्वीय नीति के प्रति मतदाताओ की व्यापक सहमति का परिचय मिला।

जमनी के सिक्के माक का पुनर्मूल्याकन करके शिल्लर न 1966-67 की मदी का सफलतापूवक सामना किया था। उसन जर्मनी की जनता को इस बारे मे आश्वस्त कर दिया कि एस० पी० डी० उनके जीवन स्तरो का सरक्षण करने मे समथ है तथा उसन यह भय दूर कर दिया कि पूण राजगार की स्थिति उत्पन्न करने के लिए दल मुद्रास्फीति को बढावा देगा। दल कैथालिक समूहो और मध्यवग मे प्रवश करन लगा। सी०डी०यू० न और अधिक रूढिवादी बिंब अपना लिया तथा उसे देहाती क्षेत्रा म अधिक समर्थन मिला।

यद्यपि पश्चिमी जमनी म साम्यवादी दल 1969 म फिर स स्थापित हो गया है तथापि देश के मतदाओ ने उसके प्रति विनेप रुचि नही प्रक्ट की है। साम्यवादी दल एस० पी० डी० के वामपक्षीय तत्वा की सहानुभूति प्राप्त करन की चेष्टा कर रहा है। प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से तथाकथित "यू लैफ्ट (नव वामपथ) अधिक महत्वपूण माना जा सकता है। एस० पी० डी० के युवा तत्व पूजीवाद के साथ किए गए दल के समझौतो के कारण सैद्धातिक दृष्टि से कुठा महसूस करन लगे है। दल के नवमाक्सवादी तत्व उसके उस नेतृत्व की अवहलना करत है जो साम्यवादिया के साथ सहयोग पर पाबदी लगाता है। व यह महसूस करत है कि क्रिश्चियन डिमाक्रेटस द्वारा स्थापित तथा समाजवादियो द्वारा अनुमोदित सह निर्धारण' की योजना की अपेक्षा प्रबध सबधी निणयो म श्रमिको की साझादारी की युगास्लावियाई पद्धति अधिक साथक है। व जमनी के औद्योगिक जीवन म सरचनात्मक सुधार चाहते है तथा यूरोपीय आर्थिक समुदाय क अतगत बहुराष्ट्रीय निगमा की सत्ता से टक्कर लेने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिकसघीय कायवाही सगठित करने का उत्सुक है उनकी व्यूहरचना का उद्देश्य स्थानीय सरकारा पर उसी प्रकार आधिपत्य जमाना है जिस प्रकार पहले सशोधनवादियो न दलीय नौकरशाही से टक्कर ली थी।

चुनावो म दल की सफलता का श्रेय उसके नए असद्धातिक कायक्रम को किस सीमा तक दिया जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हमार पास कोई ठोस प्रमाण नही है। उस सफलता के पीछे कुछ अ य तत्वो का हाथ भी रहा है, जसे शीतयुद्ध मे ढिलाई आना, कैथालिक चच अथवा पोप पाल द्वारा एस० पी० डी० को पहल की अपेक्षा अधिक मान्यता देना, शहरी सवहारा मता के आकार मे वद्धि और सभवत देहाती मना मे कमी, तथा प्रतिष्ठित अडेनावर के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति की खोज मे सी० डी० यू० की विफलता।

जमनी क समाजवादिया को यह देखकर विशेष रूप से सतोष मिला कि उनकी अपनी विजय के चद महीना के भीतर ही आस्ट्रियाई समाजवादी दल न भी विजय प्राप्त की। 1 माच 1970 का आस्टियाई समाजवादी दल न 25 वष पुरान रूढ़िवादी अथवा सयुक्त शासन का अत कर दिया। दल ने धीरे धीरे सशोधनवादी कायक्रम अपना लिया था, तथा अपना क्रातिकारी और चच विरोधी स्वर का परित्याग कर दिया था। 1966 क चुनाव म वह बहुत थोडे मता स बहुमत खो बैठा था लकिन उस समय उसन सयुक्त मत्रिमण्डल म भाग लन के बजाय अपन लिए विरोधी पक्ष की भूमिका चुनी थी। चार मास बाद ब्रूनो क्रीस्की न समाजवादी सरकार का निर्माण किया तथा वह आस्ट्रिया का पहला यहूदी

प्रधानमंत्री (चासलर) बना।

समकालीन फ्रांसीसी और इतालवी समाजवाद, तथा साम्यवाद

वामपक्ष में अपेक्षाकृत बडे तथा अधिक शक्तिशाली साम्यवादी दलो की उपस्थिति के कारण फ्रासीसी और इतालवी समाजवादी दलो की स्थिति बहुत नाजुक हो गई था। वे यह खतरा नही उठा सकते थे कि उनपर यह आरोप लगाया जाए कि वे सवहारा के हितो के प्रति विश्वासघात कर रह हैं क्योकि इस तरह तो साम्यवादी दल अपनी अधिक सदस्य सख्या अधिक मतदाताओ के समथन और श्रमसघो पर नियत्रण के द्वारा मैदान मारकर ले जाते। अत उन्होने मार्क्सवादी आदर्शों का परित्याग नही किया। इसके बावजूद एक लबे समय तक विरोधी पक्ष मे बने रहने अथवा रूढिवादियो के प्रभुत्व मे स्थापित सयुक्त सरकारो म गौण भागीदार की तरह शामिल होने के परिणामस्वरूप इन देशो के समाजवादी दलो म सशोधनवादी वत्ति का उदय हो गया था तथा उन्होने वर्गीय सघपशीलता का परित्याग कर दिया था। दोनो राष्ट्रो मे वामपक्ष तब तक सत्ता नही प्राप्त कर सकता जब तक कि उसका एकीकरण न हो जाए। उदाहरण के लिए फ्रास ही एकमात्र ऐसा देश है जिसमे वामपक्ष को पिछले डेढ दशक से सत्ता नही मिली है।

फ्रासीसी समाजवाद ने इतना लबा समय विरोधी पक्ष मे बैठकर बिताया है अत उसके भीतर विसहमति के तत्वो का उभरना बहुत स्वाभाविक माना जाएगा। दल के भीतर लोकतत्र के अभाव की शिकायतें बार बार की गई हैं तथा वे बहुत सीमा तक सही हैं। आलोचको ने उसकी कायकारिणी पर यह आरोप लगाया है कि यह सगठन और उपकरणो के मुकाबले मे सिद्धातो और व्यूह रचना के प्रश्नो को गौण स्थान देती रही है। यह भी कहा जाता है कि महत्वपूर्ण पदो पर उन लोगो की ही नियुक्ति की जाती है जो परीक्षित और विश्सनीय अर्थात नेतत्व के प्रति वफादार हैं जबकि अपेक्षाकृत युवा सदस्यो अथवा नेतत्व के विचारो से असहमत लोगो को छोड दिया जाता है। सैद्धातिक दृष्टि से कायकारिणी का निर्वाचन दल के सदस्य करत है और वह समस्त दष्टिकोणो की प्रतिनिधि होती है किंतु व्यवहार म दल पर महासचिव का प्रभुत्व स्थापित हो गया है। वह चद शक्तिशाली क्षेत्रीय मघो पर निभर रहता है जो उसक लिए दलीय सम्मलनो म बहुमत जुटा दते है। विसहमत लोगो को दल की कायकारिणी परिषदो अथवा उसके प्रकाशनो म पाव टिकाने की जगह भी नहीं मिल पाती। परिणामत दल की कायकारिणी की आलोचना अकस्मात और उग्र रूप म

प्रकट होती है तथा उसकी अभिव्यक्ति अनौपचारिक बैठकों तथा प्रकाशनों में अभिव्यक्त होती है।

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत एस० एफ० आई० ओ० पर नौकरशाही और बुजुआ वर्ग का बढ़ता हुआ वर्चस्व 1945 के बाद अधिक तीव्र हो गया। दल के सदस्यों की भरती और सफेदपोश कर्मचारियों, विशेषत लोकसेवकों (सरकारी कर्मचारियों) में से की जाती थी। राष्ट्र के निचले स्तर के सरकारी कर्मचारियों के प्राय एक तिहाई भाग ने समाजवादी दल की सदस्यता ग्रहण कर ली थी। यह वर्ग जैसे जैसे पुष्ट होता गया वैसे वैसे दल की ओजस्विता में ह्रास होता गया। वह न तो जनता का समर्थन ही प्राप्त कर सका, न बुद्धिवादियों का समर्थन बनाए रख सका। उसके नाम की तरह उसके सिद्धांत भी 1905 में स्वीकार किए गए थे, उनमें केवल साम्यवादी विरोधी तत्व ही शामिल किए गए। निश्चय ही समाजवादियों के पास कोई सुसगत अथवा सावधानीपूर्वक नियोजित आर्थिक कार्यक्रम नहीं था। जिन लोगों ने आर्थिक कार्यक्रम पेश करने की कोशिश की उनमें आद्रे फिलिप सरीखे दल के सर्वश्रेष्ठ विचारक शामिल थे, लेकिन उन्हें दल में से बाहर खदेड दिया गया तथा इस प्रकार राजनीति उनके योगदान से हमेशा के लिए वंचित हो गई। एस० एफ० आई० ओ० के सदस्यों की संख्या धीरे धीरे कम होती गई तथा 1956 की सफलता को छोडकर यह क्रम सतत बना रहा। 1946 में उसके सदस्यों की संख्या साढ़े तीन लाख से भी अधिक थी जब कि 1960 में वह केवल एक लाख रह गई। 1945 के प्रथम युद्धोत्तर निर्वाचनों में उसे 23 प्रतिशत मत मिले थे तथा उसके 139 उम्मीदवार संसदसदस्य चुन गए थे। 1962 में उसे केवल 12 से 15 प्रतिशत मत मिला और उसके संसत्सदस्यों की संख्या 40 रह गई।

फ्रांस के समाजवादी पूरे छठे दशक में राष्ट्रीय प्रश्नों पर भी विभाजित रहे। उसके बहुत से सदस्यों ने पूंजीवादी और कैथोलिक सरकारों के भीतर दल के आर्थिक और राजनीतिक एकीकरण का विरोध किया तथा इन सरकारों को ब्लैक इंटरनेशनल (काला संगठन) कहा। दल में जर्मनी के पुनशस्त्रीकरण के प्रश्न पर फूट पड गई। दल की कार्यकारिणी ने 1954 में दल के एक विशेष सम्मेलन में उसकी स्वीकृति का आग्रह किया मगर चेंबर आफ डेपुटीज (संसद का प्रथम सदन) में उसके सदस्यों ने यूरोपीय प्रतिरक्षा समुदाय संबंधी प्रस्ताव की पराजय में योगदान किया।

दल के सामने सबसे बडा आंतरिक संकट अल्जीरियाई युद्ध संबंधी विवादों से

ने मौलेट और गैस्टन डैफे सरीखे क्षेत्रीय नेताओ के नेतृत्व मे मई 1958 म द'गाल के राष्ट्रपति पद ग्रहण करने का समथन किया, और अगले नवबर मे उसके नए सविधान को भी मान्यता प्रदान कर दी। मौलेट सहित तीन समाजवादी द'गाल के मत्रिमडल मे शामिल हुए लेकिन एक वष के भीतर ही उन्होने त्यागपत्र दे दिए। शुरू म अपने समथन के बारे मे उन्होंने कहा कि हम दश म एक सैनिक तानाशाही और साम्यवादियो के नेतृत्व मे सगठित जनता मोर्चा, दोनो की सभावना टालना चाहते थे।

इसके बावजूद अनेक दलीय नेताओ और 5, 6 हजार सदस्यो ने द'गालवादी गणराज्य का विरोध किया। नवबर मे वे दल से अलग हो गए और उन्होने एक स्वतत्र समाजवादी दल का गठन कर लिया। इसका नेतृत्व एडुअड डफ्रे और भूतपूव मत्री अलेन सेवेरी ने किया। आगे जाकर यह दल एस० एफ० आइ० ओ० के अनेक विद्रोही वामपक्षीय गुटो के साथ मिल गया और इस तरह सयुक्त समाजवादी दल (पी० एस० यू०) की स्थापना हुई। कुछ असतुष्ट समाजवादी पाचवे गणतत्र के भीतर एक बहुत शक्तिशाली कायपालिका के विकास के विरुद्ध थे, उन्होने स्वतत्र राजनीतिक क्लबो के साथ जुडना पसद किया।

चौथे गणराज्य म दलीय नेतृत्व के प्रति वैमनस्य की भावना और दलीय सरचना के आधुनिकीकरण की चिंता उत्पन्न हो गई थी। एक शक्तिशाली राष्टपति शासन के विकास से उसे बल मिला तथा फ्रास के समाजवादी इतिहास मे पहली बार ब्यौरेवार प्रयोजनो और प्रक्रियाओ का उल्लेख करने वाला कायक्रम तैयार हुआ। तब तक दल के पास 1905 का एकता घोषणापत्र और 1946 का ब्लम का सिद्धातो सबधी वक्तव्य ही था। एस० एफ० आई० ओ० ससद म अल्पसख्यक मतो के बावजूद 1956 म अपनी सरकार बनान म सफल हो गया था। यह सरकार 16 महीने टिकी। नई व्यवस्था मे द'गालवादी ससतसदस्या की सख्या 231 थी। 1962 के चुनावो म समाजवादियो को कुल 66 स्थान मिले थे, तथा वे दूसरे नबर का दल थे। गणराज्य के राष्ट्रपति द'गाल के हाथा म बहुत भारी शक्ति केंद्रित हो गई थी। जाहिर है कि दल का आकार सफलता की सभावनाओ की दृष्टि स बहुत महत्वपूण था। नई परिस्थितियो ने एस० एफ० आई० ओ० की भूमिका और उसके भविष्य के बारे मे विवाद उत्पन्न कर दिया।

भूतपूव समाजवादी ग्रहमत्री जूनेम मौश ने कुछ समय पहले यह सुझाव दिया था कि अध्ययन मडलो का निर्माण किया जाए। इस सुझाव पर अमल किया और अध्ययन मडलो के प्रतिवेदनो को 1959 स 1961 के दौरान दल के मुख्यपत्र 'रवू

सोसियालिस्ते' म प्रकाशित किया गया। आद्रे फिलिप, जिसे 1958 मे मौलेट की 'तानाशाही' की भत्सना करने के कारण दल से निकाल दिया गया था, दल को मानवतावादी आयाम प्रदान करना और व्यापक आर्थिक नियोजन की दिशा मे मोडना चाहता था। विसहमत सदस्य क्रिश्चियन समाजवादियो और मैदे फ्रास के उग्रवादियो म मिल गए थे। इसके साथ ही वामपक्षी शक्तियो की एकता की अनिवार्यता पहले की अपक्षा अधिक स्पष्ट रूप से उजागर हो गई थी। इस एकता का अथ था साम्यवादिया के साथ एकता।

इन प्रयासो और चर्चाओ के परिणामस्वरूप एक नया 'बुनियादी कायक्रम' सामने आया जिसे दल ने 1962 मे स्वीकार किया। यह सशोधनवादी नही था, एस० एफ० आई० ओ० को गोडेसबग जैसी स्थिति का सामना नही करना पडा, तथा इस कायक्रम के प्रति प्राय उदासीनता बरती गई। इसके बावजूद यह 1946 के कदम की अपेक्षा अधिक सशोधनवादी कदम था। इसम समूहीकरण अथवा वगसघष का प्रत्यक्ष रूप से उल्लेख नही किया गया था। इसने उत्पादन के साधनो को उसी स्थिति म सावजनिक नियत्रण मे लाने की सिफारिश की जब आर्थिक दमन के कारण वैसा अनिवाय हो जाए। नए कायक्रम ने अथव्यवस्था के आधारभूत क्षेत्र के तीव्र विकास की आवश्यकता को तो महसूस किया लेकिन उसमे मध्यवग का हृदय जीतने की रीति-नीति का समावेश नही किया गया। मौलेट ने 1946 मे ब्लम पर यह आरोप लगाकर उसकी आलोचना की थी कि वह दल को पुन उग्रवाद की दिशा म ले जाना चाहता है। 15 वप बाद उसी मौलेट ने यह कहा कि एस० एफ० आई० ओ० केवल इस अथ मे क्रातिकारी रह गया है कि अथव्यवस्था को बदलना एक क्रातिकारी काय है, वह रक्तरजित विप्लव का समानाथक नही है।[9]

फ्रासीसी और इतालवी समाजवादी दल जमन और ब्रिटिश समाजवादी दलो की तरह सशोधनवाद को क्या नहीं अपना सकी? यहा यह उल्लेखनीय है कि जमन समाजवादी दल ने सशोधनवाद को खुल्लमखुल्ला अपनाया और ब्रिटिश समाजवादी दल न खामोशी से मगर यथायत। इन देशो के समाजवादी दलो के कठमुल्लापन की जड़ें खोजते समय इनकी क्रातिकारी परपरा की भूमिका की आसानी से उपेक्षा नही की जा सकती। उसका एक बडा कारण दोनो देशो म शक्तिशाली साम्यवादी दलो का अस्तित्व भी है तथा यहा यह बात आसानी से समझ म आ सकती है कि बहुदलीय व्यवस्था के भीतर समाजवादी दल सवहारा वग का समथन खोने का खतरा नही उठा सकते थे। ब्रिटेन और जमनी की तरह इन देशो म द्विदलीय व्यवस्था नही थी (उदारवादियो और फ्री डिमाक्रेटस के

अस्तित्व के कारण इन देशो की राजनीतिक व्यवस्थाए उन दोनो लेटिन गणराज्यो सरीखी नही बन जाती), जिसके कारण वहा अप्रतिबद्ध मतो की सख्या बहुत बडी न थी जिसे अपने पक्ष मे किया जा सकता। यह सही है कि वामपक्ष मे कुछ स्वतत्र मतदाता थे। वस्तुत वामपक्ष म प्रत्येक प्रकार के चिंतन की अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध था। यही कारण है कि चतुर्थ फ्रासीसी गणतत्र मे सशोधनवाद का उदय नही हो पाया, तथा इतालवी समाजवादी दल म सशोधनवाद निरतर अनुपस्थित रहा, लेकिन पाचवें फ्रासीसी गणतत्र म उसकी शुरुआत हो गई। विराट द'गालवादी बहुमत के कारण नई रीति-नीति अनिवार्य हो गई थी।[10]

सशोधन के साथ साथ साम्यवादियो के सग सयुक्त मोर्चा बनाने की माग भी उठ खडी हुई। उधर साम्यवादियो म भी सद्धातिक सशोधन के लक्षण प्रकट होने लगे। 1962 के चुनावो ने सयुक्त मोर्चे के लाभो को सामने ला दिया। दोनो दलो ने एक दूसरे के अधिक लोकप्रिय उम्मीदवारो के पक्ष मे अपने उम्मीदवारो को वापस लेकर ससद मे अपने सदस्यो की सख्या बढा ली। लेकिन सभी समाजवादी साम्यवादियो के साथ सहयोग की कार्यवाही का अनुमोदन नही कर सकते थे। गैस्टन डेफ्रे सरीखे लोगो ने गैर साम्यवादी वामपक्ष के साथ मिलकर एक नई राजनीतिक शक्ति का निर्माण करना और वामपक्ष को मध्य स्थिति की ओर खदेडना पसद किया। फ्रासीसी और इतालवी राजनीतिक जीवन म ये सब जटिलताए पैदा हुइ। परिवर्तन के लिए दबाव दक्षिणपक्ष और वामपक्ष दोनो ओर से एक साथ डाला जा रहा था।

शीतयुद्ध के आरभ से ही पश्चिमी समाजवादी जीवन का एक प्रमुख लक्षण साम्यवादियो का भय था। फ्रासीसी साम्यवादी दल विशेषत मास्को के आधिपत्य मे था, चौथे और पाचवे दशको म उसका पूरी तरह स्तालिनीकरण हो गया था। पी० एस० एफ० ने मार्शल टीटो के विचारो की कठोर भर्त्सना की थी। उसने उन विसहमत सदस्यो पर मुकदमे चलाए जिन्होने दल की नीति का अनुसरण करने से इकार कर दिया था। उसने अल्जीरियाई युद्ध सबधी विवाद म सक्रिय रूप म भाग लेने स भी इकार कर दिया था, इसका कारण यह था कि सोवियत सघ फ्रास के राष्ट्रवादियो का समर्थन नही खोना चाहते थे क्योकि वे दूसरी ओर जर्मनी के पुनशस्त्रीकरण के भी विरुद्ध थे जो सोवियत नीति के लिए अनिवार्य था। यद्यपि साम्यवादी दल 1947 म विरोधी पक्ष म था तथापि उसने नगरपालिकाओ म अपनी शक्ति, जनरल कनफेडरेशन आफ लेबर (श्रम परिसघ)

और राष्ट्रव्यापी चुनावों में लगभग एक चौथाई मतों पर अपना नियंत्रण बनाए रखा था।

द'गालवादी बहुसंख्या में कमी के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे अतः पी० सी० एफ० ने राजनीतिक दल के रूप में अपनी भूमिका के बारे में पुनर्चिंतन शुरू किया। उसने लचीले इतालवी साम्यवादी दल का अनुसरण किया और अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद के क्षेत्र में बहुकेंद्रवाद को स्वीकार कर लिया। उसने सामाजिक लोकतंत्र की ओर ऐसे संशोधनवादी रुझानों को अनदेखा कर दिया जैसे कि समाजवादी व्यवस्थाओं में दलों की बहुलता को सैद्धांतिक मान्यता प्रदान करना, तथा कार्यकारिणी की निर्धारित नीति से उस विचलन के प्रति सहिष्णुता प्रदर्शित करना जिसके लिए इससे पहले कोई गुंजाइश न थी। मई 1968 में छात्र विप्लव के बाद होने वाली आम हड़ताल में फ्रांस के साम्यवादी दल ने कोई हिस्सा नहीं लिया। इसके विपरीत उसने श्रमिकों को वापस काम पर लौटाने के लिए पाम्पिदू सरकार के साथ बातचीत चलाई जिससे क्रांतिकारी वामपक्ष को बहुत बुरा लगा। आधुनिक औद्योगिक समाज द्वारा श्रम शक्ति में किए गए परिवर्तनों तथा कारखाने के श्रमिकों की संख्या में पिछले 15 वर्षों के भीतर कोई महत्वपूर्ण वृद्धि न होने का अहसास दल के अध्यक्ष जार्जेस मार्शे को पूरी तरह था, यही कारण है कि उसने 1971 में दलीय व्यूहरचना का पूरी तरह पुनर्मूल्यांकन करने की कल्पना रखी।

इससे पहले अधिकांश फ्रांसीसी नागरिकों और समाजवादियों को इस बारे में पूरा भरोसा नहीं था कि यदि पी० सी० एफ० के हाथों में एक बार सत्ता आ गई तो वह उसके बाद चुनावों में पराजित होने के बाद स्वेच्छा से सत्ता का परित्याग कर देगी। इसके बावजूद वामपक्ष के सामने सत्ता प्राप्त करने के लिए दूसरा कोई मार्ग ही नहीं रह गया था। 1965 में राष्ट्रपति के चुनावों ने उनको संयुक्त रूप से कार्य करने का एक और अवसर प्रदान किया। एस० एफ० आई० ओ० उग्रवादी दल के कुछ तत्व तथा अधिकांश राजनीतिक क्लब भी साथ मित्तरां का समर्थन करने के मामले में मिल गए। साम्यवादियों ने उसे बिना शर्त समर्थन प्रदान किया। उसे 45 प्रतिशत मत मिले तथा उसने द'गाल को द्वितीय मत का सहारा लेने के लिए विवश किया, जिसकी उस समय तक कोई मिसाल न थी। 1967 के विधानमंडलीय निर्वाचनों के लिए संयुक्त कार्यवाही का फिर से आश्रय लिया गया। उस समय उनके बीच द'गाल के [illegible] और उत्तर अटलांटिकवाद के प्रति वैमनस्य के सिवाय अन्य कोई समान कार्यक्रम न था। फिर भी साम्यवादियों को 73 स्थान मिले और गैर साम्यवादी सम्मिलित

वामपक्ष को 116 (जिनमे से एस० एफ० आई० ओ० को 76 स्थान मिले)।

जून 1968 मे द'गाल की भारी विजय के पश्चात यह गठबधन समाप्त हो गया। वामपक्ष सघ से उसके आधे स्थान छिन गए, तथा एस० एफ० आई० ओ० को कुल 8 प्रतिशत मत मिले। अगले वर्ष द'गाल के आकस्मिक त्यागपत्र के फलस्वरूप रिक्त राष्ट्रपति पद की पूर्ति के लिए एक उम्मीदवार खडा करने की आवश्यकता से प्रेरित नए सिरे से सबधो मे सुधार की चेष्टा की गई। एस० एफ० आई० ओ० ने अपने विघटन का निश्चय कर लिया तथा कुछ अन्य राजनीतिक गुटो के साथ मिलकर वह महज समाजवादी दल (सोशलिस्ट पार्टी) के नाम से पुन स्थापित हुआ। जुलाई और मई 1969 के दो स्थापना सम्मेलनो मे अलेन सेवेरी को प्रथम सचिव नियुक्त किया गया (बाद मे उसका स्थान फ्रैंकाय मित्तरा ने ले लिया) तथा सिद्धातो के नए घोषणापत्र का अनुमोदन किया गया। दल न 'पूजीवाद के राजनीतिक प्रतिनिधियो' के साथ गठबधन को अस्वीकार करके एस०एफ०आई० ओ० के अवसरवाद की निंदा की। इसी प्रकार गणतत्र की प्रतिरक्षा अथवा सामाजिक विधिनिर्माण के लिए सरकार मे भाग लेने से भी इकार कर दिया। घोषणापत्र न दल को सरकार म शामिल होने की अनुमति उसी स्थिति म दी जब उसे यह विश्वास हो जाए कि उससे देश को समाजवाद की दिशा मे आगे ले जाने म मदद मिलेगी। उसम निहित कायक्रम का लक्ष्य 'सत्ता, सपत्ति और प्रतिष्ठा' की समस्त असमानताओ को न्यूनतम स्तर तक पहुचा देना और उसके साथ सामाजिक कार्यकुशलता तथा सामूहिक सामाजिक आवश्यकताओ की प्राथमिकता की सगति स्थापित करना था। दूसरी ओर उसमे आधुनिक पूजीवाद की शक्ति और उसकी जटिलताओ को भी स्वीकार किया गया तथा जीवन स्तरो को गिरने दिए बिना आवश्यक सुधारो का वचन दिया गया। वग अथवा वर्गसघर्ष का उल्लेख नही किया गया, तथा ब्रिटन और जमनी के समाजवादी सगठनो की भाति फ्रास के समाजवादी दल के बारे म भी निश्चय किया गया कि वह किसी वग के साथ अपने आपको सबद्ध नही करेगा। घोषणापत्र म आदर्शों का समावेश किया गया था, वह दल का कायक्रम नही था इसलिए उसम सत्ता प्राप्त करने के लिए अपनाए जान वाले साधनो का जिक्र नही किया गया।

सद्धातिक दृष्टि से घोषणापत्र म कुछ भी नया न था। समाजशास्त्रीय दृष्टि स उसन एक ऐस दल की व्यवस्था की जिसे मार्क्सवादी नही माना जा सकता था। राजनीतिक क्लबो के प्रतिनिधियो को स्वीकार करके दल न अपनी सदस्यता गरमार्क्सवादियो के लिए भी खोल दी। अस्थाई तौर पर वामपक्ष सघ का कायक्रम बनाए रखकर उसने नाटो और साझा बाजार क समथन के मामल म

नेन्नी ने 1963 मे केंद्रीय वामपक्षीय सयुक्त सरकार म शामिल होने का फसला कर लिया। तीन वष बाद इतालवी समाजवाद क ने नी और सरागत गुट आपस मे मिल गए। उन्होने निराश साम्यवादियो और वामपक्षीय ईसाई लोकतत्रवादियो के मत छीनने की कोशिश की तथा इस प्रकार राष्ट्र का नेतत्व करने का स्वप्न देखा। सुधारो के अपरने वाले अभाव, मतो और स्थानो की निरतर हानि तथा ईसाई लोक्तत्रवादियो के हाथो बिक जाने के आरोपो क बावजूद समाजवादियो ने अपने सशोधनवाद का खडन नही किया है। नेन्नी की इस घोषणा का सही अथ निकाला गया कि दल 'सैद्धातिक सनको का दास' नही है, और यह कहा गया कि पश्चिमी यूरोपीय समाजवादी खेमे का आखरी पुराणपथी मावसवादी दल (इतालवी समाजवादी दल) भी सुधार के प्रति प्रतिवद्ध हो गया है।

1945 के बाद से अतर्राष्ट्रीय समाजवाद

द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले समाजवादी इटरनेशनल अवरुद्ध हो गई थी। समाजवादी प्रतिनिधियो को हिटलर के विरुद्ध प्रतिरोध की कायवाही करने का आवाहन करना पडा लकिन उनके देश या तो तटस्थ रह अथवा उन्होने हिटलर के तुष्टीकरण की नीति अपनाई। व्यावहारिक दृष्टि से उन्होने यह तय कर लिया था कि इटरनेशनल को बडी समस्याओ के बारे मे मौन रहना चाहिए तथा महज सपक और सूचना केंद्र की भाति काय करना चाहिए। जब यूरोप महाद्वीप के समाजवादी दलो का युद्ध के दौरान दमन किया गया तो उसका अत ही हो गया। दिसवर 1944 म श्रमदल के सम्मेलन म अनेक समाजवादी दलो के साथ नए सिरे से सपक किया गया तथा वहा इटरनेशनल के पुनगठन का प्रश्न उठा। मई 1946 म 19 समाजवादी दलो ने अतर्राष्ट्रीय समाजवादी समिति का गठन किया। समिति स यह अपेक्षा की गई थी कि वह उनके वीच सपक सूत्र के रूप म काय करेगी उसका प्रधान कार्यालय लदन मे रहेगा और वह वार्षिक सम्मेलनो का आयोजन करेगी।

शीतयुद्ध आरभ होने और पूर्वी यूरोप के देशो के समाजवादियो के साम्यवाद क भीतर विलय के साथ ही इस सगठन ने साम्यवादी विरोधी नीति अपना ली। अतत उसके भीतर नाटो और नाटो स सबधित दशो के सबद्ध समाजवादी दल ही रह गए। उसने नेन्नी समाजवादियो को निकाल दिया तथा सरागत गुट को अपने भीतर स्वीकार कर लिया। उसने पश्चिमी यूरोप के एकीकरण क लिए दोनो महाशक्तियो क बीच एक तीसरी शक्ति के निर्माण का आग्रह किया जिसका नेतत्व लोकतत्रवादी समाजवादियो के हाथो म हो। उसम तटस्थतावादी और समाजवादी सरकारो की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।'

पश्चिमी जगत के साथ इंटरनेशनल के निकट सबधो के क्या कारण थे ? पहला तो यह कि युद्धपूर्व का मार्क्सवादी केंद्रीय नतत्व समाप्त हो गया था जिसमे ब्लम, एडलर और बोअर जैसे लोग थे। पहले नाजी और बाद मे स्तालिनवादी सर्वाधिकारवाद (तानाशाही) के अनुभवो ने पश्चिमी देशो के समाजवादियो के मन मे नियोजन और राष्ट्रीयकरण के प्रति शका उत्पन्न कर दी थी। उन्होने वैयक्तिक रुचियो और नैतिक मूल्यो पर बल दिया और उन्होने साम्यवाद को अपना प्रमुख शत्रु मान लिया। अमरीकी दूतावासो और मार्शल योजना के कार्यालयो म यूरोपीय श्रमसघीय नताओ का सपक अमरीकी श्रमिक प्रतिनिधियो से बडी मात्रा म हुआ उसने राजनीतिक दलो से सबद्ध श्रमसघो पर गहरा प्रभाव डाला।[13] युद्ध से पहले कुछ मध्यममार्गी समाजवादियो ने यह योजना रखी थी कि यदि राज्य के बुर्जुआ तत्व समाजवादी बहुमत का असावैधानिक रीति से प्रतिरोध करें तो अस्थाई तौर पर सर्वहारा का अधिनायकत्व स्थापित किया जाना उचित होगा। यह विचार भी पश्चिमी समाजवादियो को स्वीकार नही हो पाया। वे लोकतत्र और नागरिक स्वतत्रताओ क प्रति शर्तरहित आस्था के हामी बन गए।

आठवें युद्धोत्तर समाजवादी सम्मेलन के अवसर पर समाजवादी इंटरनेशनल की फिर से स्थापना हो गई। यह सम्मेलन 1951 म फ्रैंकफुर्ट म हुआ। इंटरनेशनल के सदस्य दलो की सख्या लगभग 50 तक जा पहुची। एशिया के समाजवादी दलो ने इस भय से अपना सगठन अलग बनाया कि उन्हे पश्चिमी देशो के समाजवाद का पिछलग्गू न मान लिया जाए। फ्रैंकफुर्त मे जिन सिद्धाता की घोषणा की गई वे जितने पूजीवाद के विरुद्ध थे उतने ही साम्यवाद के भी खिलाफ थे। उसने यह स्वीकार किया कि पूजीवाद म परिवर्तन हुए हैं लेकिन उसने यह भी कहा कि अभी तक उसके अतगत सर्वहारा उत्पादन को किसी भी प्रकार प्रभावित नही करता है स्वामित्व के अधिकारो ने मनुष्य के अधिकारो की अपेक्षा प्राथमिकता प्राप्त कर ली है। साथ ही यह भी कहा गया कि मुक्त बाजार वाली अर्थव्यवस्था विश्व की जनसख्या की आवश्यकताओ की पूर्ति नही कर सकती। समाजवाद के बारे म कहा गया कि वह व्यापक हितो का ध्यान रखता है तथा अधिक लोगो के जीवनस्तरो को ऊचा उठाने म अधिक समर्थ है। उसम सार्वजनिक स्वामित्व को साध्य नही वरन समाज के लिए आवश्यक बुनियादी उद्योगो और सेवाओ के नियत्रण का साधन मात्र माना गया, भले ही वह राष्ट्रीयकरण के माध्यम स स्थापित किया जाए अथवा सहकारी सस्थाओ के माध्यम से। यह शोषण को समाप्त कर देगा और कार्यकुशलता म वद्धि करेगा। लेकिन जरूरी नही है कि यह व्यापक ही हो। उसकी मात्रा और उसके स्वरूप का निर्धारण देश और परिस्थिति के अनुसार होगा।

दूसरा ओर साम्यवाद को मार्क्सवाद की टीकाप्रधान मनोवृत्ति के साथ असगत माना गया। जाहिर है कि इस प्रकार साम्यवाद समाजवादा परपरा का अग नहा रह जाता। जहा तक एक दल की तानाशाही का सबध है, उसने वगभेद का निरसन करने के बजाय उसे और भी उग्र बना दिया है तथा वह साम्राज्यवाद का उपकरण बन गया है। घोषणापत्र मे समाजवाद के प्रति कोई समरूपी दष्टि कोण नही अपनाया गया। उस मामले मे मार्क्सवादी अथवा समाज का विश्लेषण करने वाला उन अन्य पद्धतियो को पर्याप्त माना गया जो धम अथवा मानवतावादी सिद्धातो से प्रेरणा प्राप्त करती है। केवल लक्ष्य को स्थिर माना गया सामाजिक न्याय बेहतर जिदगी, स्वतत्रता और विश्वशाति'। इस लक्ष्य की प्राप्ति को किसी भी प्रकार अपरिहाय अथवा नियतिमूलक नही माना गया उसके लिए सक्रिय और दीघ प्रयास की आवश्यकता मानी गई। लेकिन उसके लिए केवल लोकतत्रीय साधनो की सिफारिश की गई। सचमुच समाजवाद को 'लोकतत्र का पूर्णतम स्वरूप' माना गया। यह कहा गया कि उसकी प्राप्ति केवल लोकतत्र के द्वारा ही हो सकती है, तथा लोकतत्र की सिद्धि के लिए समाजवाद को उतना ही अपरिहाय बताया गया। 1962 की ओसलो घोषणा म इन सिद्धातो की विस्तार से व्याख्या की गई तथा आधुनिक औद्योगिक राज्य द्वारा अपेक्षित आर्थिक और वित्तीय नीतियो का विवरण प्रस्तुत किया गया। उसने समाजवादी चिंतन के मानवतावादी तत्व तथा अल्पविकसित दशो को सहायता देने की आवश्यकता पर भी बल दिया।[14]

ये वक्तव्य नए नही थे। उनका उदय स्वतत्र रूप से विविध समाजवादी आदोलना म से हुआ था। लेकिन उस घोषणापत्र मे समाजवाद की सफलता के माग का निर्देशन नही किया गया, तथा महत्तम और न्यूनतम कायक्रमा क बीच दीघकाल से चले आ रहे विवाद को भी समाप्त कर दिया गया। गरीब ततीय विश्व के लिए इस सुसभ्य और उच्चकोटि के लोकतत्रीय घोषणापत्र का क्या उपयाग था? उसने उन अलोकतत्रीय श्रमिक आदोलन के लिए क्या गुजाइश छोडी जो मास्को के नियत्रण से स्वतत्र रहना चाहत थे? राष्ट्रीय मुक्ति सघर्षों म समाजवाद की क्या भूमिका निश्चित की गई? (जाहिर है कि तृतीय इटरनशनल और उसके उत्तराधिकारी कामिफाम न भी इन प्रश्नो की मूलत उपेक्षा कर दी थी) तथापि पश्चिम के जिन आर्थिक दृष्टि से विकसित देशा के लिए यह घोषणापत्र तैयार किया गया था उनके लिए इटरनशनल न यह बात स्वीकार कर ली कि समाजवादी दला का सवहारा के सगठना के साथ तद्रूप नही माना जा सकता, यानी वे अपनी सदस्यता उन तक ही सीमित रखन क लिए बाध्य नही मान जा सकत। उसम बदलत हुए पूजीवाद तथा सिद्धाता क

बीसवी शताब्दी मे महान क्रातिकारी शक्ति का स्वरूप औद्योगिक श्रमिक के स्थान पर किसान ने ले लिया है।

छठे दशक के अतिम और सातवे के प्रारभिक वर्षों मे इन्ही और ऐसे ही अन्य कारणो से फ्रास मे रेमडआरो और सयुक्तराज्य अमरीका मे डनियल बल सरीखे विचारको ने विचारधारा की समाप्ति की कल्पना की। सामाजिक पुन रचना के लिए उग्रवादी मागा के प्रति लोगो की दिलचस्पी नही रही। वास्तविक समस्याओ के हल तलाश करने के लिए सिद्धातकारो की नही वरन तज्ञा (टैक्नाक्रैट) की आवश्यकता हाती है। समाजविज्ञानिया ने बताया कि लागा को उनके अपने अपने राज्या मे किस प्रकार एकाकार किया जा रहा है, तथा उन्हाने यह निष्कष निकाला कि परिपक्व और राजनीतिक सामाजीकरण आधुनिक समाज का एक लक्षण बन गया है। यह तक दिया गया कि यह एकीकरण जितना अधिक होता जाएगा उतना ही विचारधारा का स्थान यथाथ परकतावाद और वगचेतना से सयुक्त राजनीतिक दलो का स्थान सयुक्तराज्य अमरीका जैसे बहुरूपी और सौदेबाज राजनीतिक दल लेते जाएग।[15]

समाजवादी मानवतावाद

सशाधनवादी चितन को माक्स की प्रारभिक रचनाओ की युद्धोत्तर लोकप्रियता से प्रोत्साहन मिला। 26 वष की अवस्था म माक्स ने इकानामिक ऐंड फिलासा फिक मैनस्क्रिट्स आफ 1844 की रचना की। यह सामग्री 1930 मे प्रकाश म आई तथा 1950 तक उसका व्यापक तौर पर प्रसार नहीं हा सका। उसस माक्स का गहन मानवतावादी रूप सामने आता है युवा माक्स अतिम लक्ष्या के बारे म अपेक्षाकृत कम चितित प्रतीत हात थे। क्राति के पश्चात बनन वाले समाजवादी समाज के बार म चितन करते समय उन्हान इस बात से इकार किया है कि व्यक्तिगत सपत्ति का निरसन अपने आप मे लक्ष्य है। उसके बाद स्थापित हान वाला अपरिपक्व समाजवाद श्रम को समाप्त करने की बजाय समानता की स्थापना करेगा। समाजवाद का अतिम प्रयोजन मानवतावादी था आवश्यकता और इतिहास के परे एक ऐसे जगत की ओर बढना जो अस्तित्व और सार तत्व पदार्थीकरण और आत्म परिपुष्टि, स्वतत्रता और आवश्यकता व्यक्ति और नस्ला के बीच विद्यमान सघर्षों' को हल कर देता है।

मानवतावादी परपरा के लिआन ब्लम, एरिक फ्राम तथा अन्य विचारका की दष्टि म एक प्रकार की सपत्ति व्यवस्था के स्थान पर दूसरी व्यवस्था की स्थापना का प्रयोजन महज मानवीय परिस्थिति का रूपातरण करना है। समाजवाद का

यह नतिक सारतत्व माक्सपूव समाजवाद की परपरा म प्रचुर माला मे विद्यमान था, और स्वय पश्चिमी दशनशास्त्र मे भी। फौरियर से जौरेस और उससे बनस्टीन तक के समाजवादी साहित्य ने पूजीवाद के अतगत बने औद्योगिक समाज की आलोचना की थी, स्वय पूजीवाद की नही। समाज सुधार और लोककल्याणकारी राज्य का प्रवतन करने के पीछे समाजवादी आदोलनो का मूल प्रयोजन अनियत्रित औद्योगिक वृद्धि के कठोर प्रभावा से बचने मे श्रमिको को सहायता पहुचाना था।

माक्स के बाद समाजवादी मानवतावादिया ने पूजीवाद के उस पक्ष को विशेष तौर पर भत्सना के लिए चुना जिसके फलस्वरूप मनुष्य और उसके काय के बीच अलगाव की सष्टि होती है। अल्बट कामू का मत है कि माक्सवादी परिकल्पना का आधार तथा उनकी महानता का बुनियादी सूत्र और उसके चिंतन का मूल हाद काय (श्रम) के बार म उनकी इस धारणा मे निहित है

> (श्रम) अत्यत गरिमामय है उसके प्रति घृणा या उपक्षा का भाव नितात अयायमूलक है। (माक्स) श्रम को वस्तु के स्तर तक और श्रमिक को पदाथ क स्तर तक नीचे गिरान के विरुद्ध विद्रोह कर उठे। हमने वह विचार उनसे हो प्राप्त किया है जो हमारे युग की हताशा बन गया है कि जब श्रम का स्तर गिर जाता है ता फिर वह जीवन नही रह जाता भले ही वह हमारे जीवन के प्रत्यक क्षण म समाया हुआ हो उन्होंने श्रमिक के लिए वास्तविक सपत्ति की माग पेश करके उस सपत्ति की जो धन की नही वरन फुरसत और सृजनशीलता की सपदा है, मनुष्य की गरिमा को फिर से स्थापित किया।[16]

इस तरह बनस्टीन के सशोधनवाद तथा आज के सशोधनवाद के बीच का सातत्य साफ तौर पर दिखाई देने लगता है। ये दोना सशोधनवाद माक्सवाद का ऐतिहासिक अनिवायता की अपक्षा कही अधिक माला मे एक नैतिक अपरिहायता मानते हैं।

यहा इस बार म अधिक चर्चा की आवश्यकता नही है कि माक्स न निजी सपत्ति की निंदा इसलिए की कि वह अलगावग्रस्त श्रम की उपज है या जिस सपत्ति व्यवस्था के अतगत कुछ लोग दूसरा के हाथो म पदाथ का रूप ले लत हैं और इस तरह उनका अमानवीकरण हा जाता है उसके प्रति विरोध के कारण व अलगाव को सबसे अधिक भयकर बुराई मानन लगे। स्थिति जो भी हो, माक्स की दृष्टि म समाधान की शुरुआत निजी सपत्ति के निरसन स हाती है। उन्होंने वैयक्तिक विकास और सपन्नता का समाज के समुचित लक्ष्य माना है और

अथशास्त्र को उन लक्ष्यो की पूर्ति का साधन मात्र। यह मानवतावादी तत्व साम्यवादी दलो की अपेक्षा समाजवादी दलो के साथ अधिक जुडा हुआ है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि 'इकानामिक ऐंड फिलासाफिकल मनस्क्रिप्टस को खोज पूर्वी यूरोप के उन विद्वानो ने की है जो स्तालिनवाद को अस्वीकार करने और इसके लिए सैद्धान्तिक समर्थन प्राप्त करने की खातिर मानवतावादी आधारो की तलाश मे थे।

सपत्ति की सरचना पर (इस बात की परवाह किए बिना कि उसमे से कितनी सपत्ति का समूहीकरण किया जाए) समाजवादी आक्रमण को अब एक नैतिक आधार दे दिया गया है। मानवतावादी ऐसा मानते है कि सपत्ति समस्त भौतिक और बौद्धिक चेतनाओ के स्थान पर 'स्वामित्व' की भावना की प्रतिष्ठा के साथ जुडी हुई है। अत स्वतत्रता का अथ मानवीय गुणो को सपत्ति के मानसिक अधिशासन से मुक्त करना है। माक्स ने अलगाव की धारणा को मुख्यत श्रमिको पर ही लागू किया था, समान रूप मे सवेदनशील मध्य वग और शासक वग पर नही, इससे समाजवाद के माग मे कोई बाधा नही उत्पन्न होती क्योकि वह अब अपने आपको महज एक वग के साथ जोडे नही रखता।

समाजवादी और साम्यवादी सिद्धातो के लिए अलगाव ऐसी हर जगह हो सकता है जहा काय को महज जीविकोपाजन का साधन माना जाता है निजी अथवा सावजनिक क्षेत्र के विशेषज्ञ जिस व्यवस्था का निर्देशन करते है उसमे व्यक्ति का मनमाने ढग से उपयोग किया जा सकता है। स्वय व्यवस्था शत्रु है, अथवा यो कहा जा सकता है कि व्यवस्था पर नौकरशाही का नियत्रण अलगाव पैदा करता है। उत्पादन के साधनो पर सैद्धातिक स्वामित्व से यहा कोई विशेष अतर नही पडता। 1968 म नौकरशाही की शक्तियो को कम करके उन्हे श्रमिको के हाथो मे सौपने के ठीक इसी प्रकार के प्रयासो के कारण सोवियत सघ न चेकोस्लोवाकिया की एक प्रबुद्ध साम्यवादी सरकार को कुचल दिया।

सबसे अधिक यथार्थवादी समाजवादी कायक्रम का दशन युगोस्लावियाई व्यवस्था म होता है जिसम श्रमिको को उन कारखानो क नियत्रण म भागीदार बनाया गया है जिनम वे काम करते है। 1948 म स्तालिन के साथ सबध विच्छेद होन पर माशल टीटो न सोवियत सघ के आर्थिक ढाचे का अनुसरण करन से इकार कर दिया। क्षेत्रीय स्वायत्तता और विकेंद्रीयकरण की मागो म श्रमिको द्वारा उद्योगो के स्वय प्रबध की व्यवस्था को बल मिला। सभवत यह युगोस्लावियाई साम्यवाद का सबस अधिक मौलिक लक्षण है। यह व्यवस्था 1950 म प्रबधकारी पूजीवाद

मे निजी क्षेत्र के साथ सहयोग करने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है।[17]

संशोधनवाद के उदय को समाजवाद की सफलताओ की दृष्टि से भी परिभाषित करने की कोशिश की गई है। ये सफलताएं उल्लेखनीय रही है। यूरोप के वाम पक्ष के पिछले एक शताब्दी के इतिहास म जिसे समाजवादी इतिहास अथवा समाजवाद अभिप्रेरित इतिहास कहा जा सकता है व्यापक मताधिकार मुक्त बाजार के सीमारहित नियत्रण मे महत्वपूर्ण संशोधनो, तथा इस मामले म सपत्तिवानो और समूचे समाज के हितो के बीच मध्यस्थ के नाते अधिकाधिक सार्वजनिक (राज्य द्वारा सचालित) आर्थिक प्रवृत्ति की दिशा मे सफलतापूर्वक दबाव डाले गए। वस्तुत संशोधनवाद की एक व्याख्या इस तथ्य पर आधारित है कि राज्य अब सपत्तिवान वर्गों के ही हितो का प्रतिनिधि नही रह गया है।

लेकिन यह सोचना गलत होगा कि इन सफलताओ का अर्थ समाजवाद की स्थापना है। तथापि यदि उसकी उपलब्धियो को 'श्रम आदोलन के ऐतिहासिक उद्देश्यो' की दृष्टि से तथा अनिवार्यत 'सभ्यताकारी प्रभाव' के रूप म देखा जाए तो उन्हें सचमुच शानदार माना जा सकता है। समाजवाद ने पूजीवाद के बारे मे जो आशा मन मे रखी थी उस दृष्टि से ऐसा लगता है कि समाजवाद विफल हो गया है क्योंकि ढेर सारे परिवर्तनो के बावजूद पूजीवाद समाज के बुनियादी लक्षण ज्यो के त्यो बने हुए है। समाजवाद श्रमिक की स्थिति पर टिका हुआ है जो श्रम के साधनो अर्थात उत्पादन के साधनो का स्वामी नही है। (जाहिर है कि औद्योगिक समाज म स्वामित्व सामूहिक होता है, वह व्यक्तिगत हो ही नही सकता। इस बारे म पीछे उल्लेख किया जा चुका है।) सामूहिक स्वामित्व के बिना मुनाफा पूजी के मालिको के पास लौट जाता है। पाश्चात्य कल्याणकारी राज्य कार्य की दशाओ को सुधारता और श्रमिको की सुरक्षा म वद्धि करता है लेकिन वह समाजवादी राज्य का विकल्प नही है। इसी प्रकार साम्यवादी राज्यो म उद्योगो पर नौकरशाही का जो नियत्रण स्थापित हो गया है वह भी समाजवादी समाज का विकल्प नही है। शोषण और तज्जनित अलगाव को समाप्त करने के लिए जिन दशाओ की आवश्यकता होती है उनका निर्माण स्वामित्व के विभाजन और श्रमिको द्वारा उद्योगो के नियत्रण द्वारा ही सभव है।[18]

फलत कम से कम समाजवादी वामपक्ष के लिए आदोलन के सामने कुछ वास्तविक दायित्व शेष है और उसकी ऐतिहासिक भूमिका समाप्त नही हुई है। समाजवादी दल एक पृथक राजनीतिक दल के रूप म कार्य कर सकता है। लेकिन उसके लिए यह जरूरी नही है कि वह अन्य प्रगतिशील राजनीतिक दलो म

केवल मात्रा की दृष्टि से ही भिन्न हो और अधिक सुधार अधिक कल्याण और जीवनस्तरा के ऊचा उठने के साथ साथ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के अधिक ठोस आश्वासन के पक्ष का समथन करके ही सतुष्ट न हो जाए। उसे बुनियादी तौर पर उत्पादन के साधना का स्वामित्व तथा अथव्यवस्था का नियत्रण समाज को सौंपने के लिए कोई साथक उपाय खोजकर वमा करना होगा। यह हो जाने पर ही समाजवाद को आर्थिक लोकतत्र कहा जा सकेगा। इसके लिए काई बन बनाए समाधान नही सुझाए जा सकते। यदि मडल और निगम विफल रह गए हो तो राष्टीयकृत उद्योगा के प्रशासन के लिए अन्य साधन तलाशने होगे (जैसा ब्रिटन ने किया है) तथा सामूहिक स्वामित्व का विचार छाडा नही जा सकता। 1964 से 1970 तक ब्रिटेन मे हराल्ड विलसन के नेतत्व म जिस श्रमदलीय सरकार ने ब्रिटन पर शासन किया उस पर फेबियन सोसायटी न यह आरोप लगाया था कि उसने सामाजिक लोकतत्र की स्थापना की चेष्टा तक नही की।

समाजवादियो के मन म कुछ अनुपूरक दायित्वो का भी बोध है। उनम मवसे अधिक महत्वपूण दायित्वो म स एक अल्पविकसित देशा मे रहन सहन के स्तर को ऊचा उठाना है जिससे ससार की सुरक्षा को अचूक बनाया जा सके। तीसरी दुनिया हिंसा अथवा उद्योगीकरण के लिए अलोकतत्रीय प्रक्रियाए अपनाने के प्रति प्रतिवद्ध प्रतीत होती है। यदि समाजवाद उसके (तीसरी दुनिया के) आर्थिक आधुनिकीकरण के लिए राज्य के दमन के सिवाय और कोई उपाय नही खोज पाया तो यह उसकी बहुत भारी विफलता मानी जाएगी। घरलू क्षेत्र मे समाज-वादी दरिद्रता के निवारण, साझा बाजार के सदस्या को पूणतया राष्ट्रीय लक्ष्या के अनुगमन से रोकने के बहत्तर प्रयास के अग के रूप म श्रमसगठनो को यूरोपीय आर्थिक समुदाय के भीतर इकट्ठा करने और उसके भीतर विशाल बहुराष्टीय व्यावसायिक सस्थाना को मयादाओ मे रखने, प्रदत्त मूल्य कर सरीखी पुरोगामी कराधान व्यवस्था का निरसन करने तथा समाजवादी आधार पर साथक राजनीतिक एकीकरण की चेष्टा के लिए उपयुक्त रीतियो की तलाश करत है। उन्नत औद्योगिक समाजो म उन्नत तत्रो के दायित्वा की सुविधाआ के रूप म विकृत होने से रोकने की कोशिश भी करनी होगी। वे तब तक यह सब कुछ नही कर सकते जब तक वे सगठित श्रम मे हुए परिवतनो को स्वीकार न करें। अब सगठित श्रम समूची जनता (जनसख्या) के भीतर पधान तत्व नही रह गया है। कल तक हम जिसे सवहारा कह रहे थे आज उसम बहुत सीमित राजनीतिक ऊजस्विता रह गई है। समाजवादी उन लोगो को समाजवाद की दीक्षा देने की कोशिश कर रहे हैं जो मजदूरी कमात हैं लेकिन दूसरे मजदूरो के

साथ एकरूपता को अस्वीकार करते है। वे कहते हैं कि नए पूजीवाद का सामना करने के लिए नए समाजवाद की आवश्यकता है।

इस कार्यक्रम को यूरोप के समाजवादी नियान्वित कर सकेंगे, इस बात की कितनी सभावना है ? पीछे यह उल्लेख किया जा चुका है कि तीसरी दुनिया के देश उद्योगीकरण को दमनमूलक राजनीतिक सगठनो का समानार्थक मानते है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम जिस समाजवाद को लोकतत्र का विस्तार मानते है वह केवल उन देशो म ही आ सकता है जो आर्थिक सुरक्षा मे जी रहे हैं। समाजवादी आदोलन का सबसे अधिक विद्वान विश्लेषणकर्ता जाज लिक्टहाइम अन्य देशो मे उसकी सभावना के बारे म हताश है। वह कहता है कि जो मतदाता अभी तक समृद्ध नही हो पाए है वे सामाजिक समानता की स्थापना के लिए आवश्यक दीर्घकालीन त्याग करने मे हिचकिचाते है।[19] समाजवादी आदोलन के लिए जिन श्रमसघो का समर्थन अनिवार्य है उन्होने अल्पकालीन आर्थिक लाभो के त्याग मे तनिक भी रुचि नही ली क्योकि उनके अधिकाश सदस्य वेतन भोगी होते हैं। यदि यह मान लिया जाए कि लोगो से यह आशा करना सर्वथा तर्कसगत है कि वे अपने जीवन स्तरो म निरतर सुधार की कोशिश करेंगे तो हम इस निष्कर्ष पर पहुचने के लिए विवश होगे कि जब तक मनुष्यो की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति नही हो जाएगी तब तक समाजवाद महज एक आदर्श बना रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि समाजवाद के आदर्श की पूर्ति से पहले एक अन्य आदर्श की पूर्ति आवश्यक होगी। लेकिन सशोधनवादियो न हमेशा से यह माना है कि समाजवाद लक्ष्य की अपेक्षा एक तलाश अधिक है।

मूल बात यह है कि मजदूरी कमाने वाला श्रमिक सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप म कार्य करने म असमर्थ रहा है। हर्बर्ट मारकुस ने कहा है कि सर्वहारा वर्ग का समाज के भीतर एकीकरण हो गया है उसका पृथक अस्तित्व समाप्त हो चुका है। औद्योगिक दृष्टि से प्रगतिशील समाजो न श्रमिको की तात्कालिक आवश्यकताओ की पूर्ति करके और इस प्रकार उन्हे सामाजिक सगठन के वैकल्पिक स्वरूपो की ओर से विरत करने की क्षमता प्रदर्शित की है। इस प्रभुत्व के लिए लोकतत्रीय और आर्थिक दृष्टि से सतोषजनक साधनो का इस्तेमाल किया गया है आतक का नही इसीलिए इसे दमन का सबसे अधिक घातक रूप माना जाना है। मारकुस न यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि समाजवाद की सफलता की कोई सभावना हो तो वह सर्वहारा वर्ग की कार्यवाही पर नही वरन औद्योगिक व्यवस्था के बाहर के सामाजिक वर्गों और इस व्यवस्था से प्राप्त होने वाले लाभो पर निर्भर होगी।

इस व्यवस्था से वचित लागा म तीसरी दुनिया के अल्पविकसित दशो के विपन्न जनसमाज भी शामिल है। फ्राज फैनन का मत है कि उनमे से विराट बहुसख्या देहाती इलाका मे रहती है और उसम क्रांति की सभावनाए निहित है। उसकी इस क्षमता की औपनिवेशिक शक्तिया अथवा व्यवसायी वग की उपक्षा करते है तथा वे उसे विभाजित और अशक्त बनाए रखने की कोशिश करते रहते है। वे उसकी जनजातीय भावनाओ को उकसाते है अथवा समुद्रतटवर्ती लोगा और अतटवर्ती प्रदश के निवासियो के बीच फूट डालते है। यहा ये दो उदाहरण ही काफी हागे। औद्योगिक समाज मे तथा प्रजातीय और जातीय अल्पसख्यक तथा आर्थिक दष्टि से अविकसित क्षेत्रो मे रहने वाले लोग इस विपन्न वग म आते हैं। वतमान व्यवस्था उन्ह आत्मसात नही कर पाई है अत वे एक असतुष्ट तत्व बने रह सकते है। नौकरियो के अलावा निजी क्षेत्र मे रोजगार के नए क्षेत्र बहुत धीमी गति से खुल रह है। (यह नए पूजीवाद की एक और अनिवायता है जिसके बारे मे आम तौर पर चर्चा नही की जाती)।

समाजशास्त्री नामन बनबाम का मत है कि औद्योगिक श्रमिक वर्ग न तो सास्कृतिक दष्टि से और न राजनीतिक दृष्टि से ही भविष्य का उदघोषकर्ता अथवा क्रातिकारी तत्व' है। वह कहता है कि जिस प्रकार आज का युवा वग और विशेषत छात्र वग लीक से हटकर चलता है उसी तरह आज का औद्योगिक समाज भी 'तात्कालिक जिम्मेदारियो अथवा वतमान व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता' से बचकर चलता है, तथा उन बुद्धिवादिया की तरह व्यवहार करता है जो अपने आपको व्यवस्थित कार्यक्रम से किसी सीमा तक मुक्त महसूस करते हैं और जिनम अपनी समालोचनाकारी क्षमताआ का उपयोग करने की प्रवृत्ति बढती जा रही है।[9] वास्तव मे अर्वाचीन काल म औद्योगिक समाज के भीतर सबस अधिक क्रातिकारी विस्फोट मई-जून 1968 म हुआ। फ्रास के छात्रा और श्रमिका के उस विद्रोह म द'गालवादी सरकार बाल बाल बच गई। क्रातिकारी वामपक्ष ने उस विद्रोह को अपना आदश जैसा मान लिया है हालाकि वह द'गालवाद का अत नही चाहता। सक्षेप म कहा जा सकता है कि छात्रो की हडताले यत्र तत्र औद्योगिक हडतालें भडकाएगी, जो एक आम हडताल के लिए रास्ता तैयार कर देंगी तथा समूची सरकार व्यवस्था को उलट देंगी। यह बात ध्यान देन योग्य है कि प्रदशना और मुठभेडो पर आधारित छात्रा की अनुशासनहीन क्रातिकारी गतिविधि का उदय पश्चिमी और पूर्वी यूरोप म ठीक उन्ही देशो म हाता है जिनम समाजवाद की शक्ति चुक गई है। छात्र आदोलनो म भाग लेने वाला के प्रयोजना का तनिक सा भी अध्ययन करन से यह बात समझ म आ जाती है कि वे लोग सवथा सजीव विचारधाराओं से अभिप्रेरित होत हैं। इसके बावजूद इस बात के विशेष सकेत

नहीं मिलते कि यूरोप में नव वामपक्ष की उपस्थिति ने यूरोप की राजनीति पर कोई गहरा प्रभाव डाला है।

तब क्या श्रमिक वर्ग को सामाजिक परिवर्तन का संभावित अभिकर्ता मानने से भी इंकार कर दिया जाए? मई विद्रोह में श्रम (श्रमिक वर्ग के अपेक्षाकृत युवा तत्व) ने छात्रों के आवाहन पर अनुक्रिया की और फ्रांस के इतिहास में विशालतम हड़ताल छेड़ दी। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि यूरोप का श्रमिक वर्ग और नेतृत्व उतना गतिहीन नहीं है जितना आम तौर पर मान लिया गया है। औद्योगिक देशों में से एक सबसे पुराने देश में वह आरोपित दबावों के प्रति नई अनुक्रियाएं कर रहा है। चौथे दशक की आर्थिक मंदी के दौरान ब्रिटेन में बेरोजगारी को अन्य मनुष्यों द्वारा संचालित एक अन्य व्यवस्था का अपरिहार्य पक्ष मान लिया गया था। कुछ बेरोजगार लोगों ने प्रतिरोध में जुलूस निकाला, किंतु उनमें से अधिकांश घर पर बैठे बैठे अपने भाग्य को कोसते रहे। जब कोई संयंत्र अथवा शिपयार्ड (जहाज बनाने का कारखाना) बंद हो जाता तो एक कस्बे की मौत हो जाती। किसी ने यह सुझाव नहीं दिया कि उस संयंत्र अथवा शिपयार्ड को बंद करने के आदेशों का उल्लंघन करके चालू रखा जाए, और यह बात तो शायद कल्पना से बहुत ही दूर थी कि उस संयंत्र या कारखाने पर कब्जा कर लिया जाता और उसे तबतक न छोड़ा जाता जबतक पूर्ण रोजगार का आश्वासन न मिल जाता। आज श्रमिकों के मस्तिष्क में इस तरह के विचार मौजूद हैं। इसका प्रमाण 1971 में स्काटलैंड के श्रमिकों ने क्लाइडसाइड में दिया, उससे उनके तथा युद्धपूर्व काल के समाजवादियों के दृष्टिकोण का भेद स्पष्ट हो जाता है।[1]

इसके अतिरिक्त प्रतिरोध की नई विधियों में यह बात सामने आती है कि एक छोर में श्रमसंघ के कोश और व्यापक औद्योगिक कार्यवाही शुरू करने की तैयारी के बीच कितना मामूली सा नाता है। 1972 के शुरू में ब्रिटेन के हड़ताली कोयला खनिकों ने बिजलीघरों को बंद करने के लिए धरना देने वाले स्वयंसेवकों पर अपना कोष खर्च किया उनके परिवारों को आर्थिक सहारा देने के लिए नहीं। इस प्रकार चंद हजार श्रमिकों ने अर्थव्यवस्था को अपंग कर दिया और उन्होंने चंद महीनों में वह कर दिखाया जो नाजी जर्मनी की मशीन सेनाएं युद्ध के सारे चार वर्षों में भी नहीं कर सकी थीं। (श्रमसंघों का यह अनुमान लगाने का अवसर स्वयं औद्योगिक समाज ने एक अन्य प्रकार से अपनी कुशलता का परिचय दिया कि हड़ताल के दौरान प्राप्त होने वाली छोटी राशियां उच्चतर कल्याणकारी भुगतान प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होंगी)। लेकिन इसका सबका यह अर्थ नहीं

है कि ब्रिटेन के श्रमिक अपने समाज का पुनगठन करना चाहते है अथवा यह कि समाज म एकीकृत श्रमिक हडताल कर ही देगे। हा, इसमे एक ऐसी सघषशीलता और सामाजिक चेतना का बाध होता है जो इससे पहले नही थी। हम इस बारे म चर्चा कर चुके है कि जब यह सामाजिक चेतना उत्पन्न हो गई तो समाजवाद न जनस्तर पर राजनीतिक शक्ति का स्वरूप ग्रहण कर लिया।

शब्दावली

एल० आर० सी० लेबर रिप्रेजेंटेशन कमेटी (ग्रेट ब्रिटेन)। ब्रिटिश श्रम दल सीध उसका ही उत्तराधिकारी है। 1899 म उसे ट्रेडस यूनियन कांग्रेस ने स्थापित किया। 1906 मे नाम बदलकर श्रमदल (लेबर पार्टी) बन गई।

एल० एस० आई० लेबर एड साशलिस्ट इटरनेशनल। अतराष्ट्रीय समाजवादी सगठन जिसकी स्थापना 1923 के हैबग सम्मेलन मे उन दला के एकीकरण के फलस्वरूप हुई जिन्होने द्वितीय (बन) इटरनेशनल की पुनरचना का पक्ष लिया तथा जिन्होने अढाईवे (वियना) सम्मेलन का समथन किया। द्वितीय विश्वयुद्ध तक यह लोकतत्रीय समाजवाद की हिमायत करती रही।

पी० सी० एफ० फ्रेंच कम्यूनिस्ट पार्टी। एस० एफ० आई० ओ० के 1920 के तूर सम्मेलन मे कामिटन के साथ सबध होने की नीति का समथन करने वाले बहुमत द्वारा स्थापित। मुक्ति के बाद वर्षों म सरकार मे शामिल हुई लेकिन उसके बाद से उसने विरोधी पक्ष की भूमिका निबाही है।

पी० सी० आई० इटालियन कम्यूनिस्ट पार्टी। समाजवादियो द्वारा कामिटन की 21 शर्तों को बिना शत मानने से इन्कार करने पर स्थापित। आज गैर साम्यवादी जगत मे सबसे अधिक महत्वपूण साम्यवादी दल।

पी० एस० यू० यूनाइटड सोशलिस्ट पार्टी (फ्रास)। 1960 म एस० एफ० आई० ओ० और पी० सी० एफ० के विसहमत सदस्या, मडे फ्रास उग्रवादियो तथा अय लोगो द्वारा स्थापित। पी० सी० एफ० की तरह (किंतु समाजवादी दल के विपरीत) यह अतलातिक सधि और साझा बाजार का विरोध करती है।

एस० डी० सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी (रूस)। 1898 म मार्क्सवादियो द्वारा स्थापित। गैरकानूनी घोषित। 1903 म मेनशेविक और बोल्शेविक गुटा म विभाजित। कहने को तो 1918 तक यह एक दल के रूप म ही बनी रही किंतु वस्तुत 1912 म बोल्शेविको ने एक पृथक दल का गठन कर लिया था।

एस० डी० एफ० सोशल डिमाक्रेटिक फेडरेशन (ग्रेट ब्रिटेन)। 1881 म स्थापित। आरभ म उसे हेनरी हिंडमान के मार्क्सवाद की दीक्षा मिली। आगे जाकर फूट के कारण कमजोर हो गया और 1912 म ब्रिटिश साशलिस्ट पार्टी म रूपान्तरित हुआ।

एस० एफ० आई० ओ० वकस इटरनशनल की फ्रासीसी शाखा (फ्रेंच सक्शन आफ दी वकस इटरनशनल। 1905 म स्थापित फ्रास का सयुक्त समाजवादी दल। ग्तो जोरेस, ब्लम, मोले और अब (1969) म पुनगठित नया नाम सोशलिस्ट पार्टी) फ्रासाय मित्तरा।

एस० पी० डी० जमन सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी। 1875 म मार्क्सवादियो और लासालवादियो द्वारा स्थापित। समस्त समाजवादी दलो म सबस अधिक प्रतिष्ठित (और सबस अधिक नौकरशाही द्वारा सचालित) हो गई। नाजियो द्वारा दमित।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद पुन गठित। 1945 के बाद सी० डी० यू० का प्रमुख विरोधी पक्ष हो गई 1966 म सी० डी० यू०—एस० डी० पी० सयुक्त सरकार म अल्पसख्या मे रही तथा 1969 म एफ० डी० पी० के साथ बनाई। सयुक्त सरकार मे बहुसख्यक रही।

एस० आर० सोशल रिवाल्यूशनरी पार्टी (रूस) 1901 मे स्थापित। 1880 के खेतीप्रधान समाजवाद की वशधर और बुर्जुआ क्राति के बजाय खेतीप्रधान क्राति की समथक। 1918 से उसका वामपक्ष भी साम्यवादियो का विरोध करता रहा।

टी०यू० सी० ट्रेडस यूनियन काग्रेस (ग्रेट ब्रिटेन) श्रम सघो का राष्ट्रीय परिसघ। प्रथम वार्षिक सम्मेलन 1868 म हुआ। उसकी ससदीय समिति कई समय तक लाब्बीग करती रही, अतत "सन एल० आर० सी० की स्थापना की सिफारिश पेश की। चौथे दशक म टी० यू० सी० ने अधिक राजनीतिक महत्त्व प्राप्त कर लिया लेकिन अब वह श्रमदल के निणयो को प्रभावित नहीं कर पाती है।

यू० एस० पी० डी० इडिपेंडेंट जमन सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी। एस० पी० डी० के रीशस्टाग प्रतिनिधिमडल द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध म बढ़ते हुए विरोध म से इसका उदय हुआ तथा इसे रूस की मार्च 1917 की क्राति के बाद सगठनात्मक सरचना प्रदान की गई। बोल्शेविक क्राति द्वारा विभक्त। 1920 म उसके बहुसख्यक सदस्या न साम्यवादियो के साथ मिलना स्वीकार कर लिया तथा अल्पसख्यक दो वष बाद एस० पी० डी० म लौट गए।

कुछ महत्वपूण समाजवादी और श्रमिक नेता

विक्टर एडलर (आस्ट्रियावासी 1852 1918) आस्ट्रियन सोशलिस्ट पार्टी के सस्थापको मे से एक तथा दलीय एकता के प्रति समर्पित। द्वितीय इटरनेशनल म प्रभावशाली व्यक्तित्व। 1905 म आस्ट्रियाई ससद म सदस्य बना।

जा आलेमान (फासीसी 1843 1935) भूतपूर्व मुद्रक तथा पेरिस कम्यून का कायकर्ता। 1890 म वह सभावनावादियो (पासिबिलिस्ट्स) से अलग हो गया तथा उसने अपने पृथक दल का गठन किया। श्रमिको के लिए महत्तर भूमिका का आवाहन तथा हड़ताल का समथन किया।

क्लीमेट एटली (अगरेज 1883 1867) 1922 म समाजवादी ससदसदस्य। लासबरी के नीचे 1931-1935 तक दल का उपनेता और उसका उत्तराधिकारी। 1945 के पश्चात प्रधानमत्री बनने पर उसने विस्तृत सुधार और राष्ट्रीयकरण का श्रमदलीय कायक्रम क्रियान्वित किया।

मिचेल बाकुनिन (रूसी 1814 1876) महान अराजकतावादी ।
उसने प्रथम इटरनेशनल म मार्क्स के नेतृत्व को चुनौती दी तथा 1872

नेशनल से निकाल दिया गया ।

आटोबोर (आस्ट्रियाई 1881-1938) आस्ट्रियाई सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी के वामपक्ष का प्रवक्ता । जातीयतावादी तथा साम्राज्यवादी समस्याओं से सबधित साहित्य का प्रणेता और आस्ट्रियाई मार्क्सवाद का प्रमुख प्रतिपादक । 1919 में वैदेशिक विभाग का मत्री बनने पर उसने जर्मनी के साथ मैत्री का समर्थन किया।

आगस्ट बेबेल (जर्मन 1840 1913) सर्वहारा मूल के बहुत कम समाजवादी नेताओं में से एक । उसने विल्हेल्म लीब्कनेख्त के साथ मिलकर मार्क्सवादी दल की स्थापना की जिसमें लसैलवादी भी मिल गए और जो अंत में एस० पी० डी० बनी ।

एडुअड बर्नस्टीन (जर्मन 1850 1932) मार्क्सवादी संशोधनवाद का जन्मदाता । 1917 में उसने जर्मनी की युद्धनीति को अस्वीकार कर दिया तथा यू० एस० पी० डी० की स्थापना में सहायता दी ।

एनुरिन बीवान (अंग्रेज 1897-1960) भूतपूर्व कोयला खदान श्रमिक । 1929 से 1960 तक ससत्सदस्य तथा श्रमदल में वामपक्षीय नेता । 1945 51 में स्वास्थ्यमंत्री ।

अर्नेस्ट बेविन (अंगरेज 1881 1951) ट्रांसपोर्ट ऐंड जनरल वर्कर्स यूनियन का संस्थापक और महासचिव । टी० यू० सी० की महापरिषद का अध्यक्ष । चर्चिल के युद्धकालीन मंत्रिमंडल में श्रम मंत्री । 1945 से 1951 तक वैदेशिक मामलों के मंत्री की हैसियत से उसने पश्चिमी और नाटो समर्थन की नीति अपनाई ।

आगस्त ब्लाक (फ्रांसीसी 1805-1881) लंबे अरसे तक क्रांतिकारी और व्यावसायिक क्रांतिकारी हरावल दस्ते का समर्थक रहा । अधिकांश जीवन जेल में बिताया ।

लिआन ब्लम (फ्रांसीसी 1872-1950) जौरेस का शिष्य और उत्तराधिकारी । उसने 1920 में एस० एफ० आई० ओ० का पुनर्गठन किया । 1936 में जनता मोर्चा सरकार का प्रधानमंत्री बना । 1943 में देशनिकाला देकर जर्मनी भेज दिया गया । लौटकर 1946 में समाजवादी मंत्रिमंडल में प्रधानमंत्री बना ।

विली ब्रांट (जर्मन जन्म 1913) एस० पी० डी० नेता । बुडस्टाग का सदस्य और पश्चिमी बर्लिन का महापौर रहा । 1966-1969 में संयुक्त सरकार के भीतर वैदेशिक मामलों का मंत्री बना । उसने पूर्व के साथ सम्प्रेषण की नीति आरंभ की जिसके कारण उसे नोबेल शांति पुरस्कार मिला । एस० पी० डी० की 1969 विजय के बाद चांसलर (प्रधानमंत्री) बना ।

पाल ब्राउस (फ्रांसीसी 1844 1913) द्वितीय राजतंत्र का विरोधी था । प्रथम इंटरनेशनल तथा पेरिस कम्यून में भाग लिया था । 1882 से रास समाजवादियों के नामक सुधारवादी दल का मुखिया बना । पेरिस नगरनिगम परिषद के सदस्य

तथा ससत्सदस्य के रूप म सक्रिय रहा।

जी० डी० एच० कोल (ब्रिटिश 1889-1959) अथशास्त्री, समाजवादी और श्रम-आदोलन का इतिहासकार। गिल्ड समाजवाद का प्रमुख प्रवक्ता। फेवियन सोसायटी का सभापति और बाद म अध्यक्ष।

स्टफड क्रिप्स (अगरज 1889 1952) वामपक्षी श्रमदलीय नेता। 1939 मे साम्यवादियो के साथ जनता मोर्चा बनाने का प्रस्ताव रखने पर दल से निष्कासित (1945 म पुन दल मे प्रविष्ट)। चर्चिल के युद्धकालीन मत्रिमडल का सदस्य तथा युद्धोत्तर श्रमदलीय सरकारा म मत्री।

मार्सेल देआत (फ्रासीसी 1894 1955) एस० एफ० आई० ओ० के भीतर नव समाजवाद का प्रमुख प्रवक्ता। विशी सरकार म श्रममत्री रहा।

फ्रीडरिक एबर्ट (जमन 1871-1925) श्रमसघ नेता तथा रीशस्टाग (ससद) म एस० पी० डी० का प्रतिनिधि। जमन युद्धप्रयास का समथक। 1919 म जमन गणतत्र का राष्ट्रपति बना।

कुर्त आइसनर (जमन 1867 1919) वोरवार्ट म' का सपादक तथा यू० एस० पी० डी० का नेता। 1918 1919 की सर्दिया म क्रातिकारी बवेरियाई गणराज्य की स्थापना के विफल प्रयास के लिए बहुख्यात एक अति दक्षिणपथी द्वारा हत्या।

फ्रीडरिक एंगिल्स (जमन 1820-1895) मार्क्स के साथ आधुनिक समाजवाद और साम्यवाद का जन्मदाता। वस्त्र निर्माता का बेटा। उसने इग्लड म सर्वहारा की दशाओ का वणन किया। 1844 मे मार्क्स के साथ मुलाकात हुई तथा उसके साथ मिलकर 1848 म कम्यूनिस्ट मैनीफेस्टो (साम्यवादी घोषणापत्र) की रचना। जमन क्राति की विफलता के बाद उसन शेष जीवन इग्लैंड म बिताया। मार्क्स को आर्थिक सहायता दी। प्रथम और द्वितीय इटरनेशनल्स का महत्वपूर्ण नता तथा कपिटल के दूसर और तीसरे खडो का सपादक।

पाल फौरे (फ्रासीसी 1878-1960) जूलेस गैंद का साथी। 1920 की फूट के बाद एस० एफ० आई० ओ० का महासचिव। 1924 के बाद ससत्सदस्य। शातिवादी होन के कारण उसने म्यूनिग सधि और 1940 की पराजय को स्वीकार कर लिया।

ह्यूग गटसकेल (अगरज 1906-1963) 1945 म श्रमदलीय ससत्सदस्य और 1955 म एटली का उत्तराधिकारी। अपने दल के कायक्रम के अधिक समाजवादी प्रतीत होन वाले अशो का सशोधन करने के प्रयास के लिए विख्यात।

जूलेस गेड (फ्रासीसी 1845 1922) मध्यू वर्दिल म जन्म। उसन फ्रासीसी श्रम आदोलन मे मार्क्सवाद का प्रवेश कराया और उसे लोकप्रिय बनाया। 1914 की राष्ट्रीय सयुक्त सरकार म मन्त्री रहा।

केर हार्डी (स्काटलैंडवासी 1856 1915) खनिकों का सगठनकर्ता और श्रमिक नेता। ससद के लिए पहला श्रमिक उम्मीदवार। आई० एल० पी० का सस्थापक तथा उसका प्रथम अध्यक्ष।

आर्थर हडरसन (अगरेज 1863-1935) तीन बार श्रमदल का अध्यक्ष। 1915 1917 के दौरान सयुक्त मत्रिमडल का तथा युद्ध के बीच श्रमदलीय सरकारो का सदस्य। 1931 मे उसने मैक्डानेल्ड की राष्ट्रीय सयुक्त सरकार म शामिल होने से इकार कर दिया।

अलेक्जाडर हर्जेन (रूसी 1812 1870) प्रारभिक जनसम्मोहवादी समाजवादी। 1834 म कारागार मे रहा। 1847 के बाद से विदेशो म रहा। उपन्यासो पुस्तिकाओ तथा समाचारपत्र 'कोलोकोल' (घटी) के द्वारा प्रचार करता रहा।

रूडोल्फ हिल्फर्डिंग (आस्ट्रियावासी 1877-1941) आस्ट्रियाई मार्क्सवाद का अर्थशास्त्र विशेषज्ञ। यू० एस० पी० डी० मे शामिल हुआ लेकिन के० पी० डी० का विरोध करता रहा। जर्मन नागरिक बन गया तथा 1923 म स्ट्रेसमान का वित्तमत्री बना।

हेनरी हिडमन (अगरेज 1842 1921) 1881 म मार्क्सिस्ट सोशल डिमाक्रेटिक फैडरेशन की स्थापना 1911 म ब्रिटिश सोशलिस्ट पार्टी की अध्यक्षता। उसका फैडरेशन दल की अपेक्षा एक सप्रदाय अधिक था तथापि उसम अनेक सर्वहारा वर्गीय सघर्षवादियो का प्रशिक्षण हुआ।

जा जौरेस (फ्रासीसी 1859 1914) दर्शनशास्त्र का भूतपूर्व अध्यापक, महत्वपूर्ण समाजवादी ससत्सदस्य तथा पत्रकार (1890), और ड्रेफस का बचाव करने के बाद दलीय नेता। वह मार्क्सवादी था तथापि उसने फ्रासीसी समाजवाद की सैद्धांतिक विरासत म वद्धि की तथा व्यक्तिगत अधिकारो पर बल दिया। यह अग्रयवादी था। 1914 म एक सनकी राष्ट्रवादी ने उसकी हत्या कर दी।

कार्ल काटस्की (जर्मन 1854 1938) एक लबे समय तक एस० पी० डी० का सिद्धातकार रहा और उसने उसके एर्फुर्त कार्यक्रम का प्रारूप तैयार किया। द्वितीय इटरनेशनल म महत्वपूर्ण व्यक्ति। यू० एस० पी० डी० का सह-सस्थापक। मार्क्सवादी रूढ़मुल्लापन का प्रवक्ता। उसने बर्नस्टीन के सशोधनवाद तथा लेनिन के बाल्शेविज्म दोनो का विरोध किया।

जार्ज लांसबरी (अगरेज 1859 1940) वामपथी समाजवादी तथा नगर के गरीबो का प्रवक्ता। श्रमदल के महत्वपूर्ण समाचारपत्र हेराल्ड का सपादक। 1931 म 1935 तक दल का नेता। फासीवाद उदय के दौरान उसका नाम शातिवाद के समर्थन के लिए लिया जाता था।

फर्डिनेंड लसल (जमन 1825-1864) आरभिक जमन समाजवादी सिद्धात-कार और सगठनकर्ता। मार्क्स के विपरीत उसने राज्य और राष्ट्रवाद की भूमिका को महत्व प्रदान किया। उसन राज्य द्वारा सहकारी समितियो के विकास पर भी बल दिया। 1863 म उसने जमनी मे प्रथम श्रमिक राजनीतिक दल के गठन म सहायता दी जो आगे जाकर एस० पी० डी० मे परिणत हुई।

व्लादिमिर इलिच लेनिन (रूसी 1870 1924) जन्म से उसका नाम लेनिन नही उल्यानोव था। उसने मार्क्स के साहित्य का अध्ययन किया और वकालत छोड दी। दूसरी बार साइबेरिया मे निर्वासन के बाद वह रूस छोडकर चला गया। वह व्यावसायिक क्रातिकारियो के अनुशासित दल का हिमायती था, तथा उसन प्लेखानोव, काटस्की एव कम उग्रवादी मार्क्सवादियो से लोहा लिया। नवबर 1917 म बोल्शेविक क्राति का सफल मागदशन किया तथा मृत्यु के समय तक सरकार का मुखिया बना रहा।

कार्ल लीब्क्नख्त (जमन 1871-1919) प्रख्यात अर्न्यवादी और क्रातिकारी एस० पी० डी० सदस्य विल्हल्म लीब्क्नेख्त का बेटा। स्पार्टावादी सगठन का सहसस्थापक। बर्लिन विद्रोह के कुचले जाने के बाद जनवरी 1919 मे रोजा लक्जमबग के साथ उसकी हत्या कर दी गई।

विल्हेल्म लीब्कनख्त (जमन 1826-1900) 1848 की क्राति म भाग लेने के अपराध मे देशनिकाला मिला। मार्क्स के साथ सपर्क रहा। बेबेल के साथ मिलकर जमनी के प्रथम मार्क्सवादी दल की स्थापना की जो आगे जाकर लसैल-वादियो के मिलने पर एस० पी० डी० बन गई। लबे समय तक रीशस्टाग का सदस्य बना रहा।

रोजा लक्जेमबग (पोलड की निवासिनी 1870 अथवा 1871-1919) एस० पी० डी० के भीतर क्राति की महत्वपूर्ण प्रवक्ता। उसने पोलैंड के लिए अलग समाजवादी दल की स्थापना का विरोध किया। जनता की क्रातिकारी त्वरा पर भरोसा करती थी और लेनिन के विशिष्ट जनवाद की विरोधी थी। जनवरी 1919 के स्पार्टावादी विद्रोह म उसकी हत्या हो गई।

रमजे मकडानेल्ड (स्काटलडवासी 1866 1937) फेबियन समाजवादी तथा श्रमदल के सस्थापको म से एक। 1906 म ससदसदस्य बना। 1914 मे शाति वादी रवैया अपनाया। 1924 म प्रथम श्रमदलीय सरकार मे प्रधानमत्री और वदेशिक विभाग का मत्री। उसका बहुचर्चित समाजवादी उत्साह भी ठडा पड गया। 1929 म पुन प्रधानमत्री बना लेकिन उस समय उसने समाजवादी दल के स्थान पर रूढिवादी दल द्वारा समर्थित राष्ट्रीय सयुक्त सरकार बनाना पसद किया जिसके कारण दल ने उसका नेतृत्व अस्वीकार कर दिया।

हेद्रिक दे मान (बेल्जियमवासी 1885 1953) सिद्धातकार और राजनीतिज्ञ।

सर्वहारा वर्ग की मानसिक स्थिति की व्याख्या के लिए पदार्थवादी दृष्टिकोण के स्थान पर सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। उसकी श्रम योजना का प्रयोजन वित्त पूंजीवाद के विरुद्ध मध्य वर्ग की सहानुभूति प्राप्त करना था। 1935 में मंत्री बना। अधिकाधिक अधिनायकवादी और तटस्थतावादी बनता गया तथा 1940 में उसने नाजी आक्रांताओं के साथ सहयोग करने के लिए एक दल का निर्माण करने की हिमायत की।

टाम मान (अंग्रेज 1856-1941) समाजवादी और श्रमिक नेता। 1889 की लंदन गोदी हड़ताल का नेता। 1894 से 1897 तक आई० एल० पी० का सचिव। सिंडिकेलिज्म की ओर झुका और 1920 में कुछ लोगों के साथ मिलकर उसने ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी का गठन किया।

बेनाइत मालों (फ्रांसीसी 1841-1893) आत्मप्रशिक्षित श्रमिक। प्रथम इंटरनेशनल में शामिल। सीन जिले के संसदीय प्रतिनिधि की हैसियत से फरवरी 1871 में जर्मनी के साथ शांतिसंधि के विरुद्ध मत दिया। पेरिस कम्यून में भाग लिया। प्रभावशाली पत्र 'रेवू सोसियालिस्त' के संपादक की हैसियत से उसने फ्रांसीसी समाजवादी चिंतन में मानवतावादी तत्वों के समावेश की दिशा में कार्य किया।

कार्ल मार्क्स (जर्मन 1818-1883) आधुनिक समाजवाद और साम्यवाद का प्रमुख सिद्धांतकार। वकालत से दर्शन की ओर प्रवृत्त। हीगल के चिंतन में आदर्शवाद के स्थान पर उसने पदार्थवाद की प्रतिस्थापना की। उन्नीसवीं शताब्दी के पांचवें दशक में पेरिस में प्रूधों के व्यक्तिवादी उग्रवाद पर आक्रमण। 1847 में कम्यूनिस्ट लीग का सदस्य। एंगिल्स के साथ 'कम्यूनिस्ट मनीफेस्टो' (घोषणा पत्र) का प्रणयन जिसमें वर्गसंघर्ष की धारणा पर बल दिया गया। विफल जर्मन क्रांति के बाद लंदन में दरिद्रतापूर्वक जीवन निर्वाह। व्यापक लेखन के साथ साथ प्रथम इंटरनेशनल की स्थापना में सहायक रहा तथा उसने अनेक समाजवादियों को सैद्धांतिक और संगठनात्मक मामलों के बारे में सलाह दी।

अलेक्जांद्र मिलेरां (फ्रांसीसी 1859 1943) पिछली शताब्दी के अंतिम दशक में संसदीय समाजवादियों का नेता। उसने 1896 में अपने सेंट मंदे भाषण में सुधारवाद की तरफदारी की। 1899 से 1902 तक नियमित रूप से गठित बुर्जुआ मंत्रिमंडल में शामिल होने वाला पहला समाजवादी मंत्री तथा ठोस श्रम संबंधी सुधारों के लिए उत्तरदायी। दल ने उसकी भर्त्सना की तथा दल से निकाल दिया जिसके बाद वह उत्कट राष्ट्रवादी बन गया।

गाई मोले (फ्रांसीसी जन्म 1905) विशर युद्धरोधी प्रतिरोध योद्धा। 1956 में गणतंत्रवादी मोर्चा मंत्रिमंडल के प्रधानमंत्री की हैसियत से उसने अल्जीरिया पर फ्रांसीसी साम्राज्यवाद का समर्थन किया। 1916 में एस० एफ० आई० ओ०

का महासचिव रहा तथा विविध मन्त्रिमंडलों का सदस्य भी। प्रारंभ में उसने 1958 में द'गाल का समर्थन किया।

पियेत्रो नेन्नी (इतालवी जन्म 1891) पी० एस० आई० का नेता। 1945-46 में सरकार का सदस्य। 1957 तक साम्यवादियों के साथ सहयोग की नीति का समर्थक रहा।

फर्नांड पलूतियर (फ्रांसीसी 1867 1901) क्रांतिकारी सिंडिकलिस्ट। फेडरेशन आफ लेबर एक्सचेंजेज का सचिव।

जार्जी वी० प्लेखानोव (रूसी 1857-1918) रूसी मार्क्सवाद' का पिता माना जाता है। जनसम्मोहवादियों से अलग हो गया और उनके आतंक की व्यक्तिगत कार्यवाहियों की निंदा की। 1900 में लेनिन के साथ इस्क्रा का प्रकाशन शुरू किया। मेनशेविक नेता बन गया। 1914 में युद्ध प्रयास का समर्थन किया। नवंबर क्रांति का विरोध किया।

पियरे जोसेफ प्रूधां (फ्रांसीसी 1809 1865) समाजवादी और अराजकतावादी सिद्धांतकार। 'ह्वाट इज प्रापर्टी' नामक प्रकाशन के लिए विख्यात जिसमें उसने संपत्ति नहीं बल्कि उसके दुरुपयोग की निंदा की। मार्क्स के साथ झगड़ा के कारण भी प्रसिद्ध। उसने शांतिपूर्ण तथा प्रधानतः अराजनीतिक साधनों द्वारा स्थापित स्वतंत्रतावादी और अराज्यवादी समाजवाद का प्रतिपादक।

कार्ल रेनर (आस्ट्रियावासी 1870-1950) राष्ट्रीयता संबंधी प्रश्नों पर लेखन। आस्ट्रियाई गणराज्य का प्रथम राष्ट्रपति (1918 1920)। 1934 में समाजवादी नेता के नाते बंदी बनाया गया। 1945 के बाद द्वितीय गणराज्य का प्रधानमंत्री और बाद में राष्ट्रपति बना।

जसेप सरगत (इतालवी जन्म 1898) पी० एस० आई० के सदस्य की हैसियत से 1944 के बाद अनेक सरकारी पदों पर काम। नेन्नी से संबंध विच्छेद तथा पृथक इटालियन डिमाक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी (पी० एस० डी० आई०) का गठन जिसने क्रिश्चियन डिमाक्रेटस के साथ सहयोग किया। 1964 से 1971 तक गणराज्य का राष्ट्रपति।

फिलिप शीडेमान (जर्मन 1865 1939) एस० पी० डी० नेता। 1918 की अस्थाई सरकार में मंत्री। 1919 में गणराज्य का प्रथम प्रधानमंत्री।

कुर्त शूमाकर (जर्मन 1895-1952) 1930 से 1933 तक रीशस्टाग में एस० पी० डी० प्रतिनिधिमंडल का नेता। लगभग दस वर्ष नजरबंदी शिविर में बिताए 1946 के बाद दल का सभापति। वर्गसंघर्ष की धारणा तथा संयुक्त जर्मनी दोनों का समर्थन।

जार्ज बर्नार्ड शा (आयरलैंडवासी 1856 1940) नाटककार, निबंधकार और सामाजिक समालोचक। फेबियन सोसाइटी की कार्यकारिणी का सदस्य। फेबियन

एत्सेज' (1889) का सपादक।

जोसेफ स्तालिन (रूसी 1879-1953) जन्म का नाम स्तालिन नहीं जुगाश्विली। रूसी क्रातिकारी। बोल्शेविकों द्वारा सत्ता ग्रहण करने पर जातीय समूहों का कमिसार (मत्री)। दल की केद्रीय समिति के महासचिव के नाते प्रभावशाली बना और लेनिन की मत्यु के बाद उसने दल पर नियत्रण प्राप्त कर लिया।

लियोन ट्राटस्की (रूसी 1879 1940) जन्म का नाम लेव ब्राम्टीन। रूसी क्रातिकारी और सिद्धातकार। लेनिन के साथ बोल्शेविक क्राति तथा उसके सिद्धात 'स्थाई क्राति' का क्रिया वयन। गहयुद्धो के दौरान युद्ध मत्री। स्तालिन द्वारा सत्ता से निष्कासित। 1940 म हत्या।

एडुअड वाया (फ्रासीसी 1840 1915) प्रथम इटरनेशनल तथा परिस कम्यून का सदस्य। 1884 म परिस नगरपालिका का सदस्य। 1893 से मत्यु तक परिस से ससत्सदस्य चुना जाता रहा। फ्रासीसी समाजवाद व ब्लाकवादी गुट का नेता।

इमाइल वेंडरवेल्ड (बेल्जियमवासी 1866 1938) समाजवादी नेता और राजनेता। अनेक सरकारो म मत्री तथा द्वितीय इटरनेशनल म प्रमुख नेता रहा।

जाज वान वौलमर (जमन 1850 1922) पिछली शताब्दी के अतिम दशक म रीशस्टाग के भीतर बवरियाई प्रतिनिधियो का नेता। एस० पी० डी० द्वारा सत्ता प्राप्ति के लिए सुधारवादी राष्ट्रवादी नीति के प्रयोग का हिमायती।

सिडनी वब (अग्रेज 1858 1943) अथशास्त्री समाज सुधारक और फेबियन सोसायटी का सहसस्थापक। अपनी पत्नी बाट्रिस वैब के साथ 1859 1947 तक सामाजिक और श्रमसबधी विषयो पर विस्तत लेखन। 1922 मे ससत्सदस्य और 1929 म वैदेशिक विभाग का मत्री।

हैराल्ड विलसन (अग्रेज जन्म 1916) 1963 म गैट्स्केल के स्थान पर श्रम दल का अध्यक्ष बना। 1964 1970 तक प्रधानमत्री। उस पर यह आरोप लगाया गया कि वह कोई महत्वपूर्ण सामाजिक परिवतन नहीं ला पाया।

सदर्भ

विरासत

1 आस्कर ज० हैमेन दि स्पक्टर आफ कम्यूनिज्म इन 1840ज जरनल आफ दि हिस्टरी आफ आइडियाज XIV (3) (जून 1953) 404 420 उन्नीसवी शताब्दी के प्रारंभिक काल मे सोशलिज्म (समाजवाद) शब्द का उपयोग सिद्धात के लिए ही होता था तथा कम्यूनिज्म शब्द का उपयोग उसको लागू करने की चेष्टा करने वाले क्रातिकारियो के लिए

2 कार्ल मार्क्स रेवोल्यूशन ऐंड काउटर रेवोल्यूशन (लदन अलन ऐंड अनविन 1891) पष्ठ 4 5

3 मार्क्स एड्रस एण्ड प्राविजनल रूल्स आफ दि इटरनेशनल वर्किंग मस एसोसिएशन (लदन लेबर ऐंड सोशलिस्ट इटरनेशनल 1924) जाज लिक्टहाइम मार्क्सिज्म एन हिस्टारिकल ऐंड क्रिटिकल स्टडी (न्यूयाक प्रेगर 1965) पष्ठ 103 105

4 मार्क्स कपिटल (1) (लन्दन सोनेंसक्राइन एड क० 1908) पष्ठ XIX

5 बारिस आई० निकोलेव्स्की सीक्रट सोसायटीज ऐंड दि फर्स्ट इटरनेशनल मिलोराड एम० ड्राचकोविच द्वारा सपादित दि रेवोल्यूशनरी इटरनेशनल्स 1864 1943 म (स्टानफाड स्टानफोड यूनि० प्रस 1966)

6 हनरी कालिन्स तथा सी० अब्रामस्की काल मार्क्स ऐंड दि ब्रिटिश लेबर मूवमट इयस आफ दि फस्ट इटरनेशनल (लन्दन मकमिलन न्यूयाक सेंट मार्टिन प्रस 1965) पृष्ठ 288

7 पत्र दिनाक 11 सितबर 1867 काल मार्क्स ऐंड फ्रीडरिक एंगल्स सेलेक्टेड कारेसपाडेंस 1846-1895 (न्यूयाक इटरनेशनल पब्लिशस 1942) पृ० 227

8 डोनाल्ड सी० होजेज बाकुनिन्स कट्रोवर्सी विद मार्क्स , अमेरिकन जरनल आफ इकानामिक्स ऐंड सासियालाजी 19 (अप्रल 1969 पृ० 259 274)

9 मक्स नामड दि अनार्किस्ट ट्रडीशन ड्राचकोविच रवोल्यूशनरी इटरनेशनल्स म, पृ० 65

10 लिक्टहाइम पूर्व उल्लिखित प० 105 इस चर्चा का शष भाग अधिकाशत लिक्टहाइम के विवरण पर आधारित है

मक्मिलन न्यूयाक सेंट मार्टिस प्रेस, 1960)
वाल्टर गलसन द्वारा सपादित कपेरेटिव लेबर मूवमटस (न्यूयाक रसेल ऐंड रसल 1952)
रायडन हरीसन बिफोर दि सोशलिस्टस स्टडीज इन लेबर ऐंड पालिटिक्स, 1861-1881 (लन्न रटलज ऐंड केगन पाल टोराटो यूनि० आफ टोरोंटो प्रेस 1965)
एरिक हासबाम लेबरिंग मन स्टडीज इन दि हिस्टरी आफ लेबर (गाडन सिटी, न्यूयाक डबलड 1967)
सी० पी० किडलबगर इकानामिक ग्राथ इन फ्राम एड ब्रिटन 1851 1950 (न्यूयाक साइमन ऐंड शुस्टर 1969)
एनो क्रीगल ला पेन एट लास रोजज जलम पा अर अने हिस्तायर डा सोसियालिस्मे (पेरिस प्रसेस युनिवर्सितेयस दा फ्रास 1968)
डविड एम० लडज दि अनबाउड प्रोमथियस (लदन ऐंड न्यूयाक कब्रिज यूनि० प्रस 1969)
फ्राडरिक सी० लन द्वारा सपादित एटरप्राइज ऐंड सेकुलर चेंज रीडिंग्स इन इकानामिक हिस्टरी (होमवुड, इलिनाय आर० डी० इर्विन 1953) विशषत माक ब्लाक का निबध टवड्स ए कपेरेटिव हिस्टरी आफ यूरोपियन सासायटीज दखें
जरनल आफ इकानामिक हिस्टरी XVII (1957) मे वाल लोरविन का निबध रिफार्मिज्म आन दि हिस्टरी आफ दि फ्रच ऐंड अमरिकन लबर मूवमटस
अमेरिकन हिस्टारिकल रिव्यू 63 (1958) म वाल लारविन का निबध वकिंग क्लास पालिटिक्स ऐंड इकानामिक डेवलपमेट इन यूरोप
हार्वे मिचेल ऐंड पीटर स्टन्स वकम एड प्राग्रेस दि यूरोपियन लेबर मूवमट दि वकिंग क्लासेज ऐंड दि आरिजिंस आफ सोशल डिमाक्रसी 1870-1914 (इटास्का, इलि० पीकाक पब्लिशस 1971)
जरनल आफ इकानामिक हिस्टरी XIX (1959) म ए० ई० मूसन का निबध दि ग्रेट डिप्रशन इन ब्रिटन 1873 1896 ए रीएप्रेजल
अडोल्फ स्टमथल यूनिटी ऐंड डायवर्सिटी इन यूरोपियन लेबर (ग्लेंको इलि० फ्री प्रेस, 1953)
सिडनी ऐंड बीट्रिस वेब दि हिस्टरी आफ ट्रेड यूनियनिज्म (लदन ऐंड न्यूयाक लांग मेंस ग्रीन 1920)

सामाजिक लोकतन्त्र का अभ्युदय

1 यह चित्रण एरिक हाब्सबाम ने लेबरिंग मन (लन्दन वाइडनफेल्ड ऐंड निकल्सन

1964) में पृ० 233 पर चुसिमबीरसुजुकी द्वारा एच० एम० हिन्डमा एंड ब्रिटिश सोशलिज्म (लंदन आक्सफोर्ड यूनि० प्रेस 1961) में दी गई जानकारी के आधार पर किया है

2 प्रचारक के रूप में हिंडमा का वर्णन देखिए थेल्मा एच० मक्कामिक दि मोटिवेशन ऐंड रोल आफ ए प्रोपगंडिस्ट सोशल फोर्सेज xxx (मई 1962) में पृ० 388 394 पर सोज के नाम एंगिल्स पत्र हेनरी पलिंग ने ओरिजिंस आफ दि लेबर पार्टी (आक्सफोर्ड क्लेरेंडन प्रेस 1965) में पृ० 216 पर उद्धृत किया है एंगिल्स ने फ्रांसीसी उग्रवादियों के साथ सहयोग से इकार करने पर जूलस गेड की भी आलोचना की थी

3 एडवर्ड आर पीज के ग्रंथ हिस्टरी आफ दि फेबियन सोसायटी, (लन्दन एफ० कास 1963) में द्वितीय परिशिष्ट के रूप में ज्यों का त्यों दिया गया है

4 फेबियन एसेज इन सोशलिज्म (लन्दन टनस्टाइल 1962) पृ० 247 248

5 एरिक हाब्सबाम लबरिंग मन में देखें दि फेबियन्स रिकन्सीडर्ड पृ० 250 271 इस तथा अगले पैराग्राफ के लिए मैं उसके विवरण पर निर्भर रहा हूं

6 हेनरी पलिंग ए शार्ट हिस्टरी आफ दि लेबर पार्टी (लन्दन मैकमिलन न्यूयार्क सेंट मार्टिन्स प्रेस 1965) पृ० 224 तथा उसकी पुस्तक ओरिजिंस आफ दि लेबर पार्टी पृ० 165

7 राल्फ मिलिबैन्ड—पार्लियामेंटरी सोशलिज्म (लंदन अलेन ऐंड अनविन 1961) पृ० 15

8 पू० उ० पृ० 32

9 आर० मा० के० एन्सर द्वारा सपादित माडर्न सोशलिज्म (न्यूयार्क हार्पर ऐंड रो 1908) पृ० 220-228

10 पू० उ०

11 कार्ल शोर्स्क जर्मन सोशल डिमाक्रेसी 1905 1917 (न्यूयार्क विले 1965) पृ० 12 16

12 एडवर्ड बर्नस्टीन इवोल्यूशनरी सोशलिज्म ए क्रिटिसिज्म ऐंड अफर्मेशन (न्यूयार्क स्कोकेन 1961) पृ० 155 200 224

13 मिलोराड एम० ड्राचकोविच दि वार सोशलिज्म एंड मिलिटरिज्म (जिनीवा ड्राज 1954) पृ० 149 150 में उद्धृत

14 प्रथम दृष्टिकोण जार्ज लिक्थाइम ने मार्क्सिज्म (पू० उ०) में पृ० 286-289 पर अभिव्यक्त किया है तथा दूसरा बनाम पिटरसन ने अमेरिकन पोलिटिकल साइंस रिव्यू xii (जून 1959) में पृ० 634 पर प्रकाशित निबंध दो अमेरिकन स्टडीज आफ जर्मन सोशलिज्म में पाया है दि हिस्ट्री आफ डिमाक्रेटिक सोशलिज्म (न्यूयार्क कार्नेगी प्रेस 1952) पृ० 141 148 226 भी देखें

15 पीटर नट्ल पास्ट ऐंड प्रजेंट xxx (अप्रल 1965) म प० 68 69 पर प्रकाशित नि जमन सोशल डिमाक्रटिक पार्टी ऐज ए पालिटिकल माडल

16 लाप्रोलितायर नवबर 19 1881 एल० डफलर इटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्टरी xii (1967) खड 1 प० 66 80 पर प्रकाशित रीफार्मिज्म एड जूलस गड 1891 1900 म उद्धत मैंने इस खड म अपने इस निबध न कुछ अश ज्यो के त्यो दिए हैं

17 हरोन्ड आर० वास्टान जा जौरेस ए स्टडी आफ पट्रियाटिज्म इन नि फ्रेंच सोशलिस्ट मूवमेंट (न्यूयाक कोलबिया यूनिप्रस 1936) प० 28

18 1896 म फ्रास के 5 75 000 औद्योगिक सस्थाना मे से 5 34 000 मे दस से भी कम श्रमिक काम करते थ ज० एच० क्लफाम दि इकानामिक डवलपमट आफ फ्रास ऐंड जमनी 1815 1914 (कम्ब्रिज यूनि० प्रस 1963) प० 258 259

19 जाज लफ्राक ल मूवमट माशियालिस्ते सोस ला थड रिपब्लिक (पेरिस 1963) प० 65

20 राबट मिचेल्स अमरिकन पोलिटिकल साइस रिव्यू (नवबर 1927) म प० 754 पर प्रकाशित सम रिफलक्शस आन नि सोशियोलाजिकल करेक्टर आफ पोलिटिकल पार्टीज

21 मारिस दवेरगर पोलिटिकल पार्टीज (न्यूयाक विल 1959) प० 179 बाद के उद्धरणा क लिए देखें डफलर पू० उ०

22 जान अलेक्सिस्को—ल मूवमट सोशियालिस्ते एन रूसी दु 19 सिएक्ल रेवेन्यू हिस्तोरीक 222 (1959) मे प० 88 112 पर

23 समुअल एच० बरन—अमेरिकन स्लाविक ऐंड ईस्ट यूरोपियन रिव्यू xiv (1955) म प० 316 319 और 326 27 पर दि फस्ट डिकेड आफ रशियन माक्सिज्म

24 आस्कर ज हैमेन माल्म ऐंड नि अग्ररियन क्वेश्चन अमरिकन हिस्टारिकल रिव्यू (xxvii 1972) मे प० 707 पर

25 फ्रीडरिक एगिल्स डाई निय जीट खड xx 1 (1901 1902)। जूलियस ब्राथाल दि इटरनेशनल 1, 1864 1914 (लदन नेलसन, 1966) मे प० 266 267 पर उद्धत

26 पट्रीशिया वान डेर एस्क ला ट्यूक्सेम इन्टरनेशनल 1889 1923 (पेरिस बिब लियाथीक द एल हिस्तायर एकानामीक एत सोसियाले 1951) प० 76

27 ब्रौथल पू उ० प० 196

28 जा जौरेस कास्मोपोलिस (जनवरी 1898) म प० 125 पर ले सोसियालिस्म फ्रकाय

1936)
मारिस डाम्मये एडुअड वेलट अन गड सोशियालिस्त, 1840-1914 (परिस ला टेबल रौंडे, 1956)
हार्वे गोल्डबग दि लाइफ आफ जा जौरेस (मेडीसन यूनि० आफ विस्कासिन प्रस 1962)
काल लडूर इटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्टरी VI (1961) म दि गडिस्टस ऐंड दि स्माल फामर अर्ली इरोजन आफ फ्रेंच मार्क्सि म
काल लडूर इटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्टरी XII (1967) म दि ओरिजिंस आफ रीफार्मिस्ट सोशलि म इन फ्रास
6 आरो नोलाद दि फाउडिंग आफ दि फ्रच सोशलिस्ट पार्टी (कब्रिज हावड यूनि० प्रस 1956)
7 डविड स्टफड फ्रास अनार्किज्म टू रीफार्मिज्म ए स्टडी आफ दि पोलिटिकल एक्टिविटीज आफ पाल ब्राउस (टोरोन्टो यूनि० आफ टोरान्टो प्रेस 1971)
8 जव विडाल ले मूवमेंट ओवरायर फ्रकायदे ला कम्यून ए ला ग्वर मादियाले (पेरिस ब्यूरो दि एडीशस 1934)
9 क्लाड विलार्ड मेस गुएस्टिस्तेज ले मुवमट सोशियालिस्ते एन फास (1893 1905) (पेरिस एडीशस सासियानेज 1965)

रूस मे समाजवाद

1 समुअल एच० बरन प्लेखानोव दि फादर आफ रशियन मार्क्सि म (लदन रटलेज ऐंड कगन पाल 1963 स्टानफोड स्टामफोर्ड यूनि० प्रेस 1966)
2 लियोपोल्ड एच० हैमसन दि रशियन मार्क्सिस्टस ऐंड दि ओरिजिन आफ बोलशवि म (कब्रिज मसा० हावर्ड यूनि० प्रेस 1955)
3 जान काप दि राइज आफ सोशल डिमाक्रसी इन रशिया (आक्सफोड क्लेरेंडन प्रस 1963)
4 रिचाड किंडसल दि फस्ट रशियन रिवीजनिस्टस ए स्टडी आफ लीगल मार्क्सिज्म इन रशिया (आक्सफोड क्लेरेंडन प्रेस 1962)
5 एवजनी लपट सम अगेंस्ट फादस स्टडीज इन रशियन रडिकेलि म ऐंड रीवोल्यूशन (आक्सफोड क्लेरेंडन प्रेस 1965)
6 थियोडोर एच० वान लाऊ हवाई लनिन ?,हवाई स्तालिन ? ए रीएप्रजल आफ रशियन रेवो यूशन 1903 1930 (फिलाडेल्फिया लिप्पिनकाट 1966)

दि सेकड इटरनेशनल

1 जी० हाप्ट ला द्यूज्येम इटरनेशनल एतूडे क्रिटीक डस सार्मेज एस्साई बिबलियाथक (पेरिस और हेग मूटन, 1964)

क लिए सरकार में भाग लेने का माम्यवाग्यिा न एक उपयोगी रीति-नीति के तौर पर मान्यता दी

9 शोस्क पृ० उ० पृ० 44

10 यूजान फानियर ला त्रिम मासियानिस्त (परिस ई० फाखवल 1908) प० 73 जम्म जौल दि सेकड इटरनेशनल (न्यूयाक हापर ऐंड रो 1966) प० 104 105

11 राल्फ मिलिबन पार्लियामटरी सोशलिज्म (लन्न अलेन ऐंड अनविन 1961) प० 29

12 रमज मक्डानल्ड साशलिज्म ऐंड सोमायटी (लदन इडिपेंडेंट लेबर पार्टी 1905) दख अध्याय 6

13 आलिवर एच० रडक जनल आफ माडन हिस्ट्री XXV (माच 1953) प० 25 39 पर निबध एन आल्टरनेटिव टु बाल्शविज्म

14 पाटर एन० स्टन्स रेवाल्यूशनरी सिंडिकलिज्म ऐंड फ्रच लेबर ए काज विदआउट रिबल्स (न्यू ब्रसविक रटगस यनि प्रस 1971) प 17 18

15 वहा प० 102 103 इस बात का काई स्पष्टीकरण नही मिलता कि श्रमनेता अपने दल के सन्स्या स इतने सपक विहान क्स थ

16 एम० बी० सौल दि मिथ आफ दि ग्रट डिप्रशन (लन्न मकमिलन न्यूयाक सेंट मार्टिन्स प्रस 1969) पृ० 53

पठनीय

मार्ग्रेट कोन दि लाइफ आफ जी० डी० एच० कोन (न्यूयाक सेंट मार्टिन्स प्रस 1971)

जाज डगरफाल्ड दि स्ट्रेंज डथ आफ लिबरल इग्लड 1910 1914 (न्यूयाक जी० पी० पुन्नामस सस 1961)

इजराइल गतजनर मार्तोव ए पोलिटिकल बायोग्राफी आफ ए रशियन सोशल डिमा क्रट (कम्ब्रिज यूनि० प्रेस 1967)

एस० टी० ग्लास दि रस्पासिबल सासायटी दि आइडियल्स आफ दि इग्लिश गिल्ड सोशलिस्टस (लदन लागमस ग्रीन 1966)

जा मत्रा हिस्तायर दु मूवमट अनार्किस्ट एन फ्रास 1880-1914 (पेरिस सोसायटा यूनि द एडीशस एट दु लाइब्ररी 1955)

मिचेल परट और एनी क्रीगल ला सोसियालिस्म फ्रकाय एट ल पोवायर (पेरिस एल्यूदस एट डाकुमटशन इटरनेशनल्स 1966)

एफ० एफ० रिडले रेवोल्यूशनरी सिंडिकलिज्म इन फ्रास दि डायरेक्ट एक्शन आफ इट्स टाइम (कम्ब्रिज यूनि० प्रस 1970)

जार्जेस सोरेल रिफ्लेक्शस आन वायलेंस (ग्लको इलि० फ्री प्रेस 1950)

बट्रम वल्फ थ्री हू मड ए रेवोल्यूशन ए बायोग्रफिकल हिस्टरी (न्यूयाक डायल प्रस, 1964)

16 अलक्जाद्र जवेस हिस्तायर द सोसियालिस्मे एत द कम्युनिस्म एन फ्रास दे 1871 1947 (पेरिस एडीशस फ्रास एपायर 1947) प० 331 332
17 यूजीन वेबर दि नशनलिस्ट रिवाइवल इन फ्रास 1905 1914 (बक्ले यूनि० आफ कलीफोर्निया प्रस 1959) प० 9
18 गिवनयर आमसट्राग दि इन्टरनेशनल थाफ दि अर्ली साशन डिमाक्रेग अमरिकन हिस्टारिकल रिव्यू 47 (1942), पृ० 249 254 जी० राय दि साशल डिमाक्रटस इन इपारियल जमना (टाटावा यूजर्मी बडमिस्टर प्रर 1963), प० 96 100 ए० जोसेफ बर्गो दि जमन सोशल डिमाक्रटिर पार्टी 1914 1921 (यूयाक कालबिया यूनि० प्रेस 1949) प० 47
19 अब्राहम एस्कर इपारियलिज्म विभिन्न जमन साशल डिमाक्रेसी प्रायर टु 1914 जनरल आफ सेंट्रल यूरोपियन अफयस XX सख्या 4 (जनवरी 1961) 397 मरे अगल तीन पराग्राफ इस निबंध पर आधारित है
20 कार्ल शोस्क जमन सोशल डिमाक्रसी 1907 1917 (कब्रिज मसे हावड यनि० प्रस 1955) प० 69 75 चाल्स एडलर ला दे कपोजीशन पानितीक दु सोशियालिस्म अलमाड 1914 1919 (पेरिस एडाशस बोसाड 1919) प० 14
21 एस्कर पू० उ० प० 403 404 विलियम मेहल ट्रायफ आफ नेशनेलिज्म इन जमन साशलिस्ट पार्टी आन दी ईव आफ दि फस्ट वल्ड वार जनरल आफ माडन हिस्टरी XXIV (1952) प० 28 29
22 शौस्क पू० उ० प० 227 228
23 वोरवाट स जुलाई 2 1914 विलियम ई० वालिग दि सोशलिज्म आफ टड (न्यूयाक हाल्ट राइनहाट एड विस्टम 1916) 55 56 पर उद्धृत
24 फुलवो वन्निना दि इटलियन कम्यूनिस्ट पार्टी भाग I दि ट्रासफार्मेशन आफ ए पार्टी 1921 1945 प्राब्लम्स आफ कम्यूनिज्म 5 (जनवरी फरवरी 1956) 37 डोज पू० उ० प० 138
25 जौल पू० उ० प० 127
26 वही प० 131 133। जे० ब्रौथल हिस्टरी आफ दि इटरनेशनल प्रथम 1864 1914 (न्यूयार्क प्रेगर 1967) प० 301
27 जौल पू० उ०, प० 128 130
28 आर० सी० के० एसर माडन सोशलिज्म (यूयाक हापर एंड रो 1904) प० 25 26 कैयन पू० उ० प० 273
29 यह उद्धरण डनियल बल सोशलिज्म इटरनेशनल एसाइक्लोपेडिया आफ दि साशल साइसज (न्यूयाक मकमिलन 1968) खड 15 प० 511 से लिया गया है तथा आक्स फांज औप्पेनहीमर द्वारा सपादित शानिक डर मार्क्सिस्तिशन वेवेगग न्यत्सानम (बर्लिन डायटज 1956) प० 62 से लिए गए हैं

30 मारिस दुवरगर पोलिटिक्ल पार्टीज (न्यूयार्क विले 1959) पृ० 154 राबर्ट मिचेल्स पालिटिकल पार्टीज (ग्लेंको, इलि० फ्री प्रेस, 1958) भी देखें
31 पीटर नटल दि जर्मन सोशल डिमाक्रेटिक पार्टी एज ए पोलिटिकल मॉडल, पास्ट ऐंड प्रेजेंट xxx (अप्रल 1965), पृ 85 86

पठनीय

फ्रांज बोर्केनो सोशलिज्म नेशनल आर इंटरनेशनल, लंदन रूटलज, 1942
मिलोराड़ द्राखकोविच लेस सोसियालिस्तस अलेमंडस एत ला प्राब्लेम द ला गेरे 1870 1914 जिनेवा ड्रोज, 1953
जक्स द्राज डेर नेशनलिस्मस डेर लिंकन उड डेर नेशनलिस्मस डर रेख्तेन इन फ्रैंकरीश (1871 1914) हिस्तारिस्ख जीटसखिफ्ट 210 फरवरी, 1970
आर० ए० कान दि मल्टीनेशनल एपायर नेशनलिज्म एड नेशनल रीफार्म इन दि हैब्सबर्ग मानार्की 1848 1918 खंड 2 न्यूयार्क कोलंबिया यूनि० प्रेस, 1950
लनार जो वायल थियरीज आफ सोशल इपीरियलिज्म फारेन अफेयर्स xxviii (जनवरी 1950)
हंस वहलर सोजियलडिमाक्राटी उंड नेशनलस्टाट डि डायचे साजियलडिमाक्राटी उंड दि नेशनलिटातेन फ्राजेन इन यूरोपा वान कार्ल मार्क्स बिस जुम आसब्रुख डेस अर्स्तेन वल्टक्रीग्स । वुर्जबर्ग हाल्जनर 1962

समाजवाद और साम्यवाद

1 लेनिन थीसिस आन दि वार जो या ह्यू सीटन वाटसन और एच० एच० फिशर द्वारा सम्पादित दि बोल्शेविक्स एड दि वर्ल्ड वार (स्टानफोर्ड स्टानफोर्ड यूनि० प्रेस, 1960) में पृ० 141 पर उद्धृत एफ० बोर्केनो वर्ल्ड कम्युनिज्म ए हिस्ट्री आफ दि कम्युनिस्ट इटरनेशनल (एन आर्बर यूनि० आफ मिशिगन प्रेस 1962) पृ० 58
2 मर्ले फेनसोड इन्टरनेशनल सोशलिज्म ऐंड दि वर्ल्ड वार (कैंब्रिज हार्वर्ड यूनि० प्रेस 1935) पृ० 75
3 जैग ड्राज ले सोसियालिस्म डिमाक्रातीक, 1864 1960 (पेरिस ए० कॉलिन 1966) पृ० 154
4 रिग ऑफ बर्न मेमायर्स (लन्दन कॉन्स्टेबल 1928) खंड 2 पृ० 329 एवं शाइडमान दि मेकिंग आफ न्यू जर्मनी (न्यूयार्क एप्लटन 1929) खंड 2 पृ०240

5 फ्राज बोहन दि रेग्म आफ जमनी इटरनेशनल सोशलस्ट रिव्यू XVI, 2 (1915), पृ० 80
6 रिचड एन० हट जमन साशल डिमाक्रमी 1918 1933 (न्यू हैवेन येल यूनि प्रेस 1964) पृ० 254
7 एम० एम० ड्राचकोविच बी० लाजिव दि कम्यूनिस्ट इंटरनेशनल, एम० एम० ड्राचको विच द्वारा सपादित दि रैवोल्यूशनरी इटरनेशनल्स (स्टानफोड स्टानफोड यूनि० प्रस, 1966) म प० 163 पर
8 जाज लेफाक हिस्तायर द् सासियालिस्मे सौस ला स्रो इसियम रेपब्लीक 1875 1940 (पेरिस पयोट 1963) 161 266
9 राल्फ मिलिबड पालियामेटरी सोशलिज्म (लन्दन एलेन ऐंड अनविन 1961) प० 62
10 वही पृ० 81
11 जेन डेग्रास द्वारा सपादित दि कम्यूनिस्ट इटरनेशनल 1919 1943, डाकुमटम खड 2 1923 1928 (लदन आक्सफोड यूनि प्रस 1960) प० 30 31 उसका ही यूनाइटेड फ्रट टक्टिक्स इन दि कामिटर्न देखें सेंट एटनीज पेपस न० IX इटरनेशनल कम्यूनिज्म सपादक डविड फुटमन (कावनडल सदन इलिनाय यूनि० प्रम 1960) प० 10 13
12 जे० ब्रौंथल हिस्टरी आफ दि इटरनेशनल 1914-1943 खड 2 (न्यूयाक प्रगर 1957) प० 284
13 लेविस एल० लोविन दि इटरनेशनल लेबर मूवमट हिस्टरी पालिसीज आउटलुक (न्यूयाक हापर ऐंड रो 1953) प० 97 98 जान प्राइस दि इटरनेशनल लबर मूवमट (लदन और न्यूयाक आक्सफोड यूनि० 1945) प० 20 ब्रौंथल, पू० उ० प० 307
14 डग्रास दि कम्यूनिस्ट इटरनेशनल 2 प० 49 459 ब्रौंथल पू० उ० प० 340 जी० डी० एच० कोल ए हिस्टरी आफ सोशलिस्ट थाट 4 कम्यूनिज्म ऐंड सोशल डिमाक्रेसी 1914 1931 (लदन मकमिलन 1958) भाग 2 प० 687
15 ब्रौंथल पू० उ० पृ० 308
16 वही। ड्राचकोविच रेवाल्यूशनरी इटरनेशनल प० 201 पर उद्धृत रावट वी० डनियल दि इवाल्यूशन आफ दि कम्यूनिस्ट माइड उसकी डाकुमट्री हिस्टरी आफ कम्यूनिज्म की भूमिका (न्यूयाक रडम हाउस विंटेज 1962)
17 कोल पू० उ०, पृ० 847 850
18 डनियल्स पू० उ०,

पठनीय

एजेलिका बलाबनौफ माई लाइफ ए रिबल (वस्टपोट कान ग्रानवुड 1968)
ई० एच० कार दि बोल्शविक रेवोल्यूशन 1917 1923 (I) (लन्दन पेंगइन 1966)

डविड कौट कम्युनिज्म ऐंड दि फ्रेंच इंटलेक्चुअल्स 1914 1960 (न्यूयार्क मैकमिलन 1964)
विलियम एच० चेंबरलिन दि रशन रेवोल्यूशन, 1917 1921 2 खड (न्यूयार्क ग्रोसट ऐंड डनलप 1963)
जोएल कोल्टन लियोन ब्लम ह्यूमनिस्ट इन पालिटिक्स (न्यूयार्क नौफ 1966)
एम० आर० ग्रावड ब्रिटिश लेबर ऐंड रशन रेवाल्यूशन (कैम्ब्रिज, हावड यूनिवर्सिटी प्रेस) 1956
एनो क्रीगल औक्स ओरिजिम दु काम्युनिस्म फ्रांसाय 1914 1920 2 खड (पेरिस माउटन 1964)
वाल लोविन दि फ्रेंच लेबर मूवमट कैम्ब्रिज (मसा० हावड यूनि० प्रेस 1954)
एल० ज० मकफारलन दि ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी इट्स ओरिजिंस ऐंड डवेलपमट अटिल 1929) लन्दन मकगिबन ऐंड की, 1966)
विलियम मेट्ल दि रोल आफ दा इल जमन सोशलिस्ट पालिसी 1914 1918 इटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्टरी IV मे प० 19
एच० मेसल नि स्टाकहोम कान्फ्रेंस आफ 1917 इटरनेशनल रिव्यू आफ सोशल हिस्टरी V 1961
एलेन मिचेल रेवाल्यूशन इन बवेरिया 1918 1919 (प्रिंस्टन प्रिंस्टन यूनि० प्रेस, 1965)
हेरिक ज० मयीम दि लेबर मूवमेंट इन पोस्टवार फ्रांस (न्यूयार्क कोलबिया यूनि० प्रेस 1931)
एरिक वाल्डमान दि स्पार्टाकिस्ट अपराइजिंग आफ 1919 (मिल्वौकी मार्क्वेट यूनि० प्रेस 1958)
राबट वाल्स फ्रेंच कम्यूनिज्म इन दि मेकिंग 1914-1924 (स्टानफोर्ड स्टानफोर्ड यूनि० प्रेस 1966)

समाजवाद और फासीवाद

1 इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया आफ दि सोशल साइंसेज (न्यूयार्क मैकमिलन 1968) खड 15 प० 519
2 एडोल्फ स्टमथल दि ट्रेजडी आफ यूरोपियन लेबर (न्यूयार्क कोलंबिया यूनि० प्रेस 1943) प VII 5
3 [illegible] (लन्दन [illegible] ब ग और भारत 1967) पृ० 511

4 वही पृ० 520 521

5 डनिस मक स्मिथ इटली, ए माडन हिस्टरी (एन आबर यूनि० आफ मिशीगन प्रस 1959) पृ० 313 पियत्रो नेना स्तोरिया डि क्वात्रो एन्नी 1919 1922 (रोम जी० न्तोग 1946) पृ० 36 65 एम० डब्लू० हगारिन मुसोलिनी ऐंड इटालियन फासिज्म (प्रिंसटन वान नास्ट्राड 1964) प० 28

6 जक्स डोज़ ल सोशियालिज्म डिमाक्राटीक 1864 1960 (पेरिस ए० कोलिन 1966) पृ० 197

7 फ्रांज न्यूमान बहमोथ दि स्ट्रक्चर ऐंड प्रक्टिस आफ नश्नल सोशलिज्म 1933 1944 (न्यूयाक आक्सफड प्रस 1963) पृ० 17 18 260-261 284

8 चाल्स ए० गलिक आस्ट्रिया फ्राम हैप्सबग ट हिटलर 2 खड (न्यूयाक यूनि० आफ कलिफोनिया प्रस 1948) II पृ० 1371 1380 1389

9 स्टमथल पाछ उल्लिखित पृ० 183

10 वही पृ० 221

11 जेन डेग्रास (सपादित) दि कम्युनिस्ट इटरनशनल 1919 1943 डाकुमन्ट्स (लन्दन ऐंड न्यूयाक आक्सफोड यूनि० प्रस 1956) प० 111 313 दखें एन० ड्यलर यूनिटी ऐंड दि फ्रेंच लफट सम व्यूज आफ दि पापुलर फ्रट सायस ऐंड सोसायटी (वसत 1961) प० 34 47 पर कतिपय अर्वाचीन साहित्य का सर्वेक्षण दिया गया है इस निबंध क अवतरणों का यहा मुक्त रूप म प्रयोग किया गया है।

12 डग्रास पू० उ० प० 308 309

13 नुई बो ल ल फी० सा० एफ० दा ल फो० पापुलयर, एस्प्री (अक्तूबर 1966) प० 440

14 जाज ल फ्र पापुलयर ए ल इनविसया द 1936 (परिस ए० कोलिन 1959) प० 11 12

15 जान मारकुस फ्रेंच सोशलिज्म इन दि क्राइसिस इयस 1933 36 (न्यूयाक प्रगर 1958) पृ० 59 60 50 81

16 जोसेफ बी० बोड जूनियर दि गवनमट ऐंड पालिटिक्स आफ स्वीडन (न्यूयाक हाफ्टन मिफ्लिन 1970) प० 93

17 कार लडूर यूरोपियन सोशलिज्म ए हिस्टरी आफ आइडियाज ऐंड मूवमन्ट्स 2 खड (बकले यनि० आफ कलि० प्रस 1959) II पृ० 1535

18 स्टमथल पूव उल्लिखित पृ० 237 238

19 ए० ज० पी० टलर इग्लिश हिस्टरी 1914 1945 (आक्सफोड क्लेरेंडन प्रस 1965) पृ० 379 381 383

पठनीय

ज० एम० कमेट अतोनियो ग्राम्शी ऐंड ओरिजिंस आफ इटलियन कम्युनिज्म, (स्टान

फोड स्टानफोड यूनि० प्रस, 1967)
जूलियस ब्रौयल हिस्टरी आफ दि इटरनेशनल 1914 1943, (यूयाक प्रगर 1967)
जूलियस ब्रौयल दि ट्रेजडी आफ आस्ट्रिया, (लन्न गोलाज 1947)
डनियल ब्रोवर दि न्यू जेकोबियस दि फ्रच कम्यूनिस्ट पार्टी ऐंड दि पापुलर फ्रट (इथाका कार्नेल यूनि० प्रस 1968)
जोसफ बूंगिर इन दि टिवलाइट आफ सोशलिज्म ए हिस्टरी आफ दि रिवाल्यूशनरी सोशलिस्ट्स आफ आस्ट्रिया (यूयाक प्रगर, 1953)
जोएन कोल्टन लिओन ब्लम ह्यूमनिस्ट इन पालिटिक्स (यूयाक नौफ 1966)
ह्यूग डाल्टन दि फटफुल इयर्स ममायर्स 1931 1945 (लदन, 1957)
पीटर डोज बियाड माक्सिज्म दि फथ ऐंड वक्स आफ हेंड्रिक दे मान (दि हेग निजोफ 1966)
मिचल गोडन कानफ्लिक्ट ऐंड कासेंसस इन लेबस फारेन पालिसी, 1914 1965 (स्टानफोड स्टानफोड यूनि० प्रस 1969)
रिचड हट जमन सोशल डिमाक्रसी 1918 1933 (शिकागो क्वाड्रगिल 1970)
जनल आफ कटेंप्ररी हिस्टरी खड I इटरनेशनल फासिज्म 1920 1945
ज० ए० लौवेरीज स्कैंडिनेवियन डिमाक्रसी (कोपेनहेग डनिश इस्टीट्यूट 1958)
जाज लिश्टहाइम माक्सिज्म इन माडन फ्रास (यूयाक कोलबिया यूनि० प्रस, 1966)
रिचड डब्लू० लाइमान दि ब्रिटिश लेबर पार्टी कानफ्लिक्ट बिट्विन सोशलिस्ट आइडियल्स ऐंड प्रक्टिकल पालिटिक्स बिटविन दि वास दि जनरल आफ ब्रिटिश स्टडीज V (1965)
एरिक मथियास एड रडाल्फ मार्से (सपादक) डास एडे डर पार्टियानेन 1933 (डसेलडाफ ड्रोस्ट वेरलाग, 1960)
राल्फ मिलिबंड पालियामेंटरी सोशलिज्म (लन्न अलन ऐंड अनविन 1961)
सा० एल० मोवाट ब्रिटन बिटविन दि वास, 1918 1940 (बोस्टन बकन प्रस, 1971)
हेनरी पलिंग दि ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी ए हिस्टारिकल प्रोफाइल (लन्न ए० एड सा० ब्लक 1958)
हेनरी पलिंग ए शाट हिस्टरी आफ दि लेबर पार्टी (लन्न मकमिलन 1965)
ह्यूग थामस दि स्पेनिश सिविल वार (यूयाक हापर ऐंड रो लन्न आयरे एड स्पाटिसवुड 1961)
अलेक्जांडर वय दि सिविल वार इन फ्रास 1933 1940 (यूयाक हापर ऐंड रा 1942 पुनमुद्रण यूयाक एच० फर्टिग 1966)

बी० डी० ग्राह्म दि फ्रच सोशलिस्टस ऐंड ट्रिपार्टिम 1944 1947 (लदन वाइडन फील्ड ऐंड निकलसन 1965)

मान्केल हैमिटन सोशलिज्म (न्यूयाक सटरडे रिव्यू प्रस 1972)

मार्टिन हैरीसन ट्रेड यूनियस ऐंड लेबर पार्टी सिंस 1945 (डट्राय वायेन स्टट यूनि० प्रस 1960)

राबट एल० हेलब्रोनर सोशलिज्म ऐंड दि फ्यूचर कमटरी XL VIII (दिसबर 1969) जोसेफ ला पालोमबारा, दि इटालियन लेबर मूवमेट प्रालेम्स ऐंड प्रास्पक्ट्स (इथका कार्नेल यूनि० प्रस, 1957)

रिचड लोवेंथल दि प्रिंसिपल्स आफ वस्टन सोशलिज्म टवेंटियथ सचुरी CL (अगस्त 1951)

आयर पी० मडल दि राइज ऐंड फाल आफ साइटिफिक सोशलिज्म फारन अफयस XLV (1966)

जान वेजी सोशल डिमाक्रमी (लदन वाइडेनफील्ड एड निक्लसन 1971)

कथरीन एम० वान ईरडे साशलिज्म इन वस्टन यूरोप एट मिड सचुरी सोशल रिसच, XXVI (winter 1959)

फ्रक एल० विलसन दि फ्रच डिमाक्रटिक लफ्ट 1963 1968 टुवड ए माडन पार्टी सिस्टम (स्टानफाड स्टानफोड यूनि० प्रेस 1971)

हेराल्ड विलसन दि लेबर गवनमेट 1964 1690 ए पसनल रेकाड (न्यूयाक वास्टन लिटिल ब्राउन 1971)

अनुक्रमणी

* *

लेस्ली डफलर
फ्लोरिडा अटलांटिक यूनिवर्सिटी मे
इतिहास विभाग म प्रोफेसर।